सो बूझे जिस आप बुझाए

भाग - ह

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

हउ : बेमुख जीव आत्म भरया इक्क घमंड, हउँ हउँ करे जन्म गवाईआ। (१३ फग्गण २०११ बि)
अन्तम लज पत प्रभ मेरी रक्खी, हउँ दासन दास तुहारी। (३ अस्सू २०१३ बि)
हउँ सेवक तूं शाह सुल्तान, शाहो भूप अखवाईआ। (२० चेत २०१५ बि) (मैं)

हउमे : कट्टणहारा हउम रोग, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। (१६ हाढ़ २०१६ बि)
हउम हंगता गढ़ हँकार, मनमत करी कुड़माईआ। आसा तृष्ना करे ख़वार, जगत तृष्ना ना कोई बुझाईआ। (१३ सावण २०१६ बि)
माया ममता पिआ पुआड़ा, हउम हंगता रही सताईआ।
(२६ विसाख २०१८ बि) (मै मेरी, अभिमान)

हरिसंगत : गुरसिखां हरिसंगत रूप बणके प्रेम प्यार आपणा पाया घेरा, चारों कुण्ट आसण लाईआ। (१७ सावण २०२१ बि)
सच अखाड़ा इक्क लगाए, गुरसिख गुरमुख हरिभगत हरिजन हरिसंगत मेल मिलाइंदा। (१७ सावण २०१३ बि)
जो हरिसंगत विच्च मिल के होया गंदा, तिस दी गंदगी अग्गे पिच्छेसके ना कोई धवाईआ। (५ भादरों २०२१ बि)

हरिजन : हरिजन हरि का रूप। हरिजन सति सरूप। हरिजन हरि एका रूप। हरिजन जन हरि एका सूत। (१ माघ २००८ बि)
हरिजन हरि का मीत। हरिजन हरि एका रीत। हरिजन हरि साची चरन कँवल प्रीत। हरिजन हरिचरन लाग जाए जन्म जीत । हरिजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, काया करे सीत। (१ माघ २००८ बि)

हरिबाणी : मो को आखे ईश्वर देव सभ भाई। मेरा नाम बाणी जगत अखवाई । बाणी विनासे सतिगुर ना विनासे। बाणी अलोप सतिगुर प्रकाशे। सतिगुर देवे भगतन को वड्डिआई। दरस पाए भगत जस गाई। मेरा नाम लैण जो भगतन। उस को बाणी जगत में कहितन। बाणी आप गुरू उपजावे। महिमा आपणी आप लिखावे। समें अनुसार करे अन्तकाल। थिर रहे एह आप दीन दयाल। (७ भादरों २००६ बि)

बाणी प्रभ दी प्रभ दित्ती उच्चार। साध संगत नूं दित्ता तार। (८ फग्गण २००६ बि)

ईशर वाक जगत भए बाणी। (२४ चेत २००८ बि)

हरि अमृत हरि बाणी आ, हरि रूप करतार। हरि शब्द हरि बाणी आ, हरि बोले अपर अपार। हरि कथा अकथ्थ कहाणी आ, कथनी कथ ना सके विच्च संसार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल अपर अपार। (१८ हाढ़ २०१५ बि)

हरि बाणी गुर मंत्र, गुर सतिगुर आप जणाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। जगत बुझाए लग्गी बसन्तर, जो जन रसना गाईआ। लेख जगाए गगन गगनंतर, काया गगन मण्डल सुहाईआ। सच सति बणाए साची बणतर, सति असति दए मिटाईआ । आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नाम नाम डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ।

हरि फ़रमाण धुर धुर दी बाणी, गुर सतिगुर मुख सलाहीआ। दो जहानां साची राणी, साचे कन्त वडयाईआ। शब्द मिलावा साचे हाणी, सगला संग रखाईआ। अमृत देवे ठंडा पाणी, भर प्याला संग लिआईआ। गुरमुखां चुकाए जगत काणी, आवण जावण लेख मिटाईआ। रसना गायण पायण पद निरबाणी, निर्भय रूप दरसाईआ। धुरदरगाही सच निशानी, लोकमात करे रुशनाईआ। आपे जाणे जाण जाणी, दूसर हत्थ ना कोई वखाईआ। पावे सार चारे खाणी, उत्भुज सेहतज जेरज अंड तोल तुलाईआ। करे कराए पुण छाणी, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका मंत्र नाम वडयाईआ। हरि बाणी नेत्र मंत्र फोर, गुर सतिगुर खेल खलाईआ। नाता तोड़े पंचम चोर, झूठी धाड़ दए मिटाईआ। आसा तृष्ना हराम ख़ोर, गुरसिख नेड़ ना आईआ। लेखा जाणे अन्ध घोर, डूंघी भवरी खोज खुजाईआ। सुरत सवाणी रिहा होड़, नाम खण्डा हत्थ उठाईआ। हरि बाणी बन्ने साची डोर, शब्दी गंढु दवाईआ। चरन कँवल प्रीती जोड़, जोड़ी जोड़ जुड़ाईआ। आप चढ़ाए साचे घोड़, वाग आपणे हत्थ उठाईआ। गुरसिख लग्गी निभे तोड़, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। सतिगुर पूरा जाए बौहड़, सो पुरख वड्डी वडयाईआ। हँ ब्रह्म लग्गी औड़, पारब्रह्म अमृत मेघ बरसाईआ। मिट्ठा करे रीठा कौड़, एका अमृत फल लगाईआ। दो जहानां रिहा दौड़, वेस अनेका रूप वटाईआ। आपे पन्ध जाणे लम्मा चौड़, लोआं पुरीआं गगन पतालां ब्रह्मण्डां खण्डां चरनां हेठ दबाईआ। सचखण्ड दवारे लाया एका पौड़, एका डण्डा रिहा वखाईआ। गुरमुखां अन्तम जाए बौहड़, हरि सज्जण लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन जननी लेखे लाईआ।

हरि बाणी धुर फ़रमाण, शब्दी शब्द जणाइंदा। लक्ख चुरासी पाए आण, एका हुक्म सुणाइंदा। राजे राणीआं सारे गाण, राओ रंकां मुख सलाहिंदा। आपे होए जाणी जाण, जाननहारा नाउँ धराइंदा । सन्त सुहेले गुरमुख साजण मात पछाण, माता पिता तृप्त कराइंदा । बख्शणहारा

चरन ध्यान, चार्तक चित सर्ब बिल्लाइंदा। चुकौणहारा दूजी काण, दोए दोए धार गवाइंदा। देवणहारा दरस महान, नेत्र लोचण दरस वखाइंदा। वसणहारा सच मकान, चौथ्थे पद डेरा लाइंदा। पंचम मेला गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखाइंदा। सन्त साजण दो जहान, सतिगुर पूरा पार कराइंदा। खाणी बाणी बण बबाण, गुरमुख साचे विच्च चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे मेल दर, दर साचा इक्क सुहाइंदा । (१४ सावण २०१६ बि)

हरि बाणी हरि रूप है, गुर सतिगुर विच्च समाए। हरि बाणी सति सरूप है, सतिगुर साचा वेख वखाए। हरि बाणी चारे कूट है, दह दिशा विच्च समाए। हरि बाणी साचा सूत है, ताणा पेटा इक्क अखवाए। हरि बाणी साचा भूप है, राज जोग सच सुल्तान इक्क कमाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, साचा मंत्र नाम दृढ़ाए।

हरि बाणी हरि अन्तर ध्यान, गुर सतिगुर बूझ बुझाईआ। हरि बाणी मारे बाण महान, तीर निराला इक्क चलाईआ। हरि बाणी मेटे पंज शैतान, हउमे हिंसा रहे ना राईआ। हरि बाणी मेटे नौजवान, पंचम मेल ना कोई वखाईआ। हरि बाणी लहणा चुकाए जगत जहान, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। हरि बाणी देवे धुर फ़रमाण, शब्द ढोला एका गाईआ। हरि बाणी होए दर परवान, हरि साचा लेखा लेखे पाईआ। हरि बाणी लोकमात कर प्रधान, आपणे नाम करे वडयाईआ। हरि बाणी गुरमुखां देवे जगत माण, भगत वछल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे साचा वर, एका शब्द करे कुड़माईआ।

हरि बाणी अमृत रस, गुर सतिगुर आप चवाया। पारब्रह्म अबिनाशी अंदर वस, आप आपणा भेव खुल्ह़ाया। दरस दखाए हस्स हस्स, निरगुण सरगुण मेल मिलाया। तीर निराला मारे कस, अनयाला आप चलाया। साचा मार्ग लोकमात दस्स, दर दसवां आप खुल्ह़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां देवे एका वर, गुर मंत्र नाम समझाया। हरि बाणी हरि का नेत्र, गुर गुर आप खुल्ह़ाइंदा। आपे वेखे काया खेतर, नव नव फोल फुलाइंदा। रुत्त बसन्ती महीना चेत्र, फल फुलवाड़ी फल महकाइंदा। गुरमुखां करे साचा हेतड़, नित नवित्त वेख वखाइंदा। लेखा जाणे पंचम जेठड़, वदी सुदी ना नाल रलाइंदा । हरिजन रक्खे साया हेठड़, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा । लभ्भदे फिरदे कोटी कोट केतड़, दिस किसे ना आइंदा। राज राजान वड वड सेठड़, पुंन दान सर्ब कराइंदा। मिले मेल ना हरि हरि मीतड़, मित्र प्यारा ना कोई मिलाइंदा। काया करे ना ठांडी सीतड़, अगनी तत्त ना कोई बुझाइंदा। सतिगुर पूरा हरि मेहरवान गुरमुखां मेला आपे कीतड़, हस्त कीट एका रंग रंगाइंदा। रंग रंगाए इक्क मजीठड़, लाल गुलाला रूप वटाइंदा। शाहो भूप वड बीठला बीठल, मोहन माधव नाउँ धराइंदा। आदि जुगादी जाणे रीतड़, आपणा मार्ग आपे लाइंदा। सतिजुग साचा पत्तित पुनीतड़, पारब्रह्म प्रभ नाउँ धराइंदा। ना कोई गुरदवार ना मन्दर मसीतड़, चार वरनां सतिगुर एका रूप दरसाइंदा। हरि बाणी हरि शब्द जगत अनडीठड़, सतिगुर पूरा भेव खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख सज्जण मेल मिलाइंदा।

हरि बाणी हरि जाणया, गुर सतिगुर रूप अपार। दर घर साचा इक्क पछाणया, मिल्या मेल श्री भगवान। लेखा चुक्का जीव जहानया, पाया पद पद निरबाण। अमृत मिल्या ठंडा पाणीआ, साचा नीर सीर विरोले दो जहान। सतिगुर पूरा गाए अकथ्थ कहाणीआ, लेखा जाणे ना वेद पुरान। गुरमुख साचा साची सुघड़ सवाणीआ, मेल मिलावा सीता राम। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका नाम प्याए जाम।

हरि बाणी हरि नाम प्याला, गुर सतिगुर हत्थ फड़ाइंदा। सतिगुर पूरा दीन दयाला, आपणी दया कमाइंदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाला, लेखा लेख ना कोई वखाइंदा। गुरमुख काया सच्ची धर्मसाला, साचा बंक सुहाइंदा। जोती नूर हाज़र हज़ूर इक्क उजाला, प्रकाश अकाश रखाइंदा। दिवस रैण करे प्रितपाला, बाल बाला लेखे लाइंदा। गल विच्च पाए एका माला, सोहँ हार गल विच्च पाइंदा। अजपा जाप आपे घाले आपणी घाला, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। फल लगाए साचे डाला, पत डाली वेख वखाइंदा । दो जहानी बण दलाला, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सज्जण मुख सलाहिंदा।

हरि बाणी साचा रंग साची अंमड़ीए, हरि सतिगुर आप चढ़ाइंदा । रंग रंगे काया माटी झूठी चंमड़ीए, चम्म दृष्टी इष्ट मिटाइंदा । कीमत करता कोई ना लाए पैसा धेला दमड़ीए, चरन प्रीती इक्क सिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साजण साचे आपे वेख वखाइंदा। हरि बाणी हरि साचा ज़ोर, जगत जुगत बणाईआ। गुर सतिगुर आपे तोर, लोकमात करे जणाईआ। निरगुण आपणे हत्थ रक्खे डोर, सरगुण तन्द बंधाईआ। नेत्र खोले हरन फोर, फुरना फुरे बेपरवाहीआ । आपे हुक्मे रिहा तोर, हुक्मी हुक्म फिराईआ। पावे सार अन्ध घोर, एका जोत कर रुशनाईआ। हरि बिन अवर ना दीसे कोई होर, ना कोई कुदरत रचन रचाईआ। लक्ख चुरासी ना जोड़े जोड़, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोई सहाईआ। हरि का रूप सति सरूप गुरमुखां चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि बाणी आपणी आप सुणाईआ।

हरि बाणी पत्तित पुनीत, पत्तित पावण आप चलाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, रसना गावत गावत गावत पार कराईआ। धुर दा शब्द साचा मीत, साक सज्जण सैण इक्क अखवाईआ। गुरसिख गौणा सोहँ सुहागी गीत, सतिगुर पूरा करे कुड़माईआ। अठ्ठे पहर वसे चीत, चेतन्न सता आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला साचे घर, बंक दवारा इक्क वखाईआ।

हरि बाणी बाण निराला, गुर सतिगुर हत्थ उठाया। रसना चिल्ला तीर कमाना, लोकमात आप चलाया। खेले खेल दो जहानां, भेव अभेदा भेव छुपाया। गुरमुखां मारे इक्क निशाना, सोए मात लए उठाया। पुरख अबिनाशी बीना दाना, दाना बीना आप हो जाया। हरिजन करे ठांडा सीना, सति सति सति वरताया। तिन्नां लोकां पार कीना, ब्रह्मा विष्न शिव राह रहे तकाया । आपणा रंग चढ़ाया भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल सुहाया। रसना जिह्वा जिस जन सोहँ चीना, चिन्ता सोग रहे ना राया। अन्तम अन्त आप आपणे जेहा कीना, हँ ब्रह्म

पारब्रह्म मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा खेल खलाया।

हरि शब्द सच्ची धुनकार, धुर बाणी नाउँ धराईआ। पुरख अगम्म खेल करतार, कुलावन्त कल वरताईआ । बेअन्त बेअन्त बेअन्त सिरजणहार, अन्त आदि वड्डी वडयाईआ । कन्त कन्त कन्त हरि नार भतार, दर सुहागण सोभा पाईआ। इच्छया भिच्छया कर शिंगार, भूशन बस्त्र इक्क सज़ाईआ। कौसतक मणीआ साचा हार, मस्तक टिक्का तिलक ललाट लगाईआ। नैणां कज्जल नाम धार, लोइण रही मटकाईआ। हस्स मुख बत्ती दन्द उच्चार, गोबिन्द गोबिन्द जिह्वा रही गाईआ। सरवन सुनण कन्त प्यार, धुनी नाद एका लिव लाईआ। नक्क वासना सुगन्धी वेख विहार, गुर संगत संग महकाईआ। बन्दी तोड़ आया विच्च संसार, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ । शाहो भूप साचे घोड़े चढ़या शाह सवार, सोलां कलीआं आसण पाईआ । सोलां सोलां बन्ने धार, सोलां सोलां वड वडयाईआ। सोलां सोलां मारे मार, सोलां सोलां लेख लिखाईआ। बदलया चोला कलिजुग तेरी अन्तम वार, पंज तत्त ना कोई रखाईआ। बणया गोला गुरसिख दवार, लोक साची सेवा रिहा कमाईआ। गाया ढोला बेऐब परवरदिगार, सोहँ रसना गाईआ। बणया तोला विच्च संसार, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। पाए रौला नर नार, चारों कुण्ट पई दुहाईआ । मनमुख माया करे ख़वार, कामी क्रोधी लोभी आसा तृष्ना होई हलकाईआ। माणस मानुक्ख जन्म गए हार, गल पाई जम की फाहीआ। दरश ना पाया गुर करतार, जगत वेख वेख नैण नैणां नाल मिलाईआ। बन्द किवाड़ ना खोल्लया ताक, आपणी अक्ख ना आप उठाईआ। गुरमुखां मेला साचे सज्जण सैण साक, सतिगुर पूरा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि बाणी हरि मंत्र, गुर सतिगुर मुख सुणाईआ।

सतिगुर गाए धुर धुर राग, हरि रागी राग अलाइंदा। शब्द अगम्मी एका अवाज़, धुर धामी आप सुणाइंदा। आपे रचया सच काज, साची वस्तू संग रखाइंदा। जुगा जुगन्तर ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। कलिजुग अन्तम देस माझ, मज़न माघ इक्क वखाइंदा। हाढ़ सतारां साजण साज, जन भगतां भगती लेखे लाइंदा। सीस रखाए साचा ताज, आपे वेख वखाइंदा। धुरदरगाही एका राज, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साजण पार कराइंदा ।

पार उतारा आपे कर, गुर शब्दी बेड़ा हरि चलाईआ। आप उतारे आपणे घर, वंज मुहाणा इक्क रखाईआ। आवण जावण दो जहानां चुक्के डर, साचा दामन रिहा फड़ाईआ। गुरमुख ज़ामन बणया हरि, हरि की पौड़ी दए चढ़ाईआ। कलिजुग मेटे हँकारी रावण गढ़, हउमे लंका गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख गुरमुख गुर गुर गुर झोली पाईआ।

गुरसिख आपणी झोली पा, पूरब लहणा लहण चुकाइंदा। सतिगुर साजण बण मलाह, बेड़ा मात चलाइंदा। अन्तम वेले पकड़े बांह, लेखा लेख लखाइंदा। निहकलंकी जामा पा, जोत जात जगत इक्क वखाइंदा। गुरसिखां बणया पिता मां, बाल अंञाणे गले लगाइंदा । हरि संगत तेरी ठंडी छाँ, सतिगुर सिर आपणा हेठ धराइंदा। इक्क दूजे दी फड़ी बांह, दूजा

विचोला ना कोई वखाइंदा। पुत्रां प्यारी लग्गे मां, मां पुत्रां संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई सीता ना कोई राम, ना कोई तीर ना कमान, ना कोई रथ रथवाही दिसे निशान, एका जोती नूर वाली दो जहान, गुरमुखां करे कल पछाण, लक्ख चुरासी मार ध्यान, एका देवे सोहँ दान, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोई गोत ना कोई वरन, अंस बंस बंस अंस, अंसा बंसा आप अखवाइंदा। (४ सावण २०१६ बि)

निरगुण अंदर नानक निरगुण धार, सरगुण विच्च सरगुण रूप वटाईआ। निरगुण अंदरे अंदर करे गुफ्तार, सरगुण नानक रसना जिह्वा हलाईआ। निरगुण निरवैर करे प्यार, परा पसन्ती आपे गाईआ। सरगुण सुणाए सर्ब संसार, मद्धम बैखरी रूप वटाईआ। लालो लालन सद बैठा रहे विचकार, शब्दी शब्द रूप प्रगटाईआ। नानक अक्खर कोई ना सके विचार, मन मत बुध भेव ना राईआ । त्रैगुण वस्सया बाहर, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ । नानक ख़सम दी बाणी रिहा विचार, एका लालो करे जणाईआ। लिखण पढ़ण तों रक्खी बाहर, जो हरि हरि बाणी रिहा सुणाईआ। जो नानक रसना दए उच्चार, कलिजुग जीवां राह वखाईआ। लक्ख चुरासी वखाए एकँकार, जगत इशारा इक्क समझाईआ। पिच्छे साचे तख्त बैठा आप निरँकार, नानक सेवा रिहा कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द अनादि सच्ची धुनकार, काया मन्दर अंदर देवे कर प्यार, रसना जिह्वा कढ़े बाहर, कलम छाही दए आधार, कागद लेखा अपर अपार, जीवां जंतां करे पढ़ाईआ ।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नानक निरगुण निरगुण नानक एका हरि आपे अक्खर आपे वक्खर आपे रिहा पढ़ाईआ । (१४ अस्सू २०१७ बि)

हरि फ़रमाण गुर की बाणी, गुरू ग्रन्थ गुर वडयाईआ। गोबिन्द होया जाण जाणी, सभ नूं गिआ समझाईआ। जिस जन पाउणा पद निरबाणी, पढ़ पढ़ हरि लिव लाईआ। जो जन पढ़ पढ़ जाणे जगत कहाणी, तिस ठौर कोई ना पाईआ। हरि का नाउँ अमृत बाणी, गुर अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ रिहा समझाईआ। गुरू ग्रन्थ हरि का उपदेश, नानक अञ्जण अंग लगाया। साहिब दाता नर नरेश, अमरदास रिहा समझाया। रामदास कहे हरि रहे हमेश, ना मरे ना जाया। गुर अरजन करे आदेश, निउँ निउँ सीस झुकाया । धन्न साहिब जिस तूं वस्सया देश, धन्न धन्न तेरी वड्डयाया। जुग जुग तेरा लिख लिख थक्के लेख, अन्त किसे ना पाया। गोबिन्द ला के गिआ मेख, ना कोई सके उखड़ाया। हरि जू अन्तम आवे सम्बल देश, निहकलंका नाउँ रखाया। दो जहानां लए वेख, आपणा भेव ना किसे खुलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहिआ।
गुरू ग्रन्थ बोध अगाध ज्ञान, जीवां जंतां करे पढ़ाईआ। सिफ्ती सिफ्त सलाहन, पारब्रह्म सच शरनाईआ। भगत भगवन्त गुरमुख गुरसिख इक्को गायण, गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू ग्रन्थ गुर मीत दए वडयाईआ । गुरू ग्रन्थ गुर सूरा, चार वरन जणाया। जिस धाम प्रगट होए हाज़र हज़ूरा, आपणा रंग दए

वखाया। कर किरपा नेड़े आए जो दिसे दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे नाल मिलाया। (१ पोह २०१८ बि)
साचा नाउँ अमृत बाणी, भगत भगवान आप जणाइंदा। ..... (१८ फग्गण २०१६ बि)

सतिगुर शब्द ते शब्द गुरू ग्रन्थ, साहिब गोबिन्द गिआ समझाईआ । (२५ सावण श सं ८) पुरख अकाल खेल निरगुण निरवैर निराकार, धरत धवल धौल उत्ते आईआ। सनक सनंदन सनातन बण के सन्त कुमार, बराह आपणा वेस वटाईआ। यगह पुरुष हो त्यार, पर्दा परदिआं विच्चों चुकाईआ। हावगरीव खेल अपार, नर नरायण सर्ब समझाईआ। कपल मुन हो उजिआर, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। किथ्थे इक्क दा दस्सणा लेखा नहीं उस दी आउणी फेर वार, वारता अगली आप जणाईआ। रिखव हो के ख़बरदार, प्रिथू आपणी गंढु पवाईआ। मतस हो के ज़ाहर, कछव वड्डी वडयाईआ। धन्नतर खोलू किवाड़, बावन वेस वटाईआ। हरनाकश दित्ता शिंगार, आपणी कल समझाईआ। धरू लगाया पार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। हँस चोग दित्ती खवाल, माणक मोती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हत्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण आया राम परस, राम दसरथ बेटा खेल खलाईआ।
वेद व्यासे कर के तरस, लोकमात तन दित्ती वडयाईआ। कृष्न खेल कीता असचरज, नूर नुराना डगमगाईआ। योधा बण के सूरबीर मरदाना मर्द, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क शनवाईआ। निरगुण सरगुण धार शब्द, तन वजूद दए वडयाईआ। जिस ने बणाए दीन मज़हब, शरअ शरअ दित्ती तजाईआ। मूसा ते होया गज़ब, नूर नुराना कोहतूर दए गवाहीआ। ईसा दे अंदर रखया कदम, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ।
निरगुण किरपाहार दयाला, दीन दर्द दुःख भंजन अखवाईआ। जिस मुहम्मद कीता अलगमा, वही नाज़ल दित्ता कराईआ। ज़बराईल दए पैग़ामा, संदेशा धुरदरगाहीआ। सजदा करना कबूल सलामा, कदमबोसी विच्च सीस झुकाईआ। उस दा खेल बड़ा महाना, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जिस सतिगुर नानक भेजया दे के सतिनामा, बिनां देह तों सतिनाम टिकण किते ना पाईआ। उस सतिनाम ने अञ्जण कीआ परवाना, अमरदास वज्जी वधाईआ। रामदास होया प्रधाना, गुरू अरजन गुरू गुरदेव अखवाईआ। हरिगोबिन्द पहर के बाणा, दीन दुनी रीती दित्ती बदलाईआ। हरिराए प्यार कीती महाना, हरिकृष्न वज्जी वधाईआ। गुर तेग बहादर धर्म दा बण निशाना, निशाना जगत जहान गिआ झुलाईआ। गोबिन्द खण्डा खड़ग खिच्च क्रपाना, दुष्टां दित्ता घाईआ। उसे गोबिन्द दी धार शब्द शब्द गुरू ग्रन्थ जिस नूं सीस झुकाउण ज़िमीं असमानां, विष्न ब्रह्मा शिव सारे झोलीआं डाहीआ। बिनां देह तों परमात्मा दा निरगुण सरूप लोकमात कदे नहीं होया प्रधाना, प्रधानगी विच्च कदे ना आईआ। उह निरगुण दी महिंमा एह सिफ्तां दा ख़ज़ाना, नाम दा भंडारा बोध अगाध कागज़ां उत्ते कादर करते करीमां नूं रिहा मिलाईआ। एह कोई अक्खरां वाला पत्थरां वाला सिफ्तां वाला सलाहवां वाला अकल बुद्धि दा नहीं अफ्साना, एह धुर संदेशा धुर पैग़ाम धुर दा हुक्म हुक्म इक्को नज़री आईआ।

एह तत्त देह नहीं एहदा स्वास नहीं पवन नहीं नौं दवार नहीं एह सतिगुर दा निराकार दा अकार गुरू ग्रन्थ साहिब महाना, जिस दे उत्ते सिफ्त सिफ्त सलाह, इक्को इक्क अकार, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस नूं सारे कहन्दे जगत मलाह, जिस दे विच्चों मिले हकीकत वाला हक़ खुदा, जिस दे अवतार पैगम्बर सारे करन दुआ, वास्ता बगलगीर हो के पाईआ। उस दा सतिगुर नानक बणया रहिनुमा, गुरू अरजन मोहर दित्ती लगा, शहादत शब्द गुरू भुगता, सन्त सुहेले भगत सारे नाल लए रला, वड्डा छोटा ऊँच नीच रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मेल आपणे हत्थ रखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ शब्द बोध गुरबाणी, अक्खर अक्खरा नाल जुड़ाईआ। जिस दी महिंमा अकथ्थ कहाणी, अकल बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। एह सतिगुर अरजन सभ नूं अमृत जाम प्याया पाणी, कोझयां कमलयां ग़रीबां निमाणयां अन्तर आत्म धुर दा रस चुआईआ। एह झगड़ा मुकावे चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज लेखा रहे ना राईआ। एहो मंज़ल चार जुग दे अवतारां ने पैगम्बरां ने दस्सी रहानी, रूह बुत्त विच्च मिले मेल धुर दे माहीआ। जिस दी तरल जवानी, बुढ़ापे विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द शब्द गुरबाणी, बाण शब्द शब्द गुर इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द शब्द गुरू ग्रन्थ, गुरदेवा नज़री आईआ। जिस दा ना कोई दीन ना कोई मज़हब ना कोई अक्खरी अंस, मानव जाती एका गंढु पवाईआ। जो ठग्गाँ चोरां यारां बदमाशां बणावे गुरमुख हँस, बुद्धि बिबेक दए बणाईआ। जो हँकार निवारे कंस, निम्रता निरमाणता इक्क समझाईआ। जो हिंदू मुसलम सिख ईसाईआं दा इक्ठा बणावे बंस, प्रीवार इक्को इक्क दृढ़ाईआ। जिस दी सभ तों वक्खरी बणत, घड़न भन्नणहार जिस दा मार्ग इक्क अखवाईआ। एसे दी महिंमा करदे सन्त, सिफ्तां विच्च सलाहीआ। एहदा लेखा आदि अन्त, जुग जुग रीती चली आईआ। एहदा मेला नाल भगवन्त, भगवन मेला सहज सुभाईआ। एह कदे ना होए भसमंत, भसमड़ रूप ना कोई दरसाईआ। इस दे विच्चों मिले बहश्त जनत, जनत स्वर्ग इस दे चरन चुम्मे चाईं चाईंआ। गढ़ पुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। बोध अगाध मिले पंडत, घर बैठ्ठयां सभ नूं करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रहबर इक्क अखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ शब्द गुरदेवा, देव आत्म मेल मिलाईआ। जिस दा भेव अलख अभेवा, अगोचर कहण कोई ना पाईआ। जिस नूं पढ़ना नाल रसना जेहवा, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। जिस दे नाल मिले धाम सचखण्ड दवार निहचल निहकवा, दरगाह साची सोभा पाईआ। एह अमृत रस मानव जाति दा अन्तर आत्म दा मेवा, रसना दे नौं रस कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर वड्डा इक्क अखवाईआ।

वड्डा सतिगुर आप, आपणी दया कमाईआ। जिस दा चार जुग दा धुर दा जाप, जगजीवण दाता आपणा नाम दृढ़ाईआ। जिस दी रचना रची निरगुण सरगुण नानक हो के आप, परदा

परदिआं विच्चों उठाईआ। एह त्रैगुण दी धार त्रैगुण दा मेटे पाप, त्रैभवन दा मेला मेले सहज सुभाईआ। एहदे विच्च ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई दस्सया अन्धेरा डूंघा खात, गढ़े शरअ ना कोई बणाईआ। ना कोई झगड़ा रक्खया ज़ात पात,दीन दुनी ना कोई लड़ाईआ। इक्को साहिब दस्सया अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। सो पुरख निरञ्जण जिस दा कीता प्रकाश, हरि पुरख निरञ्जण दया कमाईआ। एकँकार खेल खलाया तमाश, आदि निरञ्जण डगमगाईआ। श्री भगवान दित्ती दात, अबिनाशी करते दित्ती वरताईआ। पारब्रह्म खोल्ह के हाट, ब्रह्म वस्त अमोलक झोली दित्ती पाईआ। एह नानक दी धुर दी लिआंदी सुग़ात, सतिगुर नानक सतिगुरू पुरख अकाल दी सिफ्त सिफ्त सिफ्त विच्च वड्डयाईआ। जिस दा गोबिन्द बणया दास, पुरख अकाल कह के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सांझा यार नूर अलाह अलाह आलमीन इक्को इक्क अखवाईआ।

गुरू ग्रन्थ जगत सुहेला, हिंदू मुसलम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी आपणे अंग लगाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म कराए मेला, पर्दा दूई द्वैत उठाईआ। इक्के घर वखाए गुरू गुर चेला, काया मन्दर अंदर वज्जे वधाईआ। घर स्वामी सज्जण मिले उह अगम्मी सुहेला, जिस दा विछोड़ा एथ्थे ओथ्थे होण कदे ना पाईआ । जिस दी धार सतिगुर शब्द शब्द गुर सतिगुर अचरज खेला, ख़ालक ख़लक ख़लक ख़ालक विच्च गिआ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

गुरू ग्रन्थ सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरू दा पद, पदवी धुरदरगाहीआ। जिथ्थे दीन मज़हब ज़ात पात अवतार पैगम्बर गुरू दी नहीं कोई हद्द, तन वज़ूद माटी ख़ाक पुतला नज़र कोई ना आईआ। जिथ्थे इक्को जोत दीपक रिहा जग, नूर नुराना डगमगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उथ्थे कोई ना सके लभ्भ, दूर दुराडे थल्ले बैठे नैण उठाईआ। सतिगुर नानक ओथ्थे चढ़या भज्ज, निरगुण धार वेख्या परम पुरख दा नूर चाईं चाईंआ। ओथ्थों वस्त लिआंदी दुरलभ्भ, आपणी सति वाली झोली पाईआ। फेर आया लोकमात वस्त लै के हक़, हमसाजण आपणा नाल रखाईआ। ओस नूं उस दे प्यार विच, ओस दी धार विच, संसार विच, गाया नाल रसना जिह्वा लब, धुर दा राग धुन आत्मक विच्चों खुशीआं नाल बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा रूप सूरा सर्बग्ग, पुरख अकाला इक्को नज़री आईआ। जिस नूं पैगम्बरां किहा यामबीन अलाही रब्ब, नूरी रब्ब नूर अलाहीआ। ओसे दा नाम, ओसे दा कलमा, ओसे दा शब्द, ओसे दा नाद, ओसे दी धुन, ओसे दी सद, ओसे दा ढोला गाईआ। जो ऐस वेले सारी सृष्टी दे साहमणे प्रगट ते उहदा मालक प्रगट अज्ज, जिस नूं आज़ज़ हो के सारे सीस निवाईआ। एस दा परदा परदिआं विच्च सके कोई ना कज, उहलिआं विच्च ना कोई छुपाईआ। जिस दे पिच्छेगोबिन्द ने वाहिगुरू जी दा खालसा ते वाहिगुरू जी दी फतह दा जैकारा लाया गज, जिस गज़ दे तन्दव दित्ते तुड़ाईआ। उह सारी सृष्टी दा दृष्टी दा आत्मा दा ब्रह्म दा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के कबूल करन वाला हज़, हाज़त अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ।

गुरू ग्रन्थ साहिब गुरबाणी आदि पुरख अपरम्पर, पारब्रह्म वड्डयाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी

हुंदा रिहा सवम्बर, निरगुण सरगुण तत्तां वाले तत्त लए प्रनाईआ। जिस ने आपणी नाम बाणी दा अवतार पैगम्बर गुरू दी धार विच्चों कीता अडम्बर, लेखा लिख्त लिख्त नाल बणाईआ। उह सर्ब कला भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ । उस दा काया रूपी सच सच दा मन्दर, जिस मन्दर अंदर वसे धुर दा माहीआ । भाग लगाए डूंघी कंदर, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी जंदर, पर्दा दूई वाला चुकाईआ । प्रकाश कर के बिनां सूर्या चन्दर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच शब्द शब्द गुर दात, सतिगुर नानक निरगुण धार सरगुण लिआंदी लोकमात, धरनी धरत धवल धौल उत्ते मानस मानस मानव सभ दी झोली दित्ती भराईआ।

एसे दा रूप परमेश्वर कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म हुक्म फ़रमान आदि जुगादी देवे जगत जहान, ब्रह्म वेता आत्म नेता नर निरँकार निराकार आपणी दया कमाईआ। (२६ भादरों श सं ८)

हरिभगत : हरि भगत हरि दर न्यारा, हरि भगत हरि घर सच वसानया। हरि भगत ना जन्मे ना जाए मर, एका रंग सद रहानया। हरि भगत आवण जावण चुक्के डर, मिले माण दो जहानया। हरि भगत अमृत तीर्थ नुहावे साचे सर, खुल्हे बन्द कवाड़ जगे जोत इक्क महानया। हरि भगत शब्द सरूपी अठ्ठे पहर रिहा लड़, मार मिटाए पंज शैतानया। हरि भगत साचे घाड़न रिहा घड़, ना भन्ने डंने कोई विच जहानया। हरि भगत ना कोई सीस ना कोई धड़, साचा नाम जगत निशानया। हरि भगत दसम दवारे चढ़, मिले मेल बली बलवानया। हरि भगत दसम घर जाए वड़, मिले जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवानया।

हरि भगत जगत न्यारा। हरि भगत प्रभ पाए सारा। हरि भगत मात साची धारा। हरि भगत दात शब्द वणज वपारा। हरि भगत नात, गुर चरन प्यारा। हरि भगत पित मात, नरायण नर निरँकारा। हरि भगत बैठा रहे इक्क इकांत, साची पुरी कर पसारा। हरि भगत प्रभ वेखे मार झात, जोती नूर इक्क उजिआरा । हरि भगत अमृत बूंद पीए सवांत, मिटे अन्ध अन्धयारा। हरि भगत उत्तम जात, मिल्या मेल महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा।

हरि भगत हरि दवार। हरि भगत वड्डिआई विच संसार। हरि भगत मिले वधाई, रसना गाए नर नार। हरि भगत ना होए जुदाई, दो जहानी पहरेदार। हरि भगत माणे ठंडी छाईं, देवे प्रभ किरपा धार। हरि भगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दया कमाए आप बहाए सच साचे दरबार।

हरि भगत साजण साजया। हरि भगत रक्खे लाज गरीब निवाज़या । हरि भगत मारे अवाज़, सवारे काजया। हरि भगत सद पहनाए शब्द ताज, वेखे खेल कल कि आजया। हरि भगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात देवे वड्डिआई, वज्जे वधाई अन्तम कल देस माझया।

हरि भगत मिले वडयाईआ। हरि भगत माझे देस जोत जगाईआ। हरि भगत कर कर वेस, निहकलंक नरायण नर साची वेल वधाईआ। हरि भगत सदा आदेस, कल साची बणत बणाईआ । हरि भगत ब्रह्मा विष्न महेश कल शिव शंकर धार रखवाईआ। हरि भगत नर नरेश, कर साची पुरी आप वसाईआ। हरि भगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे माण, लोकमात करे रुशनाईआ।

हरि भगत हरि उधारे, निहकलंक कल जामा धारे। जगे जोत निरालीआ। हरि भगत प्रभ पावे सारे, कलिजुग तेरी अन्तम वारे, कर के खेल भगत मेल मिलाईआ। कलिजुग जीव थक्के ना कोई पावे साची सारे। चले चाल हरि निरालीआ। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा भाणा आपे जाणे, सृष्ट सबाई साचे दर एका सदा सुहाईआ।

हरि भगत हरि भंडार, शब्द अतुट्ट नाम अपार, सच कराए वणज वपार, देवे माण वडयाईआ। सतिजुग तेरी तिक्खी धार, गुरमुख विरले उतरे पार, प्रभ अबिनाशी पावे सार, ना होवे अन्त जुदाईआ । लक्ख चुरासी थक्के हार, किसे ना दिस्से पार किनार, गुरमुखां मिल्या हरि निरँकार, आत्म जोती दीप इक्क जगाईआ। शब्द घोड़े हो असवार, जन भगतां रिहा पैज सवार, दिवस रैण करे काज, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निर्मल जोत वरन गोत ना कोई कराईआ।

गुर पूरा मेहरवान दया कमाइंदा। अठ्ठे पहिर कर ध्यान, चरन सरन प्रीत रखवाइंदा। आपे करे जाण पछाण, जुगा जुगन्त मेल मिलाइंदा। लोकमात साचा मेल मिलाण, सुफ़ल कुक्ख आप कराइंदा। मिले वड्डिआई दो जहान, पुरीआं लोआं धार बंनाइंदा । इक्क रखाया शब्द बबाण, साचे बाले विच बहाइंदा। अमृत नीर कराया सच इशनान, इन्दलोक शिवलोक धाम सुहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुलारी धी प्यारी, पिछला लहणा कलिजुग गैहणा वखाए नैणा, अन्तम तन पहनाइंदा।

पिछला लहणा आप चुकाया। लाल दुलारे सिहरा लाया। शिव पुरी चुबारे विच बहाया। इन्दर पुरी पावे सारे, करोड़ तेतीसा सेवा लाया। किरपा कर हरि निरँकारे, अमृत मेवा फल खवाया। जगे जोत विच संसारे, वल छल ना कोई रखाया। खाली भरे हरि भंडारे, तोट कोई रहण ना पाया। एका बख्शे चरन प्यारे, धीरज धीर आप रखाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चिन्ता रोग जगत सोग दए मिटाया। (१ पोह २०११ बि)

हरि भगत कहे मैं तेरा मीत, प्रभ तेरी सरन रखवाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरा गुर अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईआ। भगत कहे मैं लभ्भण ना जावां मन्दर मसीत, शिवदवाले मट्ठ ना फेरा पाईआ । सतिगुर कहे मैं तेरे घर आवां ठीक, दो जहानां बण के पान्धी राहीआ। गुरसिख कहे मैं बिन तेरे करां ना कोई प्रीत, नाता तोड़ां सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरी चिट्ठे उत्ते पावां इक्क लीक, जुग चौकड़ी सके ना कोई मिटाईआ। भगत कहे प्रभ मैं वेखां तेरी रीत, रीतीवान तेरी ओट तकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मैं पैहलों तेरा

गावां गीत, खुशीआं ढोला इक्क सुणाईआ। भगत कहे प्रभ तेरे अग्गे मेरा सीस, तत्त तेरी भेट चढ़ाईआ। भगवान कहे मैं सच जगदीस, नाता तेरे नाल रखाईआ। भगत भगवान दोवें मिल के बणया दूआ दूइउँ सिफ़र दूआ सिफ़रा मिल के होए बीस, बीस बीस रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जन भगत देवे वड्डयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेरा वड्डा, उच्च अगम्म अथाह अखवाइंदा। श्री भगवान कहे भगत मेरा बच्चा नढ्ढा, जिस बिन मेरा लोकमात राह ना कोई चलाइंदा। भगत कहे मेरा पिता पुरख अकाल सच्चा, सच कहाणी इक्क सुणाइंदा। श्री भगवान कहे मैं भगतां लूं लूं अंदर रचा, बिन भगतां मैनूं अंदर वड़न जाच ना कोई सिखाइंदा । भगत कहे प्रभ मैं तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाइंदा। श्री भगवान कहे पुत हच्छा, हच्छी तरा आप समझाइंदा। दोहां दा मिल के बणया सोहँ सच्चा, सति सरूप रूप वटाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जिस बोलया पुरख समरथा, सो समरथ दया कमाइंदा। कोट जन्म दी लेखे लग्गे पूजा पाठा, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहार साचा मीत, भगत भगवान दस्से रीत, मेल मिलाए बिन मन्दर मसीत, जिउँ कच्चे कोठे प्रभू परमात्मा मिल्या गुरमीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। (२६ अस्सू २०२० बि)

हरि भगत हरि दवारे वसे। हरि भगत विच्च हरि जीओ वसे। (६ चेत २००८ बि)

हरिमन्दर : काया वसे आत्म हस्से, भाग लग्गे जोती दीपक जगे, हरि हरिमन्दर तन शहर। (१२ भादरो २०१२ बि)

हरिमन्दर घर अपर अपार, उच्च अटारीआ। त्रैगुण माया लिआ उसार, पंचां संग समा लिआ। अठां वेखे रंग अपार, नौआ दरां आप खुल्ला लिआ। दसवें सिँघासण कर त्यार, साची सेजा आसण ला लिआ। पवण उनंजा छत्तर झुलार, हरि साची सेवा इक्क रखा लिआ। कौसतक मणीआं साची धार, नूर उजाला इक्क करा लिआ । जोती जोत सरूप हरि, काया मन्दर सच घर साची बणत बणा लिआ। (१ कत्तक २०१२ बि)

हरिमन्दर हरि भगवान, बणत बणाईआ। जोती नूरो नूर नुरान, आपणा रंग वखाईआ। आपे होया बेपछाण, दिस किसे ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आपे जाणे जाणी जाण, आपणे मन्दर डेरा लाईआ। मन्दर हरि अडोल, दिस्स किसे ना आया। आपे वस्से इक्क इकल्ला, आपणा हिसा आप वंडाया। वेख वखाणे जल थला, पुरीआं लोआं विच्च समाया। शब्द सुनेहड़ा दर दवारयो एका घल्ला, दर दरवाज़ा बाहर कढाया। छेवां घर एका मल्ला, सच सपूते माण दवाया। ना कोई दिसे उपर थल्ला, एका एक वखाया। आपे वस्सया निहचल धाम अट्टला, अलक्ख अभेव रेख भेव हरि आपणी आप समाया। जोती जोत सरूप हरि, साचे शब्द देवे वर, आप आपणा हुक्म सुणाया। (१० चेत २०१३ बि)

हरिमन्दर अथाह, हरि हरि आप उपाईआ। वड दाता बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाईआ। जिस दा लहणा देणा थल अस्गाह, महीअल रिहा समाईआ। उह वाहिद अलाही नूर खुदा, खुद मालक इक्क अखवाईआ। जिस दे अवतार पैगम्बर गुरू शास्त्रां वाले गवाह, शहादत

रहे भुगताईआ। उह लेखा जाणे दो जहां, दुहरी आपणी कल वरताईआ। उहदा नगर खेड़ा वसदा रहे गराँ, गृह गृह सोभा पाईआ। जो भगत सुहेला भगतां पकड़े बांह, बहीआ आपणे हत्थ रखवाईआ। ओसे दा सदा सद रहिंदा नां, नाउँ निरँकार वड वडयाईआ। तिस दे चरन कँवल बल बल जां, बलिहारी आपणा आप घोल घुंमाईआ। सो निथाविआं देवणहारा थां, धन्नतर इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

हरिमन्दर अपार, भगत दवारया। हरि भगत अपार, महल्ल उसारया। हरिमन्दर अपार, जोत जगा रिहा। हरिमन्दर अपार, नाद वजा रिहा। हरिमन्दर अपार, बूंद सवांत पया रिहा। हरिमन्दर अपार, सोई सुरत सुरत उठा रिहा। हरिमन्दर अपार, अकाल मूरत नज़री आ रिहा। हरिमन्दर अपार, साची मूरत तूरत तुरीआ आप सुणा रिहा। हरिमन्दर अपार, आसा मनसा पूरत, पूरन पुरख अकाला रंग रंगा रिहा। हरिमन्दर अपार, नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, सति सच नाल बंन्ना रिहा। हरिमन्दर अपार, सुघड़ बणाए मूर्ख मूड़त, मुगधां रंग रंगा रिहा। हरिमन्दर अपार, हरिजन बख्शे चरन धूड़त, दुरमत मैल धवा रिहा। हरिमन्दर अपार, इक्को नज़री आए नूर नूरत, जो उजाला जग करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक्क वड्डिआ रिहा।

हरिमन्दर अनडिट्ठ, नेत्र नज़र ना आया। हरिमन्दर जिथ्थे किसे मिले ना पिट्ठ, सनमुख सोभा पाया। हरिमन्दर अपार, नाम भंडारा देवे मिट्ठ, बिन रसना रस चखवाया। हरिमन्दर अपार, जन्म कर्म दा लेखा लए नजिट्ठ, आवण जावण फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताया। हरिमन्दर अपार, भगत वडयाईआ। हरिमन्दर अपार, संग जणाईआ । हरिमन्दर अपार, गुरमुख कुड़माईआ। हरिमन्दर अपार, गुरसिख वधाईआ। हरिमन्दर अपार, मिले मेल धुर दे माहीआ। हरि मन्दर अपार, जोती जाता नज़री आईआ। हरिमन्दर अपार, गोती डेरा ढाहीआ। हरिमन्दर अपार, सोई सुरती आप उठाईआ। हरिमन्दर अपार, धुर दी खेल दए वखाईआ। हरिमन्दर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग बणाईआ।

हरिमन्दर अपार, सहज सुखदाया। हरिमन्दर अपार, जगत दलिद्री दुःख मिटाया। हरिमन्दर अपार, अन्तर निरंतर देवे सुक्ख, सुक्ख सागर विच्च समाया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे लेखा नहीं काया बुत्त, बुतखाने वंड ना कोई वंडाया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे इक्को सुहञ्जणी रुत, खिजां ना कोई वखाया। हरिमन्दर अपार, मिले अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ दर दखवाया। हरिमन्दर अपार, लेखे लग्गण सन्त सुहेले सुत, अपराधी नज़र कोई ना आया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। हरिमन्दर अपार, जन भगत सुहेलया। हरिमन्दर अपार, मिलणा गुरसिख गुरमुख धुर दे चेलया। हरिमन्दर अपार, धर्म राए दी कट्टे जेलया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल खेलया। हरिमन्दर अपार, नर हरि दिसे इक्क नवेलया। हरिमन्दर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सज्जण सुहेलया।

हरिमन्दर अपार डूंघा सागर, सगली खेल विखाईआ। हरिमन्दर अपार डूंघी काया गागर,

गागरीआ वज्जे वधाईआ। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे मिलदा धुर दा आदर, अदल इन्साफ़ इक्क कमाईआ । हरिमन्दर अपार, जिथ्थे प्रेम दी चिट्टी चादर, ओढ़ुण नज़र कोई ना आईआ। हरिमन्दर अपार, सुहावे करीम कादर, करता पुरख धुरदरगाहीआ। हरिमन्दर अपार, निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमत मैल धवाईआ। हरिमन्दर अपार जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची शरनाईआ।

हरिमन्दर अपार, भगत उपनया । हरिमन्दर अपार, लेखा रहे ना दीन मज़हब बंनया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे इक्को नूर जो चढ़े चंनया। हरिमन्दर अपार, मिले नाम भंडारा साचा धंनया। हरिमन्दर अपार, सुणे नाद बिना कंनया। हरि मन्दर अपार, प्रभ सुहाया छप्पर छंनया। हरिमन्दर अपार, वखाए जन भगतां जिनां ने भाणा मन्नया। जोती जोत सरूप हरि, आ आपणी किरपा कर, सदा आपणा खेल खलनया।

हरि मन्दर अपार, गुरू गुरदयाल है। हरिमन्दर अपार, सतिगुर सच्ची धर्मसाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे पोह ना सके काल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे नाम वस्त मिले सच्चा धन्न माल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे ना कोई शाह ना कंगाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे इक्को जोत नूर अकाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे दीपक तेल बाती सके कोई ना बाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे त्रै वस्तू रक्खया इक्को थाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे साहिब स्वामी चले नाल नाल है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे सोंहदे बुढ्ढे बिरध बाल नौजवान है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां मिलदा माण है। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे वसदा जोती जाता श्री भगवान है। हरिमन्दर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहारा दान है।

हरिमन्दर अपार, जगत निरालया । हरिमन्दर अपार, गुरमुख विरले मात वखालया । हरिमन्दर अपार, जन भगतां आप सुहा लया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे इक्को नूर जोत उजालया। हरिमन्दर अपार, जिथ्थे शाहो भूप बैठा शाह दलालया। हरिमन्दर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हत्थ रखा लिआ। (३ असू शहनशाही सम्मत नौं)

हरिरंग : हरि रंग हरि भगतां माणया। हरि रंग गुरमुखां मन सदा समाणया। हरि रंग हरि जीव प्रभ जाणया। हरि रंग प्रभ जोत जीव जंत अंञाणयां। हरि रंग ना बूझे भुल्ला प्रभ भुलाणया । हरि रंग जाणे जिस प्रभ जाणिआ। हरि रंग प्रभ पूरा, महाराज शेर सिँघ हरि रंग वखाणया। (१६ जेठ २००७ बि)

सो वड्डा जिस हरि रंग माणयां, गुरमुख नाउँ जगत रहि जाए। (२२ जेठ २००७ बि)

हरि रंग जन वेख, रसना रस हरि साचा नाउँ लीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ अबिनाशी होए वस, जन भगतां रहे अद्धीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ मारे शब्द खण्डा, भन्ने हँकारी बीन है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, एका राह जगत दिखाए, चार वरनां एका थां बहाए, ना कोई होर बणाए दूजा दीन है।

हरि रंग जन वेख, जगत वड्डिआई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत विच टिकाई है। हरि रंग जन वेख, अठ्ठे पहर प्रभ एका जोत जगाई है। हरि रंग

जन वेख, अज्ञान अन्धेर दए मिटाई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, पूरन बूझ रिहा बुझाई है।

हरि रंग जन वेख, रंग अनूप है। हरि रंग जन वेख, प्रभ दिसे सति सरूप है। हरि रंग जन वेख, मेल मिलावा हरि साचे शाहो भूप है। हरि रंग जन वेख, सृष्ट सबाई अन्तम कलिजुग चार कुण्ट होई अन्ध कूप है। हरि रंग जन वेख, मन भए अनन्दा। हरि रंग जन वेख, उतरे मन की झूठी चिन्दा। हरि रंग जन वेख, एका एक हरि राह वखाए दया कमाए, निज घर आत्म आप उपजाए, बणाए साची बिन्दा। जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा जन भगतां आप बख्शंदा।

हरि का रूप अगम्म, शब्द अमोल है। हरि का रूप अगम्म, सृष्ट सबाई एका ब्रह्म, पूरे तोल रिहा तोल है। लक्ख चुरासी पई भरम, अन्तम कलिजुग रही डोल है। काया माटी झूठा चाम, सच वस्त ना किसे कोल है। अन्तम बाहर होणे दम, झूठा रहणा काया ढोल है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां लए रखाए दया कमाए, लक्ख चुरासी रही अनभोल है। (७ हाढ़ २०११ बि)

निरगुण सरगुण हरि हरि रंग, जुग जुग खेल खलाइंदा। (२२ जेठ २०१८)

हरि हरि रंग आदि जुगादि अनोखा, जगत ललारी समझ कोई ना पाईआ। जिस दे विच्च एथ्थे ओथ्थे नहीं धोखा, अगनी वाली भट्ठी ना कोई तपाईआ। मंज़ल मार्ग राह दस्स के सौखा, सोहणे मनमोहणे गुरमुख लए तराईआ। झगड़ा रहे ना चौदां लोका, लुकवां भेव अगला दए खुल्ह़ाईआ। पढ़ना पए ना कोई पोथा, वरका वरका ना कोई उलटाईआ। लभ्भणा पए कोई ना कोठा, मंज़ल आपणी दए चढ़ाईआ। जिथ्थे रहे कोई ना रोगा, हँ ब्रह्म ना कोई वडयाईआ । तत्तां वाला दिसे कोई ना चोगा, तन वजूद ना कोई सफ़ाईआ। बैरागीआं वाला धारना पए ना जोगा, जगत जोगीशर ना कोई समझाईआ। अलख जगा के देणा पए ना होका, रसना ढोला गीता ना कोई सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चरन प्रीती दे के इक्को मौका, मुफ्त आपणे नाल रलाईआ। (२१ विसाख श सं २)

गुरसिखां हरि रंग चढ़ावणहारा, सच प्रीती एकँकारा बख्शे दात। (६ मध्घर श सं ११) (करतार दा प्रेम)

हूर : आपे हूर आपे परी, सदा वसे बाहर नौं दरी, इक्क खुल्ह़ाए साचा घर दसम गली। दसम गली बन्द किवाड़ खोल्ह़ वखाईआ। अमृत आत्म मेघ बरसे ठंढी झड़ी, दिवस रैण छहबर लाईआ। सरन सरनाई जो जन सवाणी साची पड़ी, सच महल्ल उच्च अट्टल सच कन्ते मेल मिलाईआ। शब्द सरूपी बांह साची फड़ी, इक्क बंधाए शब्द डोर साची लड़ी, रसना गाया सुलक्खणी घड़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देव आत्म वर, दर दरवाज़ा नज़री आईआ। (२ जेठ २०१३ बि)

साचा संसा करे दूर, दूर दुराडा फेरा पाईआ। पिछले करे माफ़ कसूर, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। अग्गे सभ ने रहणा हज़ूर, चरन दुआर इक्क समझाईआ। इक्को ढोला गौणा

ज़रूर, दीन मज़हब ना कोई रखवाईआ। गुर अवतार सारे करन मंज़ूर, तेरी मज़दूरी इक्को भाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त बेपरवाहीआ। असीं होए चकना चूर, बल आपणा गए गुआईआ। मुहम्मद कहे मैं लारा दे के आया बहसतीं मिले हूर, हू हू तेरा भेव कोई ना पाईआ। मेरा तुटा माण ग़रूर, ग़ुरबत कोई रहण ना पाईआ। मैं अन्त होया मज़बूर, मेरी पेश ना चले राईआ। मैं तेरा भुलया नूर, तेरा नूर मेरी ख़ुदाईआ। बिन तेरे मिले ना कोई शऊर, सोहबत मात ना कोई वडयाईआ। बिन तेरे मेरा काअबा तपया वांग तन्दूर, आब हयात ना कोई छिड़काईआ। उच्ची कूक कूक कहे मनसूर, समस तबरेज़ दए दुहाईआ। शहनशाह पातशाह इक्क ग़फ़ूर, ग़फ़लत विच्च कदे ना आईआ। मेरा महिबूब देवे इक्क सरूर, सुरती आपणे नाल मिलाईआ। मिले ख़ुदावंद साची हूर, हुज़रे आपणे लए बहाईआ। सूफ़ी कहे मेरा मुशर्द मेरी आसा पूर, मुस्लिम सुन्नी ना कोई वखाईआ। चार यारी रहे दूर दूर, दर दरवाज़े नेड़ ढुकण ना पाईआ। जो दीसे सो अन्तम कूड़, फ़नाह रूप आप समझाईआ। चलो रल के मंगीए चरन धूढ़, प्रभ सच्चा मेहर नज़र नज़र लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तम लेखा रिहा जणाईआ। (२१ जेठ २०१६ बि)

अन्त राए धर्म ना मंगे कोई मसूल, चित्रगुप्त ना लेख वखाइंदा। लाड़ी मौत नेड़ ना आए हूर, कोटन कोट बहश्त जन्नत चरनां हेठ दबाइंदा। साचे सन्त इक्क सरूर, सति पुरख निरञ्जण आपणा रस चखाइंदा। (२४ भादरों २०१६ बि)

पीर पैगम्बर लारा दे के गए बहश्ती मिलण हूरी, हूर ज़हूर ना कोई वखाइंदा। (२६ पोह २०१६ बि)

हं : हँ जीव सो भगवाना। (१४ मध्घर २०१० बि)
कलिजुग अन्तम एह की गिआ हो, होका दे के रहे सुणाईआ। आपणा नाम रक्ख के सो, हँ ब्रह्म लिआ मिलाईआ। (१६ हाढ़ २०२१ बि)
गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक्क समझावांगा। बोध अगाधा बण के पंडत, बुद्धि तों परे भेव खुलावांगा। (१५ सावण श सं ८)

हँस : गुरसिख उत्तम हँस, सोहँ मोती चोग चुगावे। (१२ विसाख २००८ बि)
वड हँस परमहँस गुरसिख लिखाया। (१७ सावण २००८ बि)
हँस बणो काग, सोहँ ढोला गाईआ। जन्म कर्म दा धोवो दाग़, दुरमत मैल रहण कोई ना पाईआ। (२२ जेठ २०२१ बि)
पढ़दे पढ़दे होए हँस कां, बुद्धि काग वाग कुरलाईआ। बिन कलमिउँ बिन शरअ बिन ज़बा खांदे सूर गाँ, छुरी हक़ हलाल हत्थ ना किसे उठाईआ। (७ सावण २०२१ बि)

हरि : ना हरि नीला ना हरि काला ना हरि पीला ना हरि लाल गुलाला। जोत सरूपी

इक्को जगे जोत गुरसिख करो हीला। हरि बणया आप दलाला। ना कोई वरन ना कोई गोत, दुरमत मैल रिहा धोत, विच्च मात धर जोत, साचा हरि दीन दयाला। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख तेरी आत्म वास रखाए, ना वसे किसे मन्दर ना धर्मसाला। (७ चेत २०११ बि०

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई साचा हाली साचा पाली, गुरमुखां करे आप रखवाली, ना वसे किसे तीर्थ ना वसे किसे तट्ट। ना कोई तीर्थ ना कोई तट्ट। हरि जी वसे घट घट। गुरमुख एका झाती मार, आपणी काया मट। प्रभ अबिनाशी खोल्ही बैठा ताकी, अग्गे जोत जगे लट लट। जोती जोत सरूप हरि, ... (७ चेत २०११ बि)

हरिभजन : हरिभजन हरि का ध्यान। होए मेल भगत भगवान। (७ जेठ २०१० बि)

हरिभजन हरि होए सहाई। हरिभजन हरि देवे वड्डिआई। हरिभजन गुरमुख दात प्रभ दर ते पाई। हरिभजन वड करामात, आत्म तृखा दे बुझाई। हरि भजन इक्क रखाए नात, आत्म जोती आप जगाई। हरिभजन गुरसिखां मिटाए अन्धेरी रात, दिवस रैण रहे रसना गाई। हरिभजन अन्तम पुच्छे गुरसिखां बात, वेले अन्त होए सहाई। हरिभजन अंदर वेख मार झात, सच वस्त तेरे घर टिकाई। हरिभजन मिटाए ज़ात पात, भरम भुलेखा रहे ना राई। हरिभजन देवे दात, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे दात आप रघुराई।

हरिभजन कल साचा जोग। हरिभजन रस साचा भोग। हरिभजन गुरमुखां मेटे सर्ब वियोग। हरिभजन रसना जप मिटाए हउमे रोग। हरिभजन सोहँ शब्द चुगाए चोग। हरिभजन हरि देवे दरस अमोघ। हरिभजन हरि आप मिटाए चिन्ता सोग। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म देवे धोग।

हरिभजन आत्म उजिआरी। हरिभजन देवे गिरधारी। हरिभजन गुरमुख साचे दुरमत उतारी। हरिभजन हरि देवे दात शब्द भण्डारी। हरिभगत साचा राज सच्ची सिकदारी। हरिभजन चरन लगाए सच्चा दरबारी। हरिचरन फिरन आए वड हँकारी। हरिचरन गुरसिख साचे आत्म धारी। हरिचरन आत्म जोत जगाए अगम्म अपारी। हरिभजन प्रगट होए आप निरँकारी। हरिचरन वेखे विगसे करे विचारी। हरिभजन काया कोट किला उसारी। हरिभजन सोहँ देवे सच अटारी। हरिभजन विच्च मात ना होए खवारी। हरिभजन साचे धाम आप बहाए बनवारी। हरिभजन एका रंग रंगे अपारी। हरिभजन गुरमुख खुल्हाए दसम दवारी। हरिभजन एका जोत प्रभ इक्क उधारी। हरिभजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंचम जेठ गुरमुखां नाम अपारी।

हरिभजन हरि का ध्यान। होए मेल भगत भगवान। हरिभजन चरन धूढ़ इशनान। हरिभजन आत्म सहिँसे सर्ब मिट जाण। हरिभजन एका शब्द उपजावे कान। हरिभजन साची धुन देवे महान। हरिभजन आत्म मारे साचा बाण। हरिभजन साचा देवे शब्द ज्ञान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे साचा दान।

हरिभजन वड राजन राज। हरिभजन प्रभ सोहँ बंन्हाए गुरसिखां सिर ताज। हरिभजन आप लगाए घर दसवें साची आवाज़। हरिभजन गुरसिख चढ़ाए साचे जहाज। हरिभजन शब्द सरूपी उडावे बाज। हरिभजन गुरसिख सवारे आपे काज। हरिभजन आप मिटाए जगत

तृष्ना तृखा डांज। हरिभजन महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां देवे चरन रखाए साची सांझ।

हरिभजन सच धन माल। रसना जप ना होए कंगाल। हरिभजन आत्म होए लालो लाल। हरिभजन साचा दीपक जोत जगे मिसाल । हरिभजन सच शब्द सुरत संभाल। हरिभजन भज्जण ना मानस जवानी डाल। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन प्रीती निभे नाल। हरिभजन हरि हरि दा वास। हरिभजन आप दवाए गुरसिखां स्वास स्वास। हरिभजन मात गर्भ होए सहाई, आत्म रक्खे वास। हरिभजन माया ममता करे नास। हरिभजन शब्द उडारी आप लगाए मात पताल अकाश। हरिभजन गुरमुख कराए सच घर वास। हरिभजन गुरमुखां करे बन्द खलास। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो जन होए चरन दास।

हरिभजन शब्द घनघोर। हरिभजन हरि शब्द चुकाए मोर तोर। हरिभजन गुरसिख उडाए पतंग डोर। हरिभजन हरि दिवस रैण रखाए, साची अनहद साची धुन उपजाए, सुन मुन आप खुल्ह़ाए, पैंदी रहे सदा घनघोर। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बन्न्हे पंजे चोर।

पंजे चोर वसण तन। हरिभजन ना लग्गण देवे आत्म संन्हू। हरिभजन प्रभ अबिनाशी आप सुणाए कन्न। हरिभजन लग्गण देवे ना झूठा डंन। हरिभजन अन्तम बेड़ा देवे बंन्हू। हरिभजन देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां कराए धन्न धन्न।

हरिभजन शब्द इशारा। हरिभजन आप खुल्ह़ाए दसम दवारा। आप वखाए पार किनारा। आप कराए जोत अकारा। आप आपणा कीआ पसारा। सच शब्द सच्ची धुनकारा। अनहद वज्जे पवण हुलारा। आवण गवण बूझ बुझारा। अमृत मेघ बरसे सवण, उलट कँवल चले फुहारा। गुरमुख आत्म होई बवल, प्रभ अबिनाशी पावे सारा। होए प्रकाश उपर धवल, पंचम जेठ कीआ अकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां माण दवाए, साची भिच्छया झोली पाए, मंगया जिस दवार। (७ जेठ २०१० बि)

हरि जोत : सृष्ट सारी नूं टुंब उठाया। मदि मास दा होए सफाया। रहे ना जीव जिस रसना लाया। ईशर ब्रह्म जीव ब्रह्म रूप उपाया। कलू काल ने पड़दा पाया। जिस ने ब्रह्म दा नाम भुलाया। मदि मास जिन रसनी लवाया। कूकर सूकर माणस रूप बणाया। ऐसी सतिगुर दे सज़ाया। गुर चरनां तों परे हटाया। परेत जून उन्हां नूं पाया। ईशर जीव जिस जीव ने खाया। लक्ख चुरासी चक्कर लवाया। सर्ब थाएं प्रभ सदा समाया। भोला जीव ना जाणे मेरी माया। हरिजू हर माहि समाया। हरि जोत सभ जीव जवाया। बिन जोत दे स्वास ना आया। ईशर जीव माहि समाया। सोहँ शब्द सर्ब सुखदाया । महाराज शेर सिँघ सच मंत्र दृढ़ाया। (५ चेत २००७ बि)

जोत जोत जोत, हरि जोत जगाई। जोत जोत जोत, हरि खेल रचाई । जोत जोत जोत, हरि मेल मिलाई। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पहली माघ विच्च मात जोत प्रगटाई।

जोत जोत जोत प्रभ जोत प्रगटा के। जोत जोत जोत, प्रभ गुरसिख दीपक जोत जगा

के। जोत जोत जोत, सोहँ साचा मोख रखा के। जोत जोत जोत, प्रभ रोग सोग जाए मिटा के। जोत जोत जोत, प्रभ सभ जाए भेख गवा के। जोत जोत जोत, प्रभ गुरसिखां दरस अमोघ दिखा के। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणी जाए जोत जगा के।

जोत जोत जोत, हरि जोत पसारा। जोत जोत जोत, हरि जोत अधारा । जोत जोत जोत, लक्ख चुरासी विच्च पसारा। जोत जोत जोत, हरि आप दिसाए साचा घर बाहरा। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा।

जोत जोत जोत निरँकारी। जोत जोत जोत, हरि एका जोत तीन लोक पसारी। जोत जोत जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भरम भुलेखा आप निवारी।

जोत जोत जोत, जगे जगत जोती। गुरसिख बणाए गुर साचा माणक मोती। सृष्ट सबाई रही सोती। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप कराए चार वरन एका गोती। (१ माघ २००६ बि)

हरि जोत हरि पसार है। हरि जोत सृष्ट सबाई हरि रिहा पसर पसार है। हरि जोत इक्क दिसे अनेक है। हरि जोत एका इक्को टेक है। हरि जोत इक्क बुद्ध करे बबेक है। हरि जोत इक्क गुरमुख काया लगण ना देवे सेक, रक्खे ठंडी छाउँ है। हरि जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सृष्ट सबाई वेखे, लिखे साचे लेख है। हरि जोत हरि लेख लिखारी। हरि जोत हरि सर्ब पसारी। हरि जोत वेखे विगसे करे विचारी। हरि जोत लक्ख चुरासी जीवां जंतां साधां सन्तां पावे सारी। हरि जोत हरि मात धर, करे खेल अपर अपारी। हरि जोत दिसे साचे घर आत्म दर, बाहर लभ्भण जीव गवारी। हरि जोत इक्क नर हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अठ्ठे पहर अंदर वसे गुरसिख तेरी काया महल्ल अटारी। (५ मध्घर २०१० बि)

हरि जोत इक्क अकार है। हरि जोत सृष्ट सबाई पसर पसार है । हरि जोत तिन्नां लोकां पावे सार है। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लोकमात आई जामा धार है। हरि जोत हरि गुण जाण। हरि जोत हरि रंग पछाण। हरि जोत विच्च मात सच निशान। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम कल मात प्रगटाए वड बली बलवान। हरि जोत हरि निरँकार। हरि जोत विच्च मात जोत सरूपी लिआ अवतार। हरि जोत घर साचे वसे, करे सच अकार। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख विरला कलिजुग पावे सार।

हरि जोत हरि निराली। हरि जोत चारों कुण्ट दिसे, कोई दर घर सर ना खाली। हरि जोत नर नरायण, सृष्ट सबाई साचा माली । हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात प्रगटाई कलिजुग तेरी अन्त कराए चाली। हरि जोत हरि का वास। हरि जोत सरूपी विच्च मात पावे रास। हरि जोत अन्तम अन्त कल बेमुखां करे नास। हरि जोत गुरमुख सन्त जनां होई रहे दासन दास। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग वेला अन्तम आया, सृष्ट सबाई आप कराए नास।

हरि जोत हरि की धार। हरि जोत गुरमुख साचे कर विचार। हरि जोत बेमुखां रोड़े वैहन्दी धार। हरि जोत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात जगाए करे रुशनाए, कलिजुग भुल्ले जीव गवार।

हरि जोत खेल अव्वलड़ा। हरि जोत हरि एका एक वसे धाम इकल्लड़ा। हरि जोत गुरमुख साचे सन्त जनां, आप फड़ाए साचा पलड़ा। हरि जोत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे तेरे आत्म दर दवार अग्गे खलड़ा।

हरि जोत हरि निराधार। हरि जोत करे कराए साची कार। हरि जोत मात आए जाए वारो वार। हरि जोत जोत सरूपी, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक कल जामा पाए नाम रखाए कलगीधर अवतार। (६ चेत २०११ बि)

हरि जोत जगत प्रकाश। वरन गोत एका रास। हरि जोत हरि भगत जगत वास। हरि जोत शब्द चलाए स्वास स्वास। हरि जोत गुरमुख वड्डिआए, दया कमाए मात पताल अकाश। हरि जोत सद डगमगाए, आदि अन्त ना जाए विनास। हरि जोत प्रभ लोकमात धराए, वेख वखाणे दह दिश दस मास। (२१ पोह २०११ बि)

हरि जोती नूर नूर उजाला, उजल रूप दरसाईआ। हरि जोती नूर गोबिन्द गोपाला, गुर सतिगुर धार चलाईआ। हरि जोती नूर सचखण्ड सच्ची धर्मसाला, धुर मन्दर इक्क वडयाईआ। हरि जोती नूर खेल निराला, निरगुण निरवैर आप कराईआ। हरि जोती नूर शाह सुल्ताना, राज राजान बेपरवाहीआ। हरि जोती नूर हुक्मराना, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। हरि जोती नूर सुत परवाना, शब्दी शब्द शब्द समझाईआ। हरि जोती नूर विष्न ब्रह्मा शिव उपजाना, उपजत आपणे विच्चों प्रगटाईआ। हरि जोती नूर दो जहानां, निराकार इक्क जणाईआ। हरि जोती नूर ब्रह्मण्ड खण्ड खेल महानां, पुरख अकाल रचन रचाईआ। हरि जोती नूर लक्ख चुरासी देवे दाना, दाता दान आप वरताईआ। हरि जोती नूर गुर अवतार पहरे बाणा, सरगुण वज्जे तत्त वधाईआ। हरि जोती नूर नबी पैगम्बर करे प्रधाना, साचा जलवा इक्क दरसाईआ। हरि जोती नूर शब्द अनाद सुणाए गाणा, रागी आपणा राग अलाईआ। हरि जोती नूर जुग चौकड़ी देवे पीणा खाणा, विष्नूं विश्व धार समझाईआ। हरि जोती नूर ब्रह्म लेखा वंड वंडाना, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। हरि जोती नूर खड़ग खण्डा चमकाना, डंका इक्को इक्क वजाईआ। हरि जोती नूर जीवण जुगत दए जीव जहानां, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत सर्ब घट थाईंआ। हरि जोती नूर सर्ब वयापी, घट घट डेरा लाईआ। हरि जोती नूर वड परतापी, परम पुरख बेपरवाहीआ। हरि जोती नूर सृष्ट थापण थापी, बंधन आपणा आपे पाईआ। हरि जोती नूर नाम निधान जणाए जापी, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। हरि जोती नूर अजप्पा जाप होए पाठी, पुस्तक आपणा नाम बणाईआ। हरि जोती नूर असल नकल दी करे कापी, वेद पुरान शास्त्र सिमरत लोकमात दए वडयाईआ। हरि जोती नूर जुग चौकड़ी चुकाए लहणा बाकी, देणा आपणे हत्थ रखवाईआ। हरि जोती नूर आदि जुगादि सज्जण साकी, साहिब संग रखवाईआ। हरि जोती नूर भाग लगाए माटी खाकी, तन मन्दर सोभा पाईआ। हरि जोती नूर लहणा देणा वेखे आन बाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूरो नूर नूर धराईआ।

हरि जोती नूर सच प्रकाश, प्रकाशवान आप जणाइंदा। हरि जोती नूर सर्ब घट वास, लक्ख चुरासी डेरा लाइंदा। हरि जोती नूर जुगा जुगन्तर दासी दास, सेवक आपणा रूप वटाइंदा। हरि जोती नूर खेले खेल पृथ्मी आकाश, आकाश आकाशां आपणा पर्दा लाहिंदा। हरि जोती नूर मण्डल पावे रास, बेपरवाह नाच नचाइंदा । हरि जोती नूर सरगुण वसे साथ, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। हरि जोती नूर अनाथां नाथ, नाथ अनाथी फेरा पाइंदा। हरि जोती नूर लेखा चुकाए तिलक ललाट, ललाटी आपणा भेव चुकाइंदा। हरि जोती नूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे विच्चों प्रगटाइंदा।

हरि जोती नूर नूर नुराना, नूरी इक्को नज़री आईआ। हरि जोती नूर श्री भगवाना, भगवन आपणा रंग वखाईआ। हरि जोती नूर दो जहानां, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। हरि जोती नूर सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग पहरे बाणा, गुर अवतार हुक्म मनाईआ। हरि जोती नूर घट घट अन्तरयामा, लक्ख चुरासी रिहा समाईआ। हरि जोती नूर नाम निधान शब्द अगम्म मारे तीर निशाना, अणयाला हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत नूर समाईआ।

हरि जोती नूर भगत भगवन्त, भगवन आपणी कारे लाईआ। हरि जोती नूर जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हरि जोती नूर आत्म परमात्म मेल मिलावा नार कन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। हरि जोती नूर आदि जुगादि साची संगत, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। हरि जोती नूर लेखा जाणे जेरज अंडज, अंडज जेरज आपणे विच्च छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नूर उजाला इक्क जणाईआ।

हरि जोती नूर सदा उजागर, जुग जुग वेस वटाइंदा। हरि जोती नूर सच्चा सौदागर, बण वणजारा हट्ट चलाइंदा। हरि जोती नूर करीम कादर, कुदरत कादर खेल वखाइंदा। हरि जोती नूर राग दाऊद दादर, तार सतार ना कोई हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को नूर नूर रुशनाइंदा।

जोती नूर नूरी धार, सो साहिब आप प्रगटाईआ। कलिजुग अन्त खेल अपार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण जोती कर पसार, निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण भगत वछल गिरधार, निरगुण सन्त सति सरूप जणाईआ। निरगुण गुरमुख खोल्ह कवाड़, गुरसिखां इक्को बूझ बुझाईआ। निरगुण जोती सर्ब पसार, पसर पसारी वड वडयाईआ। कल कलकी लै अवतार, निहकलंका डंक वजाईआ। निरगुण जोती जोत निमस्कार, जोती जाता सीस झुकाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच जोती जोत पसार, बिन जोती जोत करे रुशनाईआ। (१६ जेठ २०२० बि)

जोत कहे मैं निर्मल जोती, रूप रंग रेख नज़र ना आईआ। आदि जुगादि निक्की नढ्ढी छोटी, घर साचे सोभा पाईआ। सभ दी चढ़ के बैठी चोटी, मुख आपणा आप छुपाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, भालिआं हत्थ किसे ना आईआ। काया मन्दर अंदर घर घर बणाई आपणी कोठी, गृह डेरा इक्क वखाईआ। बिन आलस निंदरा रही सोती, नैण अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। मेरी सिफ्त अंदर लग्गे रहे शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान पोथी, पुस्तक आपणा राग अलाईआ। मेरे घर कोई ना पहुंची, दूर दुराडे ढोला गाईआ। सारे

कहण घाटी औखी, औझड़ राह रहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा नूर इक्क जणाईआ।

जोत कहे मैं जोती अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। मेरा भेव हत्थ ना आया किसे कम्म, आदि अन्त सार किसे ना आईआ। सारे कहन्दे गए धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वडयाईआ। सेवा करदे रहे सूरज चन्न, जुग चौकड़ी नूर रुशनाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर गए मन्न, मनसा इक्को ध्यान लगाईआ। लक्ख चुरासी सिफ्त सुणदी रही कन्न, सरवण इक्क ध्यान रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी खेल इक्क रचाईआ। जोत कहे मेरी जोत निराली, घर साचे सोभा पाईआ। गगन मण्डल मेरी निक्की थाली, इशारयां उत्ते नचाईआ। सति सरूप मेरा नाउँ अकाली, अकल कला अखवाईआ। पत शाख़ ना कोई डाली, जड़ तणा ना कोई बणाईआ। छप्पर छन्न ना कोई छुहा ली, चार दीवार ना कोई वखाईआ। इक्को वसां सचखण्ड सच्ची धर्मसाली, धर्म दवारे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत आप बणाईआ। जोत कहे मेरी निरगुण जोती, घर साचे सोभा पाईआ। खेलां खेल लोक परलोकी, दो जहान वेख वखाईआ। नाम जणावां शब्द सलोकी, गुर अवतार कर पढ़ाईआ। लक्ख चुरासी पद देवां मोखी, मुफ्त आपणा मेल मिलाईआ । ब्रह्मण्ड खण्ड रखावां ओटी, ओट इक्को इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा खेल इक्क वखाईआ।

जोत कहे मेरा जोती रंग, ज़ात नज़र किसे ना आईआ। साहिब सज्जण सुहाए सेज पलँघ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। अन्तर देवे इक्क अनन्द, बाहर सार कोई ना आईआ। सद अतीता वसे संग, प्रीत इक्को इक्क लगाईआ। बन्दीख़ाना ना कोई बन्द, बंधन अवर ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत जोती दए वडयाईआ। जोत कहे मेरी जोती धार, आदि निरञ्जण वंड वंडाईआ। आदि निरञ्जण कहे मेरा खेल न्यार, जोत निरञ्जण सेवा लाईआ। जोत निरञ्जण कहे मेरा घट घट पसार, लक्ख चुरासी सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी कहे जोती नूर उजिआर, घर घर करे रुशनाईआ। घर घर कहे किरपा करे आप करतार, हरि करता बेपरवाहीआ। बेपरवाह कहे मेरा खेल अपार, ख़ालक रिहा जणाईआ। ख़ालक कहे ख़लक गुलज़ार, लोकमात गुलशन इक्क लगाईआ। गुलशन कहे मेरी फूल बहार, गुरमुख बूटा इक्क उपजाईआ। गुरमुख कहे मेरी भवर गुंजार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत जोत जणाईआ।

जोत कहे मेरा जोत पसारा, जोती जोत जोत चमकाईआ। आदि अन्त ना पारावारा, मध आपणा खेल खलाईआ। साध सन्त निउँ निउँ करन निमस्कारा, दर बैठण सीस झुकाईआ। भगत भगवान बोल जैकारा, जै जैकार रहे जणाईआ। गुरमुख गुर गुर मंग दवारा, दर दरवेश फेरा पाईआ। गुरसिख वेखण वारो वारा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला निरगुण जोत होए उजिआरा, जगत अन्धेरा अन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव अभेदा दस्स के गए संसारा, सृष्ट सबाई मात जणाईआ। कलिजुग अन्त निहकलंक लए अवतारा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत जोत पसारा, ज़ात पात ना कोई रखवाईआ। एको ओट हरि निरँकारा, चोट साचे नाम लगाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां जेरज

अंडां पावे सारा, महांसारथी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन जोती जोत करे रुशनाईआ।

बिन जोती जोत करे प्रकाश, कल कलकी फेरा पाइंदा। सभ दी पूरी करे आस, जुग चौकड़ी जो जन ध्यान लगाइंदा। पीर पैगम्बरां गुर अवतारां रक्खे पास, पुशत आपणा हत्थ टिकाइंदा। भगत भगवान होण ना देवे उदास, जगत उदासी दूर कराइंदा। करे निवास पवण स्वास, साह साह आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत रंग इक्क वरवाइंदा।

जोत रंग रंग अमोला, अमल विच्च किसे ना आईआ। ना काया ना दिसे चोला, चोली तन ना कोई हंडाईआ। ना कहार कोई चुके डोला, पान्धी पन्ध ना कोई मुकाईआ। ना पर्दा ना कोई उहला, मुख घुंगट ना कोई रखवाईआ। ना शब्द ना कोई ढोला, राग नाद ना कोई जणाईआ। सौहरे पेईए ना कोई वचोला, लागीं नज़र कोई ना आईआ। डूम नाई ना पाए कोई रौला, उच्ची कूक ना कोई सुणाईआ। करे खेल प्रभ साचा मौला, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। भगत भगवान गाए ढोला, ढोलक छैणा ना कोई वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका जोत दए वडयाईआ।

जोत जोती वड प्यार, सो साहिब आप जणाइंदा। जोती कहे मेरा लक्ख चुरासी अधार, जोत कहे मेरा खेल नज़र किसे ना आइंदा। जोती कहे मेरा आत्म परमात्म नाता विच्च संसार, जोत कहे मेरा अथाह नूर दो जहानां राह चलाइंदा। जोती कहे मेरा काया मन्दर अंदर इक्क दवार, दीवा बाती नज़र कोई ना आइंदा। जोत कहे ब्रह्मण्ड खण्ड आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण नूर मेरा पसार, बेअन्त अथाह आपणा रंग वरवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा।

जोती कहे मैं भगतां दासी, जुग जुग साची सेव कमाईआ। जोत कहे मैं पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती कहे मैं सज्जण साथी, गुरमुखां संग निभाईआ। जोत कहे मैं पुरख समराथी, जोती कहे मैं घर घर देवां दाती, हरिजन साचे मात जगाईआ। जोत कहे मेरी आदि जुगादि रहे इक्क प्रभाती, रैण रूप ना कोई वटाईआ। जोती कहे मैं गुरमुखां सच बंधावां नाती, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोत कहे मेरा खेल इकांती, इक्क इकल्ला आपणी कार कमाईआ। जोती कहे मैं भगत बणावां इक्क जमाती, ज़ामन आपणा आप कराईआ। जोत कहे मैं करां बन्द खुलासी, जो तेरा संग निभाईआ। जोती कहे कलिजुग अन्तम वेख हरि रघनाथी, रघपत आपणा फेरा पाईआ। साचे भगत विच्च तेरे जगत तेरा नाउँ धिआवण स्वास स्वासी, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण हो के बण साकी, खोलू मेरी ताकी, ताकतवर आपणी ताकत गुरमुखां झोली पाईआ। (१६ जेठ २०२० बि) जोत निरञ्जण निक्की बच्ची, लक्ख चुरासी अंदर टिकाईआ। प्रेम प्यार अंदर रत्ती, रत्ती रत्त ना कोई रखवाईआ। करे प्रकाश बिन तेल बत्ती, दीपक इक्को इक्क जगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना ठंडी ना तत्ती, सद इक्को रंग समाईआ। नेत्र ध्यान लगाए कमलापती, पतिपरमेशवर राह तकाईआ। सच महल्ले बैठी रहे सती, दूजा नैण ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरञ्जण दए वडयाईआ।

जोत निरञ्जण निक्की बाली, बालक रूप सिखाईआ। काया मन्दर अंदर आप बहाली, घर घर विच्च घर बठाईआ। आत्म परमात्म करदी रहे दलाली, सच साची सेव कमाईआ। आपणे हत्थ वखाए खाली, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मैं छाप तेरी डाली, तेर नाल प्रभू महकाईआ । तूं धुरदरगाही माली, दरगाह साची सोभा पाईआ। तेरे दर सदा सवाली, इक्को मंग मंगाईआ। बिरहों विछोड़े होई बेहाली, बेहबल रोवे मारे धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कवण वेला करे संभाली, सम्बल आपणा चरन टिकाईआ।

जोत निरञ्जण निक्की नढ्ढी, नन्नी नन्नी सेवा लाईआ। आपणी धारो आपे कढ्ढी, मात पित ना कोई बणाईआ। हुक्मे अंदर सदा बध्धी, बण सेवक सेव कमाईआ। पंज तत्त अंदर मिली गद्दी, सिँघासण इक्को इक्क सहाईआ। कर प्रकाश बह के सजी, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। प्रभ मिलण नूं फिरे भज्जी, दह दिशा वेख वखाईआ। दरस कर अजे ना रज्जी, सति प्यास ना कोई मिटाईआ। मैं निउँ निउँ लागाँ पग्गी, प्रभ चरन पड़े सरनाईआ। मैं वसां डूंघी खड्डी, भवरी आपणा मुख छुपाईआ। ना पसली ना कोई हड्डी, तत्त रूप ना कोई प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। जोत निरञ्जण वड्ड नीकण नीकी, नर हरि नरायण आप बणाइंदा। पावे सार जीवण जी की, जीव जुगत आप जणाइंदा। लेखा जाणे साढ्ढे तिन्न हत्थ सिउँ सीआं की, सीआ धरनी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाइंदा । जोत निरञ्जण कहे मैं निक्की वड्ड बलवान, बल तेरे नाल मिलाईआ । तूं बणया मेरा काहन, मैं गोपी रूप जणाईआ। मेरा मेल होया नाल भगवान, भगवन रूप समाईआ। मेरा मन्दर सोहे मकान, घर साचे होए रुशनाईआ। मेरी आसा वड बलवान, निरासा रूप ना कोई रखवाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर जिस वेले मिले आण, मेरा दुःख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेरा संग रखवाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मैं रक्खी उडीक, नित तेरा ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि भुल्ली ना तेरी रीत, दूजा कन्त ना कोई हंडाईआ। नाता छड्ड के मन्दर मसीत, जन भगतां अंदर सोभा पाईआ। आ मिल मेरे जगदीस, जगदीसर तेरा ध्यान लगाईआ। तेरा कौल बीस बीस, इकरार नेड़े रिहा आईआ। मैं वेखां छत्तर झुलदा सीस, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। तेरा कलमा इक्क हदीस, तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मेरी रही ना बाली बुद्ध, बुद्ध आपणी रही जणाईआ । प्रभ तेरे मिलण दी आई सुध, दूजी सुध ना कोई रखवाईआ। सच प्रीती गई लुझ, आप आपणा मेट मिटाईआ। मेरा मुझे ना दिसे कुझ, जो दीसे सो तेरी झोली पाईआ। कोझी कमली आ के पुछ, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। मैं सजदा करां झुक, तेरे निउँ निउँ लागाँ पाईआ। अन्तम पैंडा जाए मुक्क, घर तेरे वज्जे वधाईआ। तूं अञ्जण लैणा चुक्क, मेहर नज़र उठाईआ। मेरी तृसना मिटे भुक्ख, सांतक सति सति कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर वखाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मैं ना नढी ना बाली, बल आपणा रही जणाईआ। तेरी खेल प्रभू निराली, बिन मेरे नज़र किसे ना आईआ। तेरे नाम दी रोशन करां मैं दीवाली,

घर घर दीपक इक्क जगाईआ। तेरा मन्दर सुहावां सच्ची धर्मसाली, काया बंक दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जोत निरञ्जण तेरा अंजण नेत्र नैणां पाईआ।

जोत निरञ्जण कर ध्यान, हरि करता आप समझाइंदा। तूं मेरी मैं तेरा भगवान, भगवन आपणा खेल खलाइंदा। कलिजुग अन्त करां परवान, आप आपणे खाते विच्च रखाइंदा। तेरा नूर भगत निशान, लोकमात आप झुलाइंदा। घर घर आ के देवां दान, दर दर आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा लेखे लाइंदा। जोत निरञ्जण कहे जद आवेंगा। श्री भगवान फेरा पावेंगा। जन भगत मात उठावेंगा। मेरा वेला वक्त सुहावेंगा। फ़क्त आपणा रंग रंगावेंगा। जगत नाता तोड़ तुड़ावेंगा। बिधाता इक्को इक्क अखवावेंगा। साका आपणा नाम बणावेंगा। फ़ाका विछोड़ा दुःख मिटावेंगा। ताका आपणे घर खुलावेंगा। आका इक्को नज़री आवेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मेल मिलावेंगा।

जोत निरञ्जण तेरा भगती मेला, भगवन दए वडयाईआ। सच मिलण दा आया वेला, सो साहिब रिहा मिलाईआ। लेखा चुके गुरू गुर चेला, गुर चेला आपणी धार वखाईआ। आदि निरञ्जण बण सुहेला, जोत निरञ्जण लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वछोड़ा रिहा मिटाईआ। कवण वेला वछोड़ा मिटाएंगा। आपणी जोती जोत मिलाएंगा। औखी घाटी पार कराएंगा। दूर वाटी नेड़ वखाएंगा। काया माटी मोह चुकाएंगा । रैण अन्धेरी राती पन्ध मुकाएंगा। अमृत बूंद स्वांती जाम प्याएंगा। इक्क इकांती नज़री आएंगा। बण साथी संग निभाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अबिनाशी अबिनाशी पद वखाएंगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद बल बल जासी, जिस बालया दीपक सो दीपक बलदा आपणे विच्च टिकाईआ।

मिटे रोग सिर दर्द, श्री भगवान दया कमाईआ। नज़र ना आए कोई मुरदा मर्द, मर्द मरदाना होए सहाईआ। दर दवार मनज़ूर अर्ज़, अजल नेड़ ना आवे राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां करे पूरा फ़र्ज़, फ़ज़ल रहमत रैहम कमाईआ। (१६ जेठ २०२० बि)

जोत निरञ्जण कहे मैं निक्की कन्या, सो तेरा ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ शाहो मन्नया, शहनशाह होए सहाईआ। देवे नाम सच्चा धन धनया, दुःख भुक्ख रहे ना राईआ। कूड़ कुड़यारा भाण्डा भंनया, भर्म गढ़ तुड़ाईआ। करे वसेरा विच्च छप्पर छंनया, मन्दर महल्ल तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सिर हत्थ रक्खे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। बाली बुध करे परवान, सुध आपणी आप जणाइंदा। हरि संगत मेला विच्च जहान, दर रंगत इक्क रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरख कीमत करता आपणे घर पाइंदा। (१६ जेठ २०२० बि)

जोत निरञ्जण कहे मेरे भाग मथन, मिथ्या दिसे लोकाईआ। मिल्या मेल श्री भगवन, भावना मेरी पूर कराईआ। दस्तगीर फड़ाया दामन, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। आदि निरञ्जण बणया ज़ामन, साची ज़ामनी आप दवाईया। कर प्रकाश आमणो सामण, समां सुहञ्जणा

दए सुहाईआ । पूरा करे मेरा कामन, आसा तृसना रहण ना पाईआ। ब्रह्म भेव ना पाया ब्राह्मण, ब्राह्मणी सार कोई ना आईआ। गुरमुख साचा नहावण, प्रभ चरन धूढ़ सरनाईआ। नाम इक्को इक्क ध्यावण, बेपरवाह ध्यान लगाईआ। राग इक्को इक्क सुणावण, सोहला सतिगुर अलाईआ। घर चल के आवे रामन, राम रामा रूप वटाईआ। जिस दया कमाई प्रलाद भेव चुकाया अगनी थामन, तपश तत्त रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पूरी आस कराईआ।

जोत निरञ्जण कहे मोहे चाउ घनेरा, हरि घनया नज़री आईआ। गृह मन्दर लाया आपणा डेरा, घर साचे सोभा पाईआ। साची नगरी वस्सया खेड़ा, गोकल बिन्दराबन, नैण शरमाईआ। सीस ताज जगदीस फेरा, फ़िरका सभ दा रिहा बदलाईआ। कूड़ी क्रिया चुकाए झेड़ा, झगड़ा कोई रहण ना पाईआ। गुरमुख कहे मेरा मेरा, मैं मेरी विच्चों गवाईआ। निरगुण नज़री आए शेरा, सिँघ आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरञ्जण सदा सहाईआ।

जोत निरञ्जण कहे प्रभ मिल्या माही, महल्ल अट्टल दया कमाईआ । पान्धी बणया निरगुण राही, निरवैर आपणा राह तकाईआ। कूड़ी बदलण आया शाही, शहनशाह इक्को हुक्म वरताईआ। पंज तत्त कट्टण आया फाही, जन भगतां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरञ्जण वेख वखाईआ ।

जोत निरञ्जण कहे मेरी मनसा पूर, माणस रूप मिले वडयाईआ। मानुख दिसे हाज़र हज़ूर, घर साचा बेपरवाहीआ। माणस तेरे चरन होवे मशकूर, मुशकल नज़र कोई ना आईआ। दे दरस साहिब ज़रूर, ज़ाहर आपणा रूप दरसाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। मेरा बख्श अगला पिछला कसूर, कसम खा के वास्ता पाईआ। माण ताण ना रिहा ग़रूर, गुरबत रूप ना कोई वटाईआ। कलिजुग अन्त होई मजबूर, जोत निरञ्जण दए दुहाईआ। बिन तेरे नाम सच ना आए कोई सरूर, कूड़ा नशा संग ना कोई निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ।

जोत निरञ्जण कहे घर आओ ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। कलिजुग वेख्या डूंघा सागर, तरयां सार कोई ना पाईआ। बिन तेरी किरपा कर्म होए ना मात उजागर, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। सच मिले ना हट्ट सौदागर, वस्त हक़ ना कोई वखाईआ । किरपा कर करीम कादर, बण कातल क्यों छुरी हत्थ चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी सच सरनाईआ। जोत निरञ्जण कहे सरन दे, सरनगत तेरी सरनाईआ । आत्म परमात्म लगा नेंह, लग्गी प्रीती तोड़ निभाईआ। अंमिउँ रस अमृत बरस मेंह, मेघला इक्को धार वखाईआ। काया माटी दिसे खेह, अन्त संग कोई ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म आपणे नाल मिलाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मैं तेरी आत्म, उत्तम ज़ात रखाईआ। तेरा नूर जलवा वेखां बातन, बसत्र आपणे सोभा पाईआ। तेरा लेखा चुक्के मकतूल कातल, कतलगाह ना कोई वखाईआ। घर साचे बण आदल, अदालत आपणे नाम लगाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया अन्धेरा बादल, चारों कुण्ट रिहा छाईआ। जीव जंत होया पागल, तेरी सार किसे ना पाईआ। सभ ते वही

होवे नाज़ल, लेखा सभ नूं रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जोत निरञ्जण कहे प्रभ आ वड़ खेड़े, खिड़की तेरे नाम खुल्हाईआ। साचे भगत ला के बैठे डेरे, दर आपणा मात तजाईआ। डुब्बदे पार कर बेड़े, बेड़ी आपणे नाउँ तराईआ। कूड़ी क्रिया रहण ना झेड़े, झगड़े सारे दे मुकाईआ। गुरमुख करदे तेरे तेरे, तेरी इक्को ओट रखाईआ। तेरा नाउँ सिँघ शेरे, शरअ आपणी दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

जोत निरञ्जण रक्ख आस, आसावंद सच जणाइंदा। तेरी पूरी करां ख़ाहश, ख़ालस तेरा रूप प्रगटाइंदा। बणां सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सभ नूं दस्सां इक्को पाठ, सोहँ मंत्र नाम पढ़ाइंदा। घर मेला कमलापात, कँवल नैण दरस वखाइंदा । निरगुण हो के दए दात, निरगुण झोली आप भराइंदा। नेड़े हो के सुण बात, श्री भगवान आप समझाइंदा। कलिजुग रैण मिटे अन्धेरी रात, रुत्त तेरे नाल मिलाइंदा। भगत भगवान सज्जण साक, साचा संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आकाश आकाशां विच्चों जोत निरञ्जण तेरा प्रकाश लेखे लाइंदा। (१६ जेठ २०२० बि)

जोत निरञ्जण कहे मेरा धाम न्यारा, घाड़त श्री भगवान बणाईआ । थथवा ना कोई ठठिआरा, घुमिआर नज़र कोई ना आईआ। ना कुठाली ना सुन्यारा, अगनी हवन ना कोई तपाईआ। बाढी ना कारीगरा, लोहार तरखाण ना घड़त घड़ाईआ। ना सेवक ना सेवादारा, इट्ट गारा ना कोई लगाईआ। ना छप्पर ना चार दीवारा, कुली कक्ख ना कोई वखाईआ। ना दीवा ना बाती तेल पा ना करे कोई उजिआरा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। ना साजण ना मीत मुरारा, ना उंगली कोई लगाईआ। ना दरस ना कोई दीदारा, देव नज़र कोई ना आईआ। ना सक्खी ना कोई भंडारा, ना झोली रिहा भराईआ। ना सूरज ना कोई सतारा, चन्द चांदना ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा घर इक्क वसाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मेरा घर अपार, अपर अपारी खेल खलाईआ। आर पार ना कोई किनार, वंङ्गण हत्थ किसे ना आईआ। नज़र ना आए विच्च संसार, दोए नैण ध्यान लगाईआ। सरगुण सके ना कोई उसार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सोहणी बणत बणाईआ।

आदि निरञ्जण कहे मेरा घाड़न घड़या, जोत निरञ्जण मिली वडयाईआ। सति सरूपी मन्दर बणया, सो पुरख निरञ्जण आप सुहाईआ। निरगुण हो के अंदर वड़या, घर साचे डेरा लाईआ । महल्ल अट्टल आपे खड़या, श्री भगवान बेपरवाहीआ। नाम निधाना आपणा पढ़या, नाउँ निरँकारा ढोला गाईआ। जोत नूर इक्क उजरया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे करे रुशनाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मेरा सोहे दरवाज़ा, श्री भगवान दया कमाईआ । घाड़त घड़े ग़रीब

निवाज़ा, घड़न भन्नणहार आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। अंदर वड़े वड राजन राजा, शहनशाह आपणा फेरा पाईआ। सच सुच्च दा रच के काजा, हरि करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे घर दए वडयाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मेरे घर दा झरोखा, साहिब सतिगुर आप खुल्ह़ाईआ। ओथ्थे जांदयां किसे ना मिले धोखा, सच साचा मेल मिलाईआ। साहिब सतिगुर दा इक्को नज़री आए कोठा, बिन छप्पर छन्न बणाईआ। पिछला रहे ना कोई रोसा, घर रुस्सयां लए मिलाईआ। प्रेम प्रीती लए बोसा, मुख आपणा मुख छुहाईआ। लै के बह जाए इक्क गोशा, कोना नज़र किसे ना आईआ। अमृत आत्म देवे साचा तोसा, तृसना भुक्ख मिटाईआ। महल्ल वखाए इक्क अनोखा, अनभव प्रकाश कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा घर दरसाईआ।

जोत निरञ्जण कहे घर पाओ दरस, हरि दरसी दरस कराइंदा। गृह वेखो अर्श फर्श , श्री भगवान आप जणाइंदा। निमाणी उत्ते करे तरस, बेपरानी परान आपणे नाल मिलाइंदा। साची धारा इक्को बरस, हवस हरस मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर फेरा पाइंदा।

जोत निरञ्जण कहे मेरा मन्दर हट्ट, सो साहिब आप सुहाईआ। निरगुण करवट लए वट्ट, आप आपणी लए अंगढ़ाईआ। पर्दा खुल्ह़े गुरमुख झट्ट, झटका आपणा नाम लगाईआ। नज़री आए पुरख समरथ, समरथ बेपरवाहीआ। सच दवारे मिल के पए हस्स, सोहँ हँसा राग सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर खुशी वखाईआ।

साचे मन्दर मिले खुशहाल, खुशी ग़मी ना कोई जणाइंदा। सतिगुर दाता दीन दयाल, दीनन आपणी खेल वखाइंदा। गुरमुख वेख सच्चे लाल, लालन आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर सोभा पाइंदा।

साचा मन्दर डूंघा घाट, सागर असथाह नज़र ना आईआ। बिन भगतां मुके किसे ना वाट, जुग चौकड़ी गेड़ भवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पा ना सके हाथ, वंझ मुहाणे सार कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मन्दर अंदर डेरा लाईआ।

साचा मन्दर सोहणा सुंदर, छैल छबील आप बणाईआ। भाग लगाए डूंघी कुंदर, काया कवरी फोल फुलाईआ। बन्द ताक खोल्ह़ जिंदर, जीवण जिंदगी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर बेमिसाल, आप वखाए दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। आओ मन्दर वेखो उच्चा, ऊँचो ऊँच वखाइंदा। आदि जुगादि रहे सुचा, हरि सूछम रूप वखाइंदा । जन भगतां उजल करे मुखा, मुख अमृत नाल धवाइंदा। जन्म कर्म ना रहे दुःखा, दुख दुखीआं मेट मिटाइंदा। प्रभ मिलण दा जो जन भुक्खा, तिस सतिगुर मेल मिलाइंदा। निरगुण धारों निरगुण उठा, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। ना माणस ना दिसे मनुखा, मनुष रूप ना कोई जणाइंदा। हरख सोग ना कोई गुस्सा, चिन्ता ग़म ना कोई जणाइंदा। भला माणस ना दिसे लुच्चा, रुखापन ना कोई वखाइंदा। ना पंजा ना कोई मुक्का, घुंन घसुंन ना कोई दृढ़ांइंदा । प्रेम प्रीती अंदर सदा झुका, दूजा भय

ना कोई प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दर सुहाए इक्को उच्चा, जिस घर बह के वेख वखाइंदा।

आओ मन्दर नेत्र पेखो, पेखत खुशी वखाईआ। साहिब सतिगुर साचा वेखो, वेखदयां दुःख जाईआ। अन्तर आत्म करो हेतो, हितकारी रिहा समझाईआ। दिवस रैण इक्को चेतो, चेतन्न भेव चुकाईआ। डूंघी कवरी पार भेतो, अभेव रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर दए वडयाईआ।

आओ मन्दर जिस ने चढ़ना, सो साहिब रिहा जणाईआ। आओ घर जिस ने वड़ना, भुल्लयां राहे पाईआ। आओ पल्लू जिस ने फड़ना, गुर शब्दी रिहा फड़ाईआ। आओ जींवदिआं जिस मरना, हरि संगत मेल मिलाईआ। आओ जिस आत्म परमात्म जिहा करना, दूई द्वैती बाहर कढ्ढाईआ। आओ जिन्हां सोहँ ढोला पढ़ना, सो सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दर दए वखाईआ।

आओ जिस मन्दर दरस पौणा, सो साहिब दया कमाईआ। आओ जिस ने श्री भगवान मनौणा, रुठड़े लए मिलाईआ। आओ जिस ने पिछला अगला पन्ध मुकौणा, लक्ख चुरासी नाता रिहा तुड़ाईआ। आओ जिस ने घर विच्च घर वसौणा, उजड़े खेड़े रिहा वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरञ्जण कर रुशनाईआ।

जोत निरञ्जण कहे मैं गई जीत, हार बैठी मुख भवाईआ। प्रभ मिल्या इक्क अनडीठ, अनडिठड़ी सेवा लाईआ। भगतां नाल लगाई प्रीत, प्रीती साची इक्क समझाईआ। मैं भुल गई मन्दर मसीत, गुरूदवार नज़र ना कोई रखाईआ। रल मिल गुरमुखां नाल गावां गीत, सोहँ ढोला साचा गाईआ। मेरा साहिब सदा अतीत, घर साचे वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क मन्दर करे रुशनाईआ।

साचे मन्दर होए रुशनाई, नूर नूराना आप धराइंदा। श्री भगवान करे कुड़माई, कुड़म कुड़मेटा इक्को नज़री आइंदा । इक्को घर धी जवाई, सौहरे पेईए वंड वंडाइंदा। इक्को मईआ नज़री आई, पिता पुरख खेल कराइंदा। इक्को ढोला लया गाई, साहिब सतिगुर राग अलाइंदा। जोत निरञ्जण कहे मेरी आसा पूर कराई, प्रभ तृसना मेट मिटाइंदा। गृह भीतर पाया माही, महिबूब इक्को नज़री आइंदा। घर सज्जण वज्जे शनवाई, दूल्हा दुलहन वेख वखाइंदा। लाड़ी लाड़े नाल परनाई , घर सखीआं मंगल राग अलाइंदा। जोत निरञ्जण फिरे चाईं चाईं, लाल गुलाला इक्को रंग चढ़ाइंदा। पुरख पुरखोतम पारब्रह्म प्रभ होया आप सहाई, सहायता आपणी विच्च रखाइंदा। रंगला चूड़ा वेख बांहीं, मैंहदी इक्को धार बंधाइंदा। कजला नैण कँवल मटकाई, नाम निधाना धार बंधाइंदा। सीस जगदीस मींढी इक्क गुंदाई, पट्टी आपणे रंग रंगाइंदा । कंघी प्रेम नाल वाही, सच दन्दासा हत्थ फड़ाइंदा। मुख घुंगट आप उठाई, पर्दा नक़ाब ना कोई जणाइंदा। जोत निरञ्जण जिस परनाई, सो पुरख वेख वखाइंदा। आओ वेखो गुरमुख भाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस वखाए आपणा घर, तिस आपणा मेल मिलाइंदा।

जोत निरञ्जण कहे पाया भगवान, भावी भय ना कोई जणाईआ। नज़री आया नौजवान, जोबन इक्को इक्क सुहाईआ। छैल छबीला मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। भगत कबीला विच्च जहान, कलिजुग अन्तम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत

धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत निरञ्जण कर परवान, आत्म परमात्म आपणा महमान बणाईआ। (१६ जेठ २०२० बि)

जोत : जोत जोत जोत निरँकार। जोत जोत जोत सर्ब आकार। जोत जोत जोत सरूप प्रभ गिरधार। जोत जोत जोत प्रभ, वसे विच्च संसार। जोत जोत जोत प्रभ, सर्ब जीआं दे अधार। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप लए अवतार। जोत जोत जोत प्रभ, जुगो जुग आवे वारो वार। जोत जोत जोत प्रभ, अनाथां नाथ सुणे सर्ब पुकार। जोत जोत जोत प्रभ, साची जोत धरे विच्च संसार। जोत जोत जोत प्रभ, नाथ त्रैलोकी कृष्न मुरार। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, निहकलंक अवतार।

जोत जोत जोत प्रभ, निहकलंक अवतारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग कीआ खेल अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग माया कीआ पसारा । जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग जीआं आत्म करे अन्धयारा। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां करे खुआरा। जोत जोत जोत प्रभ, अन्त पूर खपाए मूर्ख मुग्ध गवारा। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुख रसन लगाए मदिरा मास आहारा। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ शब्द बाण बेमुखां मारा। जोत जोत जोत प्रभ, अन्तकाल कलिजुग सोहँ शब्द चलाया खण्डा दो धारा। जोत जोत जोत प्रभ, प्रगट जोत निहकलंक गुरमुखां देवे नाम अधारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुखां आत्म करे उजिआरा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत निरँकारा। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा देवे देह हुलारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप समाए चलाए पवण दवारा। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां देवे नाम अधारा। जोत जोत जोत प्रभ, कल धरे जोत निहकलंक अवतारा। जोत जोत जोत प्रभ, कर दरस गुरसिख उतरे पारा। जोत जोत जोत महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सर्ब घट वरतारा।

जोत जोत जोत प्रभ जोत जगाए। जोत जोत जोत प्रभ, साचा नाद वजाए। जोत जोत जोत प्रभ, साची गाथ सुणाए। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साची नींह रखाए। जोत जोत जोत प्रभ, पहली माघ दो हज़ार अठ्ठ बिक्रमी भाग लगाए। जोत जोत जोत प्रभ, दर आई साध संगत माण दवाए। जोत जोत जोत प्रभ, दर घर साचे भिच्छया पाए। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म रंगण नाम चढ़ाए। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, वेले अन्त होए सहाए।

जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूपी दरस दिखाया। जोत जोत जोत प्रभ, प्रभ साचे मार्ग लाया। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा शब्द चलाया। जोत जोत जोत प्रभ, निमाणयां सिर हत्थ टिकाया। जोत जोत जोत प्रभ, शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश इक्क कराया। जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन इक्क जोत जगाया । जोत जोत जोत प्रभ, ऊँच नीच दा भेव चुकाया। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा राह चलाया। जोत जोत जोत प्रभ, राओ रंक इक्क कराया। जोत जोत जोत प्रभ, एका बंक दवार सुहाया । जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग झूठा खेल मिटाया। जोत जोत जोत प्रभ, वाहवा सतिजुग साचा लाया। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाया।

जोत जोत जोत प्रभ, कल जोत जगाई। जोत जोत जोत प्रभ, सृष्ट सबाई ख़ाक रुलाई।

जोत जोत जोत प्रभ, चार कुण्ट पए दुहाई।जोत जोत जोत प्रभ, राजे राणयां जाए पत गवाई। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां नक्क नॅथ पवाई। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग साची कार कराई। जोत जोत जोत प्रभ, बेमुखां देवे प्रभ सज़ाई। जोत जोत जोत प्रभ, दर दर मंगण भिख ना पाई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साची लिख्त लिखवाई।

जोत जोत जोत प्रभ, साचा लेख लिखवारी। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां देवे नाम अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ साचा शब्द देवे भण्डारी। जोत जोत जोत प्रभ, साध संगत जाए पैज सवारी। जोत जोत जोत प्रभ, दूतां दुष्टां जाए सँघारी। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग प्रगटे निहकलंक अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, रंकां देवे सच्ची सिकदारी। जोत जोत जोत प्रभ, राओ करे खुआरी। जोत जोत जोत प्रभ, एका दर उपजावे सच्चा दरबारी। जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन कराए दर भिखारी। जोत जोत जोत प्रभ, मातलोक विच्च छत्तर झुलारी। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा इक्क जोत निरँकारी। साची जोत प्रभ निरँकारा। जोत जोत जोत प्रभ गिरधारा। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूप वरते विच्च संसारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुखां देवे दरस अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरमुख साचे खोल़ देवे दसम दवारा। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म दीप करे उजिआरा । जोत जोत जोत प्रभ, रुण झुण उपजाए सची धुनकारा। जोत जोत जोत प्रभ, अनहद राग उपजाए अपारा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिख तेरा जन्म मरन सवारा। जोत जोत जोत प्रभ, कर दरस करे आत्म उजिआरा। जोत जोत जोत प्रभ, सिँघासण बैठे गिरधारा। जोत जोत जोत प्रभ, आत्म सहिँसा लाहे सारा। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जोत सरूप जोत आकारा।

जोत सरूप सदा निराहारी। जोत सरूप जगत अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, साची जोत मात अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, नाम धराया निहकलंक नरायण नर अवतारी। जोत जोत जोत प्रभ, खाणी बाणी पार उतारी। जोत जोत जोत प्रभ, साचा शब्द रसन आहारी। जोत जोत जोत प्रभ, चार वेदां करे खुआरी। जोत जोत जोत प्रभ, साची मात करे सिकदारी। जोत जोत जोत प्रभ, महाराज शेर सिँघ साची जोत धरे मुरारी।

जोत जोत जोत प्रभ, जोत जगाणा । जोत जोत जोत प्रभ, अन्तकाल कल मिटाए अञ्जील कुराना। जोत जोत जोत प्रभ, सोहँ शब्द चलाणा। जोत जोत जोत प्रभ, एका जोत जगे महाना। जोत जोत जोत प्रभ, कलिजुग भेख सर्ब मिटाणा। जोत जोत जोत प्रभ, दूसर कोई रहण ना पाणा। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिखां देवे दरस महाना। जोत जोत जोत प्रभ, गुरसिखां बख्शे चरन धूढ़ इशनाना। जोत जोत जोत प्रभ, निहकलंक आप भगवाना। जोत जोत जोत प्रभ, जोत सरूपी पहरया बाणा। जोत जोत जोत प्रभ, मातलोक धरे बिध नाना। जोत जोत जोत प्रभ, कल विरले गुरमुख जाणा। जोत जोत जोत प्रभ, जन भगतां होए मेहरवाना । जोत जोत जोत प्रभ, एका राग उपजाना । जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा मार्ग लाणा। जोत जोत जोत प्रभ, पहली माघ वक्त सुहाणा । जोत जोत जोत प्रभ, चार वरन इक्क कराना। जोत जोत जोत प्रभ, सतिजुग साचा राह चलाणा। जोत सरूपी जोत प्रभ, महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निमाणयां सिर हत्थ टिकाणा।

जोत जोत जोत प्रभ, सति जोत अधारी। जोत जोत जोत प्रभ, एका एकँकारी। जोत

जोत जोत प्रभ, सृष्ट सबाई करे पनिहारी। जोत जोत जोत प्रभ, साध संगत तेरी जाए पैज सवारी। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, जाओ चरन बलिहारी।(१ माघ २००८ बि)

जोती जोत सरूप हरि : *ऐ धरनीए, जोती जोत सरूप हरि, जोती आत्मा जोत परमात्मा जो सर्ब आत्मा दा परमात्मा है और जोत सरूप है। सरीर नहीं तन नहीं वज़ुद नहीं माटी ख़ाक नहीं, और उसे परमात्मा नूं, जोत सरूप नूं, निहकलंक किहा गिआ है। किसे इन्सान नूं निहकलंक नहीं किहा गिआ।*

हरि किरपा : हरि किरपा होवे बणे भगत, वडभागी भाग जगत अखवाईआ। हरि किरपा होवे बणे सच्चा सन्त, गुर साखी सच दृढ़ाईआ। हरि किरपा होवे मिले नाम मंत, अन्तर आत्म इक्क लिव लाईआ। हरि किरपा होवे चढ़े रंग बसन्त, तन माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। हरि किरपा होवे आत्म परमात्म मिले धुर दे कन्त, सेज सुहञ्जणी वज्जे वधाईआ। हरि किरपा होवे हउमे रोग मिटे चिन्त, संसा संसार रहण ना पाईआ। हरि किरपा होवे मानस देही बणे बणत, तत्तव तत्त बूझ बुझाईआ। हरि किरपा होवे लेखा लगे अन्त, अन्तर ना होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ।

हरि किरपा होवे भगत जन उपजे भाग, भागहीण रहण कोई ना पाईआ। हरि किरपा होवे जोती नूर जगे चिराग़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। हरि किरपा होवे गुरमुख पूरन बणे साध, साधना सति सच समझाईआ। हरि किरपा होवे घर सज्जण सुणे नाद, अनादी धुन शनवाईआ। हरि किरपा होवे बदल जाए समाज, रीती नीती दए उल्टाईआ। हरि किरपा होवे मिट जाए वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। हरि किरपा होवे सुरती शब्द होवे विस्माद, आपणा आप मिटाईआ। हरि किरपा होवे मिले कन्त सुहाग, नर नरायण सच्चा शहनशाहीआ। हरि किरपा होवे परदिआं विच्चों खुल्हे राज़, राज़ां विच्चों राज़क नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ। हरि किरपा होवे भगतां खुल्हे अक्ख, अक्खीआं नूर चमकाईआ। हरि किरपा होवे नज़र आवे प्रतख, प्रतख प्रभू गुसांईआ। हरि किरपा होवे धाम न्यारा वेखे वख, महल अटल सोभा पाईआ। हरि किरपा होवे मिले अमोलक वथ, वस्त बेपरवाहीआ। हरि किरपा होवे आत्म परमात्म सुणे जस, सोहँ ढोला सहज सुखदाईआ। हरि किरपा होवे अमृत प्रेम लए रस, कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। हरि किरपा होवे अंदर उपजे सच, जूठ झूठ डेरा ढाईआ। हरि किरपा होवे धुर दी आवे मति, मनमत दए तजाईआ। हरि किरपा होवे उजड़िआ खेड़ा जाए वस, साढ़े तिन्न हत्थ वज्जे नाम वधाईआ। हरि किरपा होवे मेल मिलावा होवे झब, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हरि किरपा होवे गुरमुख सच दवारे बहे फब, कूड़ फ़रेब रहण ना पाईआ। हरि किरपा होवे नाम ख़ुमारी मिले मधु, मधुर रस इक्क चखवाईआ। हरि किरपा होवे हरिजन साचे लए सद्द, चरन कँवल दए वडयाईआ। हरि किरपा होवे मिटे विछोड़ा जगत अड्ड, सोहणा संग बणाईआ। हरि किरपा होवे लेखे लग जाए काया माटी हड्ड, रक्त बूंद सोभा पाईआ । हरि किरपा होवे सिफ्त सलाही ढोले गावण बत्ती

दन्द, रसना जेहवा नाल मिलाईआ। हरि किरपा होवे नूरी नूर चमके चन्द, प्रकाश प्रकाश सोभा पाईआ। हरि किरपा होवे मिले अगम्म अनन्द, मन चिन्त दए गवाईआ। हरि किरपा होवे जन्म जन्म दा मिटे पन्ध, मंज़ल मिले शहनशाहीआ। हरि किरपा होवे चढ़े आत्म परमात्म रंग, रंग रतड़ा दए रंगाईआ। हरि किरपा होवे मिल जाए साचे सेज सुंहञणी पलँघ, करवट रूप ना कोई बदलाईआ। हरि किरपा होवे जन भगतां आसा मनसा पूरी होवे मंग, तृष्ना तृखा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनक बिधी तरीके ढंग आपणे विच्च छुपाईआ। (२१ जेठ शहनशाही सम्मत १)

हरि प्रेम : मानस जन्म सति प्रेम, परम पुरख सरनाईआ। सति पुरख निरञ्जण जाणे एका साचा नेम, नित नवित्त वेख वखाईआ। लेखा जाणे कुण्ट हेम, पर्बत आपणे रंग रंगाईआ। सेवा जाणे बानर बेन, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जुग जुग चुकाए लहण देण, लहणा देणा आप मुकाया । जन भगतां सदा सद दर्शन देवे नैण, नैण अणयाला आप खुल्ह़ाईआ। एका नाउँ सुणाए साचा कहण, साचा नाउँ सिफ्त सालाहीआ । एका मेला हरि संगत बहिण, बिन हरिजन अवर ना कोई भाईआ। एका मन्दर वसे रहण, हरि मन्दर दए वडयाईआ। एका बस्त्र पाए गहिण, भूशन नाम आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग समाईआ।

एका प्रेम हरि गुरदेवा, लोकमात वेख वखाईआ। आदि चुगादि जुगा जुगन्तर अलक्ख अभेवा, अलक्ख अलक्खणा वेस वटाईआ। भगतन बख्शे भगती सेवा, सेवा रूप नज़र किसे ना आईआ । लेखा जाणे आत्मा देवा, देव आत्मा वेख वखाईआ। फल खवाए अमृत मेवा, अंमिउँ रस आपणा रस चवाईआ। टिक्का लाए मस्तक थेवा, कौसतक मणीआं माण गवाईआ। नाम जणाए रसना जिह्वा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाता इक्क समझाईआ।

साचा नाता प्रेम हरि, चरन चरन कँवल वडयाईआ। चुक्के रोग मरन डरन, चिन्ता सोग ना कोई रखाईआ। नेत्र खोल्ह़े हरन फरन, निझ नेत्र कर रुशनाईआ। सतिगुर साहिब तरनी तरन, तारनहार इक्क हो जाईआ। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खिलाईआ।

हरि प्रेम सच संजोग, जुगा जुगन्तर आप जणाइंदा। हरि प्रेम आत्म रस भोग, भोगी भोग आप भुगाइंदा। हरि प्रेम मुक्के वियोग, सहिंसा रोग जगत चुकाइंदा। हरि प्रेम सुणे सच सलोक, राम नामा आप पढ़ाइंदा । हरि प्रेम लेखा चुक्के चौदां लोक, लोक परलोक पार कराइंदा। हरि प्रेम नाता तुट्टे झूठ किला कोट, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। हरि प्रेम जगे निर्मल जोत, जोती जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दर आप सुहाइंदा।

हरि प्रेम सच प्यार, पीआ प्रीतम आप जणाईआ। हरि प्रेम भगत भंडार, भगवन भगती झोली पाईआ। हरि प्रेम तन शिंगार, सोलां इच्छया रंग रंगाईआ। हरि प्रेम ठांडा दरबार, दर घर साचे सोभा पाईआ। हरि प्रेम मंगलाचार, मिल मिल सखीआं मंगल गाईआ। हरि

प्रेम नाता तुट्टे सर्ब संसार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। हरि प्रेम हरिजन हरि करे निमस्कार, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। हरि प्रेम लेखा जाणे आर पार किनार, मंझधार रहण ना पाईआ। हरि प्रेम मेले साचे यार, सत्थर यारड़ा इक्क हंढ्ढाईआ। हरि प्रेम लेखा चुकाए पुरख नार, नर नरायण दए वडयाईआ। हरि प्रेम मानस जन्म जाए पैज सवार, मानव आपणे लेखे पाईआ। हरि प्रेम कागद कलम ना लिखणहार, सत्त समुंद्र मस बनास्पत रो रो दए दुहाईआ । हरि प्रेम सभ तों वसे बाहर, बिन गुरमुख नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रूप दए दरसाईआ।
हरि प्रेम आत्म रंग, रंग रंगीला आप जणाइंदा। हरि प्रेम सुहाए सच पलँघ, पावा चूल ना कोई बणाइंदा। हरि प्रेम वजाए नाम मरदंग, तार सतार ना कोई हिलाइंदा। हरि प्रेम पंज विकारा करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। हरि प्रेम साचे मन्दर पाए वंड, घर घर विच्च वेख वखाइंदा। हरि प्रेम उपजाए परमानंद, निजानंद आप समाइंदा। हरि प्रेम खुशी कराए बन्द बन्द, हरख सोग ना कोई रखाइंदा। हरि प्रेम ढाए झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। हरि पेम चढ़ाए साचा चन्द, अन्ध अन्धेरा मात गवाइंदा। हरि प्रेम मिले हरि बख्शंद, बख्शणहारा वेख वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नाउँ आप प्रगटाइंदा।

हरि प्रेम मिले हरि नामा, जन्म जन्म दी मैल गवाईआ। हरि प्रेम पूरन होए कामा, काम कामनी रहण ना पाईआ। हरि प्रेम वज्जे दमामा, अनडिठ ताल वजाईआ। हरि प्रेम प्रकाश होए कोटन भाना, जोत नूर नूर रुशनाईआ। हरि प्रेम मिले साचा काहन, गोपी सुरती लए परनाईआ। हरि प्रेम घर आए रामा, सीता सतिवन्ती लए उठाईआ। हरि प्रेम होए अन्तरजामा, अन्तर पर्दा दए खुल्ह़ाईआ। हरि प्रेम वसे नगर ग्रामा, साचा खेड़ा मिले वडयाईआ। हरि प्रेम हरिजन मिले साचा माणा, माण निमाणयां आप दवाईआ। हरि प्रेम मन्ने भाणा, सो भाणे विच्च समाईआ। हरि प्रेम देवे शब्द बबाना, हरिजन साचे लए चढ़ाईआ। हरि प्रेम चुकाए आवण जाणा, आवण जावण रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका अक्खर रिहा पढ़ाईआ।

हरि का प्रेम एका अक्खर, लिखण पढ़ण विच्च ना आया। हरि का प्रेम वखाए सत्थर, साचा सत्थर इक्क रखाया। हरि का प्रेम बज़र कपाटी तोड़े पत्थर, प्रेम निशाना इक्क लगाया। हरि का प्रेम नेत्र नीर वरोले अत्थर, जोती लंबू एका लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रेम रूप वटाया।

पारब्रह्म प्रेम पुरख पुरख दाता सर्ब गुणवन्त, सच सुच्च करे जणाईआ। अलक्ख अगोचर आदि जुगादि बेअन्त, श्री भगवन्त वड्डी वडयाईआ। नर नरायण साचे धाम सोभावन्त, महल्ल अट्टल उच्च मनार करे रुशनाईआ। गुरमुख सुहागण नार भतार मिले हरि हरि कन्त, कन्त सुहाग इक्क समझाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, आदि जुगादि उतर ना जाईआ। रसना जिह्वा मणीआ मंत, धन जोबन नाम झोली पाईआ। गीत गोबिन्द सुहागी छंत, सौहरे

पेईए सदा जस गाईआ। गढ़ तोड़े हउमे हंगत, ख़िमा ग़रीबी इक्क दरसाईआ। लक्ख चुरासी विचों कढ्ढे जीव जंत, जीव आत्मा मेल मिलाईआ। आपणा लेखा मेटे तुरंत, दूजा लेखा ना कोई वखाईआ । गुरसिख गुरमुख गुर गुर उपजाए साचे सन्त, जिस आपणा दरस वखाईआ। लोक परलोक बणाए बणत, साचा घाड़न घड़त घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप खलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, गुरू गुर चेल चेला गुर गुर चेला एका रंग समाईआ। (१२ जेठ २०१८ बि)

हरि की माघी : हरि की माघी गुरमुख मज़न, सतिगुर अशनान कराइंदा। पुरख अकाल मिल्या सज्जण, निरवैर राह वखाइंदा। ग़रीब निमाणयां परदे कज्जण, नाम दुशाला उपर पाइंदा। घर घर अंदर शब्द दमामे वज्जण, अनहद रागी राग सुणाइंदा। गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख हरिभगत हरिभगत हरिजन हरिजन एथ्थे ओथ्थे दो जहान गज्जण, ढोला सोहला बन्द ना कोई कराइंदा। लक्ख चुरासी भाण्डे भज्जण, काया माटी कच्च कम्म किसे ना आइंदा । मनमुख जीव जगत दुआरे नच्चण, गुरमुख गुर सतिगुर वेख ख़ुशी मनाइंदा। सन्त सुहेले कूड़ी क्रिया कोलों बचण, जो गुर का बचन कमाइंदा। अगनी अग्ग कदे ना मच्चण, सीतल धार इक्क वहाइंदा । सतिगुर प्यार अंदर रचण, रच रच आपणी ख़ुशी वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, सच अशनान आप कराइंदा।

होया अशनान सतिगुर धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाया । चतुर सुघड़ बणया मूर्ख मूढ़, अज्ञान अन्धेर चुकाया। शब्द अगम्मी सुणाए तूर, तुरीआ बैठी मुख भवाया। सार शब्द जो होया रिहा मफ़रूर, आपणा पर्दा दए उठाया। दर आई संगत माफ़ करे कसूर, पिछला लेखा दए चुकाया। अग्गे नज़र आए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा मेल मिलाया। वेले अन्त मिले ज़रूर, गुरसिख जम नेड़ कदे ना आया। नेत्र वेखो किवें दो जहानां मचाए फ़तूर, फ़तवा सादर दए कराया। नौं खण्ड पृथ्मी होए मज़बूर, मुज़रम सभ नूं लए बणाया। सर्ब गुणां आपे भरपूर, भरपूर रिहा सभ थाइआ। नव नौं तोड़े माण ग़रूर, गुरबत सभ दी दए गवाया। कलिजुग मेटे क्रिया कूड़ी कूड़, कूड़ कुड़िआरा दए खपाया। जन भगतां आवण जावण पत्तित पावण लक्ख चुरासी कट्टे जूड़, मात गर्भ उलटा रुख दस दस मास ना अगन तपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, जन भगतां दुआरे बणया आप मज़दूर, मुशतबा बण बण सेव कमाया। (पहली माघ २०१६ बि)

पहली माघ कहे अठ्ठ सट्ठ तीर्थ आए पिट्टण, रो रो देण दुहाईआ । कलिजुग जीव सानूं नहीं देंदे टिकण, दिवस रैण रहे सताईआ। नंगे हो हो साड्डे विच्च लिटण, कूड़ी क्रिया तारीआं लाईआ। साड्डा लेखा पूरा कर प्रभू पुराणा रिटण, कढ्ढ के दईए विखाईआ। जे तूं कलिजुग अन्तम आइउँ नजिट्ठण, सिर साड्डे हत्थ रखाईआ। साड्डी जलधारा टक्कयां विच्च लग्गी विकण, कीमत कोई ना पाईआ। तूं अर्शी प्रीतम धुर दा पितण, पतिपरमेश्वर

बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

अठ्ठ सट्ठ कहण श्री भगवान, तेरी ओट तकाईआ। तूं आदि जुगादी राम रहीमा अगम्मा काहन, निरगुण निरवैर इक्क अखवाईआ। सति सरूपी शाहो भूपी नौजवान, मर्द मरदाना बेपरवाहीआ। जरा निगाह मार ध्यान, नैण नैणां विच्चों उठाईआ। सच दा रिहा ना कोई इशनान, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। ठग्गी चोरी साड्डे उत्ते करे जहान, माया ममता लोभ मोह हलकाईआ। असीं वेख के होए हैरान, हैरानी अंदर दुहाईआ। चारों कुण्ट दिसण बेईमान, सति विच्च ना कोई समाईआ। असीं निगाह मारी ज़िमीं असमान, दीपां मण्डलां लोआं वेख विखाईआ। जिध्धर तक्कीए सारे होए परेशान, धीरज धीर ना कोई धराईआ। धर्म दा रिहा ना कोई ईमान, सच विच्च ना कोई समाईआ। जगत जगिआसू होए शैतान, बिन शरअ दे करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

अठ्ठ सट्ठ तीर्थ कहण प्रभू असीं तेरे नाम दे होए वैरागी, वैराग विच्च सुणाईआ। जगत विवहार रहे त्यागी, तेरे चरनां विच्च टिकाईआ। साड्डा पवित्र किसे ना करे इशनान माघी, मग्न तेरे नाल ना कोई कराईआ। साथों तेरी सृष्टी हो गई बागी, बागवां की तेरी बेपरवाहीआ। सच वस्त किसे ना लाधी, खोजण वाला नज़र कोई ना आईआ। साड्डे उत्ते साड्डी होवे बरबादी, कन्ढे घाट देण गवाहीआ। साध सन्त हिरदे रिहा ना कोई अराधी, राधा कृष्न ना रूप समाईआ। प्यार दी लाए ना कोई समाधी, सिध सादक ना कोई अखवाईआ। साड्डे जल नाल दुखीआ होवे कोई ना राजी, राजक रिजक रहीम की तेरी बेपरवाहीआ। सुरती अंदरों किसे ना जागी, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। बिन तेरी किरपा होए ना कोई वडभागी, भागहीण हो के देईए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ।

अठ्ठ सट्ठ तीर्थ कहण किरपा कर पुरख समरथ, चरन कँवल दे सरनाईआ। साड्डे खाली वेख लै हत्थ, वस्त रहण कोई ना पाईआ। जगत विकार जाए मूल ना लथ्थ, जो साड्डे विच्च इशनान कराईआ। असीं सच सच देईए दस्स, दह दिशा मात सुणाईआ। अमृत रिहा ना कोई रस, रसना रस ना कोई वडयाईआ। साड्डी अन्त अख़ीर होई बस्स, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। सदा तेरा गाउँदे रहीए जस, सिफ्तां विच्च सलाहीआ। तेरा खेल कलिजुग रैण अन्धेरी मस, सच चन्द ना कोई चमकाईआ। साड्डा दे दे स्वामी हक़, हकीकत तेरे चरन टिकाईआ। जिउँ भावें तिउँ लैणा रक्ख, एह तेरे हत्थ वडयाईआ। असीं सरन सरनाई रहे ढठ्ठ, अठ्ठ सट्ठ तीर्थ सीस झुकाईआ। साड्डी दुरमत मैल कट्ट, अन्तश्करन दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट तकाईआ।

अठ्ठ सट्ठ कहण जन भगतो प्रभ चरन सच्चा इशनाना, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ। किरपा करे श्री भगवाना, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। तुहाढ्ढा आदि दा अन्त दा इक्क निशाना, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दर साचा लैणा पहचाना, पर्दा परदिआं विच्चों उठाईआ। खेले खेल नौजवाना, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्ह़ाईआ।

माघ कहे जन भगतां तुसां नुहाउणा प्रेम दी धूढ़ी, सच इशनान जणाईआ। दुरमत मैल रहे

ना कूड़ी, कूड़ कुड़िआर मिटाईआ। मूर्ख मुग्ध रहे कोई ना मूढ़ी, चतुर सुजान समझाईआ। सभ दे उत्ते रंगण चढ़ जाए गूड़ी, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ।

माघ कहे जन भगतो प्रभ सरनाई नहाउणा, जो इक्को रंग रंगाईआ । भाण्डा भरम भन्नाउणा, दुरमत मैल धवाईआ। साचा बंक सुहाउणा, वजदी रहे वधाईआ। अठ्ठ सट्ठ तीर्थ इक्क बणाउणा, जिथ्थे प्रभू चरन टिकाईआ। सद गीत सुहागी ढोला गाउणा, तूं मेरा मैं तेरा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर ठांडा इक्क वखाउणा, जिथ्थे अगनी तत्त ना लागे राईआ। (१ माघ शहनशाही सम्मत नौं)

माघ कहे नव नौं चार पिच्छों मेरी आई माघी, जन भगतां दुरमत मैल धुआईआ। साचे सन्तां सोई सुरत मन्दर अंदर काया जागी, आलस निंदरा ना कोई वखाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया बणो त्यागी, लोभ हँकार ना कोई हलकाईआ। सच प्रेम दे बणो वैरागी, इष्ट इक्को इक्क मनाईआ। काया कण्पड़ धोवो दागी, पत्तित पुनीत रूप वटाईआ। शब्द सुणो अगम्मी नादी, धुन आत्मक राग अलाहीआ। अमृत रस पीओ अनडिठ सुआदी, रसना जेहवा ना कोई हलाईआ। शाह पातशाह मिलो इक्क नवाबी, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। महल्ल अट्टल सोवो सच महिराबी, महिबूब हुजरा इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। (१७ माघ शहनशाही सम्मत १)

माघी दा नफा खट्टो मुफ्त, कीमत ना कोई लगाईआ। मुहब्बत विच्च हो जाओ चुस्त, तेजी तेजी प्रेम वधाईआ। ग़फलत विच्च ना होणा सुसत, सुसती देणी कढ्ढाईआ। मन कल्पणा रहे ना खुशक, खुशहाली नज़री आईआ। सच दवार दा एह उरस, अरूज वेख वखाईआ । जिस धाम नूं लभ्भदे महांपुरुष, पोशीदा राह तकाईआ। दीन मज़हब दी लौंदे बुरद, मुकाबले विच्च वडयाईआ। उह सभ नूं करके खुरद बुरद, बुद्धि तों परे करे लड़ाईआ। ढाह हँकारी बुरज, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सति धर्म दी लै के गुरज, गिरजिआं तों उपर आवाज़ां रिहा सुणाईआ। जन भगतां हिरदे खुरच, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। सच संदेशा देवे तुरत, तुरीआ तों परे इक्क जणाईआ। जन भगत खुल्ली रक्खे सुरत, सुत्ती आप उठाईआ। लेखा जाणे अर्श कुर्श, काया कुट्ठा फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द इक्को बहुता लोड़ नहीं कोई गुरस, कौड़ीआं वाली वंड ना कोई वंडाईआ। नाम निधाना सभ नूं करे बुरश, बुरछागदी रहण ना पाईआ। गुरमुखां चाढ़े लाल रंग सुरख, सुरखी बिन्दी कूड़ी दए मिटाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत अमृत रस नाल देवे बुरक, बुरके वालिआं करे सफ़ाईआ। कुछ हलूणा देवे तुरक, तुरकिसतान वेख वखाईआ। सभ दा लहणा देणा करके कुरक, खाली दवारे दए वखाईआ। सभ नूं पैणी कलिजुग क्रिया दी खुरक, मलूम पट्टी ना कोई बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल प्रगटाईआ।

माघी दा मुफ्त देवे सौदा, करता कीमत ना कोई रखाईआ। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेट के आहुदा, आहुदेदार इक्को दए वखाईआ। जो सभ दा चुक्के बोझा, आपणे कंध टिकाईआ। लेखा मुकावे निमाज़ रोज़ा, रोज़ी सभ दी आपणे हत्थ वखाईआ। लेखा जाणे अभिआस

जोगा, जोगीशरां फोल फुलाईआ। जोती जामा बदल के चोग़ा, चुगली निन्दिआ वाले सारे दए खपाईआ। धरती उत्ते रक्ख के गोडा, गुडमारनिंग सभ नूं दए समझाईआ। किसे दा उच्चा रहण ना देवे बोदा, बोदी वाला बदी ना कोई कमाईआ। सभ दा लेख मुकावे हरख चिन्त रहे ना सोगा, ग़मी ग़मखवार वेख वखाईआ। भरम ना भुल्लओ लोगा, गुरू ग्रंथ दए गवाहीआ। जो सभ नूं देवे चोगा, राज़क रिज़क रहीम अखवाईआ। सूरबीर बांका जोधा, महांबली वड वडयाईआ। उस दा रस किसे ना भोगा, भोगी बणी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे सच संयोगा, वियोग नज़र कोई ना आईआ।

माघी सौदा मिले अनमुल, अनमुलड़ी दात वरताईआ। भगत भगवान दी इक्क कुल, कुल आलम वेख वखाईआ। सभ दा दीवा करे गुल, गुलशन आपणा इक्क महकाईआ। जो सृष्टी गई भुल्ल, उसे दा डंक वजाईआ। हरिजन साचे तोल जाए तोल, करता कीमत आप मुकाईआ। गुरमुख गुलशन दे उह गुल, जिन्हां दी महक मुहब्बत विच्च टिकाईआ। लोकमात ना जावण रुल, धरती ख़ाक ना कोई सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सुलाहकुल, साचा नाता इक्क रखाईआ। (पहली माघ शहनशाही सम्मत ३)

सम्मत कहे सतिगुर शब्द ना करीं सौदेबाज़ी, बाज़ीगर आपणा सवांग वरताईआ। वेखीं किते डण्डावत बन्दना विच्च सयद्यां वाले तैनूं कर लैण ना राज़ी, रिज़क रहीम तेरी घर घर वडयाईआ। बेशक तूं खेल जाणदा आदी, जुग जुगादी वेख वखाईआ। पर याद कर लै की अन्त अख़ीरी बचन जोरावर सिँघ नूं आक्खया गुजरी दादी, दाअवे नाल जणाईआ। बच्चया गोबिन्द दे गुरमुखां दी बहुती वधणी नहीं आबादी, अनगिणतां विच्चों थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां दे अंदरों सुरती होणी जागी, सुत्यां आप उठाईआ। ओन्हां छड्ड देणी नहौणी विसाखी माघी, मग्न आपणे संग रखाईआ। सतिगुर हो के ओन्हां दा बणया रहे वागी, नीले वाली वाग देणी तजाईआ। लहणा पूरा करना नानक वाला बगदादी, बगलगीर आप बणाईआ। नूर दा नूर होवे इमदादी, दूजी लोड़ ना कोई वखाईआ। झगड़ा रहे ना कोई समाजी, साची समझ देणी दृढ़ाईआ। धुर दा मालक बण के गाडी, गारडीअन सारे देणे हटाईआ। जेहड़ा मालक धुर दा आदी, अन्त उहो वेख वखाईआ। जन भगतो भगवान नाल तुहाड्डी सदा सदीव दी हो गई शादी, शादिआने सदा दे दए वजाईआ। बिना पूरन तों पूरी मौज नहीं लभ्भणी जगत बहार बागी, बाग़बान दूजा नज़र कोई ना आईआ। गोबिन्द ने कौल कीता महां सिँघ दे नाल उत्ते ढाबी, सिर पट्टां उत्ते रखाईआ। पुशत पनांह मार के थापी, थप्पड़ सहजे नाल मुख उत्ते लगाईआ। कमरकसे विच्चों कढ्ढ के कापी, कुछ लिखण लग्गा नाल कलम शाहीआ। महां सिँघ ने अर्ज़ कीती गोबिन्द मैनूं ना तारीं तारीं मेरे पापी, पापीआं पार कराईआ। मैं मंगाँ तूं गुरमुखां दी सदा करीं राखी, राखा हो के वेख वखाईआ। कुछ लहणा देणा लैणा नहीं बाकी, बाकी लेखा तेरी झोली पाईआ। जिस वेले कलिजुग अन्त होवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। तेरी मन्ने कोई ना

आखी, गोबिन्द तेरा दरस कोई ना पाईआ। ओस वेले सच दुआर दी खोल्हीं हाटी, घर इक्को लैणा प्रगटाईआ। ग़रीब निमाणयां नूं देणी हयाती, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। जेहड़े अज्ज तक्क तेरे नालों विछड़े गुरमुख तेरे साथी, उह सारे लैणे मिलाईआ। एहो मेरी मंज़ल एहो मेरी वाटी, एहो पन्ध देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। (१ सावण श सं ४)

गुर अवतार पैगम्बर कहण भगतो वेखो प्रभू दी माघी, मज़न भगतां रिहा कराईआ। तुसीं होए वड वड भागी, भागाँ वालयो देवां सुणाईआ। तुहाढ्ढी धार तुहाढ्ढे विच्चों जागी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत उधारना जिस दी वादी, उह वाअदे सभ दे वेख वखाईआ। तुसां किसे ने करनी नहीं बरख़लाफी, ख़लाफत नज़र कोई ना आईआ। सभ ने बणना इक्क दूजे दे इतहादी, नाता प्रेम वाला जुड़ाईआ। एथ्थे ओथ्थे होवे ना कोई बरबादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल मिलाईआ। (१ माघ श सं ४)

गुर पाया वड वडभागी। कलिजुग आत्म सोई जागी। ना कोई पछाणे ना कोई जाणे वेदी रागी। सो जन जाणे जिस प्रीत चरन प्रभ लागी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मात जोत प्रगटाए सतिजुग साचा लाए पहली माघी। (२००८ बि) (१६ चेत २०१० बि)

हरि तमाशा : सतिगुर देखे एह जगत तमाशा। जीव उपाए अप तेज वाए पृथ्मी आकाशा। मन मति बुद्धि जीव आत्म धरवासा। जीव ना पाए सार, विच्च देह गुर पूरे वासा। प्रभ देवे पर्दा खोल्हू, जिस गुरचरन भरवासा। मिले शब्द अनमोल, होवे आत्म प्रकाशा। विच्च दिसे जोत अडोल, जगाई प्रभ अबिनाशा। गुर पूरे वेखे चोहल, कलिजुग जीव होए बैठ निरासा। महाराज शेर सिँघ सर्ब जीव जंत भइओ वासा। (२१ जेठ २००७ बि)

आदि पुरख पुरख अबिनाशा, एका रंग समाया। आदि जुगादी खेले खेल तमाशा, खेलणहारा दिस ना आया। थिर घर साचे पावे रासा, मण्डल मंडप आप सुहाया। आपे पूरी करे आपणी आसा, इच्छया भिच्छया आप भराया। आपणे अंदर कर कर वासा, आप आपणा मेल मिलाया। आपे शाहो आप शाबाशा, सति सुल्ताना आपणा नाउँ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अलक्ख अगोचर भेव ना राया। (१ माघ २०१७ बि)

हरि तमाशा जिस वेखणा जग, धरनी हरि समझाइंदा। भगत प्यार अंदर जाए बज्झ, प्रीती प्रीत इक्क समझाइंदा। प्रेम अगन विच्च जाए दज, अगनी तत्त ना कोई वखाइंदा। जगत शरअ पार करे हद्द, एका घर वखाइंदा। हरिसंगत विच्च बहे सज, सो जन हरि का दर्शन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तम पड़दा लए कज, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

हरि तमाशा साची रास, हरि सच्चा सच जणाइंदा। शंकर वेखे उत्ते कैलाश, भेव अभेव चुकाइंदा। ब्रह्मा वेखे ब्रह्म प्रकाश, पारब्रह्म प्रगटाइंदा। विष्नूं वेख कहे शाबाश, तेरा भेव कोई ना पाइंदा । पुरख अबिनाशी कहे आदि जुगादि मैं भगतां साथ, सगला संग निभाइंदा। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां होवां दास, बण सेवक सेव कमाइंदा । कलिजुग अन्तम वसां पास, विछड़ कदे ना

जाइंदा। जन भगतां पिच्छे लोकमात कट्टां आप बनवास, बिन जंगल जूह फेरा पाइंदा। मेरा भगत ना होए उदास, बिन भगती दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। करे खेल पुरख अबिनाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए फड़, अनडिठड़ी डोर इक्क रखवाइंदा।

धरनी कहे तेरा अज़ब तमाशा, मैं वेख होई हैरान। घट घट अंदर तेरा वासा, मेरे साहिब सच सुल्तान। खाली दिसे ना कोई पासा, मेरे भगत वछल भगवान। तूं गुरमुखां करे पूरी आसा, देवें दरस दान। मैं मंगाँ चरन भरवासा, बख्शिश करीं मेहरवान। तेरे दर ना जाए कोई निरासा, जो चरनी डिगे आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तूं होणा आप मेहरवान।

मेहरवान मेरे दीन दयाल, मैं तेरी ओट तकाईआ। खुश होई वेख तेरे गुरमुख लाल, घर घर वज्जे वधाईआ। बिन वेखिउँ होइउँ दलाल, अनडिठड़ा रूप धराईआ। तेरी अवल्लड़ी वेखी चाल, तेरी सार कोई ना आईआ। तूं आपे पुच्छयां हाल, आपणा फेरा पाईआ। मेरी बेनन्ती तेरे अग्गे सवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आपणे गुरमुखां नाल मिलाईआ।

हरि जू मैं फिरके आई सभ, नौं खण्ड पृथ्मी फेरा पाया। तैनूं कोई ना सके लभ्भ, क्यों बैठा मुख छुपाया। साध सन्त कलिजुग सुट्ठे डूंघी खड्ड, बाहर सके ना कोई कढाया। इक्क दूजे दीआं कंडां रहे वढ्ढ, छुरी हँकार हत्थ उठाया। दीन मज़हब पा पा वंड, तेरा नाउँ रहे सलाहिआ। बिन तेरे नामे होए रंड, खाली बुत्त रहे कुरलाया। चार वरन वेखिआं भेख पाखण्ड, पेखी जगत नज़री आया। कोई ना गावे तेरा इक्को छन्द, जिस गायां दुःख रहे न राया। मैं तेरयां भगतां दुआरे वेख्या एका अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च समाया। मेरा खुशी होया बन्द बन्द, मैं पिछला दुःख भुलाया। मेरे नेत्र कालजे पाई ठंड, मेरा आत्म सांत कराया। धन्न भाग तूं गुरमुख चाढ़े चन्द, कलिजुग अन्धेरा अन्त गवाया। मेरी इक्को इक्क मंग, तूं बख्शीं सच सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, दूजी वस्त ना कोई मंगाईआ। हरि जू तेरी अचरज रीत, असचरज तेरी वडयाईआ। किधरे मन्दर किधर मसीत, किधरे गुरूदुआर सुहाईआ। किधरे जाणे जणाए साचे गीत, किधरे गुर गुर करे पढ़ाईआ। किधरे वसें धाम अनडीठ, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। बाहरों तेरी करदे वेखे प्रीत, कलिजुग जीव रसना जिह्वा ढोला गाईआ। अंदरों आत्म किसे ना वेखीं ठंडी सीत, त्रैगुण अगनी रही जलाईआ। मैं नेत्र खोल्ह वेख्या तेरी नज़री आई छोटी झीत, दूसर राह ना कोई रखवाईआ। तेरी धारा वेखी बरीक, रूप रंग ना कोई वडयाईआ। मैं चल के आई नज़ीक, आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे तेरा भगत वेख्या जिस दा दिसे ना कोई शरीक, एका रंग रिहा समाईआ। सदा तेरे मिलण दी रक्खे उडीक, आत्म सेजा इक्क विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क विखौणा साचा घर, जिस घर हरिजन लए मिलाईआ।

आ वेख मिल्या मेला, सो पुरख निरञ्जण आप मिलाया। पैहलों वेख्या इक्को गुरसिख सिँघ चेला, सिँघ रूप वटाया। पारब्रह्म प्रभ सज्जण सुहेला, दीनन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन एका घर बहाया।

हरिजन वेख इक्को घर, घर बाहरी आप वखाइंदा। इक्क दूजे दा पल्लू फड़, बंधन बंध रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर आप समझाइंदा। साचा घर सच मकान, हरि साचा सच जणाईआ। जिस गृह वसे श्री भगवान, सो मन्दर सोभा पाईआ। जिस मन्दर मिले धुर फ़रमाण, तिस मिले माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गृह एका मन्दर, खेले खेल अंदरे अंदर, आत्म परमात्म आपणा रंग वखाईआ। (१७ माघ २०१८ बि)

हरि भगत दवार जेठूवाल :

१६ कतक २०१८ बिक्रमी भगत दवार दी नींह दी इट्ट रक्खण समें शब्द :

(पाल सिँघ लल्लीआं वाले नूं सत्त साल पहलां इक्क रुपया दित्ता सी। उस नूं थल्ले नींह विच्च पूरन सिँघ दे मस्तक विचों लहू कढ़ु के दब्बया अते बहत्तर भगतां दी याद विच्च सचखण्ड निवासी श्री पाल सिँघ जी, काका मनजीत सिँघ, काका जगदीश सिँघ, काका सवरन सिँघ, श्री गुरदयाल सिँघ जी दा जीवन दान दित्ता।)

धरनी धवल सुण पुकार, हरि सतिगुर दया कमाईआ। मड़ी गोर पावे सार, वेखे थाउँ थाईंआ। ज़ोर ज़र करे ख़वार, लोकमात जगत लड़ाईआ। शाह पातशाह देवे हार, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ । अन्त रोवण नारी नार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। धीरज देवे ना कोई विच्च संसार, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म रिहा समझाईआ। साचा हुक्म शाह सुल्तान, आपणा आप जणाइंदा। हरि संगत सति कर ध्यान, साचा राह आप वखाइंदा। इक्को शब्द इक्क ज्ञान, दूजा अक्खर ना कोई पढ़ाइंदा। एका मन्दर इक्क मकान, एका घर वखाइंदा। एका गुरू करे कल्याण, गुर शब्दी नाउँ प्रगटाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप चलाइंदा।

साची धार साची नईआ, सो पुरख निरञ्जण आप चलाईआ। सत साल पिछों मंगया इक्क रुपया, जो सिँघ पाल हत्थ फड़ाईआ। कलिजुग नाता भैणा भईआ, पुरख अबिनाशी ना कोई ध्याईआ। नारी पुरख इक्क दूजे दीआं फड़ फड़ बईआं, जगत ख़ुशी रहे मनाईआ। अन्त सार कोई ना लईआ, जूनी जून भवाईआ। चित्रगुप्त कढ़ु वईआ, राए धर्म दए सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग दए समझाईआ।

एह धन माया झूठी छाया, लोकमात ना कोई वड्डआइंदा। राज राजान जिस ने खाया, खा खा शुकर फेर मनाइंदा। सूरबीरां जिस सिर कटाया, सो रुपया हत्थ ना किसे आइंदा। जिस दे पिच्छे उच्ची कूक कूक प्रभ अबिनाशी गाया, सो अन्तम खेह मिलाइंदा। जिस दे पिच्छे साध सन्त गुर पीर अवतार मनाया, वेले अन्त ना कोई छुडाइंदा। पुरख अबिनाशी कलिजुग अन्तम आपणी दया आप कमाया, जगत माया गुरमुखां चरन हेठ रखाइंदा। भगत दवारे थल्ले दए चणाया, उपर आपणी हत्थीं निशान लगाया ना कोई फेर बाहर कढाइंदा। सिँघ गुरदयाल दी झोली पाई त्रैगुण माया, जगत माया नाल वखाइंदा। प्रभ दी इक्को इक्क साया, जिस दा दित्ता सभ कोई पींदा खाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा।

जगत रोवे पुत प्यार, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। मां रोवे करे विचार, मेरा बाला नज़र ना आईआ। पिता कहे मेरा सरदार, मुड़ घर ना फेरा पाईआ। सज्जण कहण साड्डा विछड़आ यार, कवण बह बह मजलसां लाईआ। नारी रोवे नेत्र नैणां धार, छहबर इक्क वखाईआ। मेरी सेजा सुंझी होई विच्च संसार, अंगी अंग ना कोई रखाईआ। भैण भरावां करे प्यार, सिर दे खोवे केस, दर दरवेश बण बण आपणी जान रुलाईआ। अन्तम सारे कहण प्रभ अग्गे ना चले कोई पेश, आपणी हत्थीं अगनी देण लगाईआ। कोई गणपत मनाए गणेश, कोई ब्रह्मा विष्न ध्याए ना सके कोई छुडाईआ। कोई गुर अवतारां करे आदेस, कोई पढ़ पढ़ थक्के वेद, पुरान अठारां कोई गाईआ। कोई कहे पांधे मेरी पत्री वेख, मेरी मिटदी जाए रेख, मेरा लेखा कवण मुकाईआ। कोई कहे मेरा होए सहाई, विष्नूं बाशक सुता शेश, अष्टभुज जगत भवानी मेरी वाग भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आपणे हत्थ रखवाईआ।

कोई कहे तारे भगत, सन्त अगे सीस झुकाइंदा। कोई कहे गुरू तारन आया जगत, फड़ चरनां ओट तकाइंदा। कोई कहे वेद दस्से साचा मंत, मनवन्तर भेव खुलायंदा। हरि का भेव सदा बेअन्त, आदि अन्त ना कोई जणाइंदा। बिन नारी रोवे कन्त, कन्त नार बिनां कुरलाइंदा। सदा सहेला इक्को सन्त, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग मार्ग आप समझाइंदा। पुत्र पिच्छे रोवे जग, आपणी जाग खुलाईआ। पुत्र पिच्छे सड़न काया अग्ग, अगनी अग्ग वधाईआ। पुत्र पिच्छे कहण तुट्टा तग, नाता जगत नज़र ना आईआ। पुत्त दा मुख ना वेख्या रज्ज रज्ज, अन्त रोवे बुढी माईआ। आपणी हत्थीं उत्ते पर्दा देण कज, मिल भाईआ देण नुहाईआ। जेहड़ी नार रखौदी रही उसदी लज, सो जहा ना संग निभाईआ। आपणा कन्त हरि जू छड्ड, जगत वेसवा रूप वटाईआ। जन भगतां विचों होए अड्ड, ना सके फेर मिलाईआ। काम क्रोध दी डिगी डूंघी खड्ड, अन्धेरा सके ना कोई मिटाईआ। बालण होया हड्डीआं हड्ड, चिखा तृष्ना रूप जलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख़या इक्क समझाईआ।

जिस पुत्र दा करो प्यार, सो कम्म किसे ना आया। जिस सज्जण दी करो विचार, सो सज्जण पल्लू लए छुडाया। जिस कन्त दा कहो सहार, सो कन्त देवे धक्का लाया। अन्त बेड़ा ना पार ना उरार, मंझधार वेख वखाया। चार जुग डुब्बदा रिहा संसार, गुरमुख विरला पार कराया। कलिजुग आई अन्तम वार, पुरख अबिनाशी होए सहाया। कबीर जुलाहे सुण पुकार, लोकमात फेरा पाया। नानक गोबिन्द पैज सुआर, हरिजन साचे लए उठाया। अठ्ठ दस कर ख़वार, अठारां सिधां मेट मिटाया। नौं नौं दए पार उतार, आप आपणी नईआ इक्क चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झूठा संसा दए चुकाया। वीह सौ दस बिक्रमी सोलां मध्घर, हरि ख़ाक वंड वंडाईआ। उन्नी कत्तक आपणी पूरी करके सधर, आपणी खुशी मनाईआ। लेखा जाणे नौं खण्ड खण्ड भदर, बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ख़ाक आपणे हत्थ रखवाईआ।

सिँघ मनजीत तेरी ख़ाक, अठ्ठ साल गंढु रखवाईआ। सिँघ जगदीश तेरी राख, सत्त साल वंड वंडाईआ। धरत मात तेरी इच्छया भाख, जगत माया गुरसिख झोली पाईआ। आपणा वेला रक्खया आपणे हाथ, ना भेव किसे समझाईआ। सिँघ गुरदयाल विकया साचे हाट,

करता कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहणा दए मुकाईआ। पूरब लहणा ढाई कर्मां वंड, बल बावन खेल खलाया। कलिजुग अन्तम चढ़या चन्द, बिन चन्द होए रुशनाया। पुरख अबिनाशी सदा बख्शंद, आपणी बख्शिश दए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दिहाढ़ा रिहा सुहाया। सच दिहाढ़ा ढाई मुट्ठी ख़ाक, धरनी ख़ाक विच्च दबाईआ। छत्ती जुग दा टुटा नात, फिर नाता दए जुड़ाईआ। जन भगतां बणया सज्जण साक, सगला संग तजाईआ। जिस दा करदे रहे पूजा पाठ, सो बण के पाठी गुरसिख तेरी बाणी आप अलाईआ। तेरे पिच्छे आपणा पूरा करे घाट, हरि संगत अग्गे झोली डाहीआ। सत्तरां देवे साचा साथ, गोबिन्द सत्थर नाल मिलाईआ। करनहारा करके जाए पूरी आस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, साची ख़ाक नीहां हेठ दबाईआ। साची ख़ाक साची धूढ़, धूआंधार मिटाइंदा। लक्ख चुरासी कट्टया जूड़, झूठा बंधन मात तुड़ाइंदा। चतर सुघड़ बणाया मूर्ख मूड़, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। कर किरपा देवे जोती नूर, नूर नूर नाल मिलाइंदा । जिस घर जाए साहिब ग़फ़ूर, साचा ज़हूर आप वखाइंदा। मूसे तक्कया जलवा उत्ते कोहतूर, नूरी जलवा एका वार वखाइंदा। गुरसिखां आत्म करके जाए भरपूर, भरया भंडारा आप वरताइंदा । जिस नूं कहन्दे रहे नेड़े दूर, सो ज़रूर फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी बणया रिहा मकरूर, हत्थ किसे ना आइंदा। साध सन्त लोकमात सफ़र कट्टदे गए ज़रूर, पान्धी पन्ध ना कोई मुकाइंदा। कलिजुग अन्तम मन वासना मचाया फ़तूर, फ़तवा कोई ना मेट मिटाइंदा । गुरदर मन्दर मस्जिद अंदर वड़या ग़रूर, गुरबत कोई ना अवर जणाइंदा। किसे ना आया सच शऊर, साची सिख़या ना कोई समझाइंदा। मुलां काज़ी सेख़ मसाइक रसना कहण अगे मिले हूर, हूरां विच्च सर्ब रुलाइंदा। मुहम्मद अन्त बख्शावे आपणा कसूर, दिवस रैण सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धारा आपणे हत्थ रखवाइंदा।

साची धार पुरख अबिनास, आपणे हत्थ रखवाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, सतिजुग राह चलाईआ। उन्नी कत्तक पिछों गुर अवतार ना सुणे कोई अरदास, कीती अरदास सभ दी बिरथा जाईआ। मन्दर मस्जिद मठ शिवदवाले होण निरास, बैठण ढेरी ढाहीआ। प्रभ इक्को वार सद्द लए पास, पिच्छे फेर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा दए मुकाईआ।

जिस मुकाया पिछला लेखा, सो साहिब नज़र ना आइंदा। भुल्ले फिरदे धारी केसा, मूंड मुंडाया मुख भवाइंदा। सभ दा होया ख़ाली ख़ीसा, राज राजान सर्ब कुरलाइंदा। कलिजुग वेसवा बण बण कराया पेशा, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश घर घर विभचार वखाइंदा। जिस मन्दर अंदर रक्खया गणपत गणेशा, तिस अंदर नारी पुरख संग वखाइंदा। जिस गुरूदवार अंदर रक्खया भरवासा, तिस घर ग्रन्थी बच्चीआं संग करन हासा, हासा हरि कदे ना भाइंदा। जिस अंदर राम कहण प्रकासा, तिस मन्दर होए भोग बलासा, पुरख अबिनाशी वेख वखाइंदा। जिस मन्दर मुहम्मद कहण देवे दिलासा, तिस मस्जिद अंदर मुलां मेल ना कोई कराइंदा। वेखण आए साहिब गुणतासा, सो आलमगीर फेरा पाइंदा। चार जुग चौकड़ी गुर अवतारां भगत भगवन्त वेख दा रिहा तमाशा, हुक्मी हुक्म हुक्म सुणाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दवारा आप बणाइंदा।

सच दवारा जाए बण, हरि आपणी बणत बणाईआ। सेवा करन गंधर्ब गण, दर दर फेरी पाईआ। धन्न वड्डिआई जननी जिस भगत जन जणे जन, लोकमात मिली वडयाईआ। हरि संदेशा सुणया कन्न, रागी राग भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा दए वसाईआ।

सच दवारा नींह रक्ख, आपणा खेल कराइंदा। निरगुण निरगुण हो प्रतक्ख, सरगुण आप समझाइंदा। सचखण्ड दवारे जिस जाणा वस, सो नाता मोह चुकाइंदा। पिता पुत मात सुत चिखा उपर रक्ख, खुशी खुशी फुल्ल चढ़ाइंदा। तेरी वस्त तेरे हत्थ, साचा शुकर मनाइंदा । जे कोई नेत्र रोवे अथ, दरगाह साची धाम ना पाइंदा। तिन्नां लोकां छत्ती जुग मनारा बणा के करे चठ, उपर आपणा आसण लाइंदा। हरि का मन्दर ना जाए ढठ्ठ, सभ दी जड़ आप उखड़ाइंदा। सत्तर जन करना इक्ठ, दर साचे आपे मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा लेखे पाइंदा।

सत्तर सिख सेवा जाण लग्ग, हरि साचा आप लगाईआ। करे खेल सूरा सर्बग्ग, बेअन्त बेपरवाहीआ। सतिजुग साचा बन्ने तग, साचा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म सुणाईआ।

सत्तर सिख सत्तर इट्ट देण उखेड़, चार कुण्ट जो आप बणाया। चार कुण्ट भिड़े भेड़, वाह वा खेल वखाया। गुरमुखां हत्थीं छेड़ां छेड़, आपणा मुख छुपाया। पैहलों आपणा तन कीता ढेर, फेर गुरसिखां नाल मिलाया। सिँघ हो के प्रगटया शेर, डंका शब्द सुणाया । जुग जन्म दे लिआंदे घेर, आपणा मेल मिलाया। मिल्या मेल ना सके कोई नखेड़, एका बंधन पाया। छत्ती जुग दा चुक्कया फेर, छत्ती छत्ती रंग वखाया। बिन हत्थां बांहवां होया दलेर, आपणा काज रिहा रचाया। जन भगतां बहत्तरां मिल्या पहली वेर, पैहला सगन मनाया। पुरख अबिनाशी हो दलेर, आपणा पल्ला भारा आप कराया। बिन भगती कीती मेहर, बिन नामे नाम झोली पाया। ना कोई करया हेर फेर, गोबिन्द वचोला नाल रलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, भगत दवारा विच्च संसार, साची नींह दए धराया। .... (१६ कतक २०१८ बि)

इक्की पोह कहे मेरी गोबिन्द ने रक्खी धार, धर्म नाल जणाईआ। बवंजा कवीआं दा उधार, बावन दा लेखा नाल मिलाईआ। पंजां दा लहणा विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। लेख लेखणी करे पुकार, कलम कलमां तों बाहर सीस निवाईआ। किरपा करीं मेरे निरँकार, तेरे हंथ वडयाईआ। तेरा बदलदा जांदा समां बदल जाणा विवहार, बदली होवे थाउँ थाईंआ। मैं कूक के करां पुकार, जोर जोर नाल सुणाईआ। भगत भगवान दी धार होवे दीवार, धरनी उत्ते सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया जन भगतां अंदरों कढ़ुणी बाहर, तन वजूद रहण ना पाईआ। सति सच दा बख्श प्यार, देणी माण वडयाईआ। मैं अग्गे रहवां जुग चार, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। सतिजुग विच्च मैनूं इक्की फुट करेगी सारी सृष्टी दी सरकार, इक्की इक्की इक्की इक्की सौ फुट आपणा चौगिर्द लवां बणाईआ। मेरे

नौं भगत दवारे एस भगत दवारे दे होणगे बाहर, धरती एसे उत्ते सोभा पाईआ। जिन्नां दीआं चोटीआं उत्ते पूरन सिँघ दी भसम चढ़ेगी खार, इक्क इक्क हड्डी उत्ते देणी टिकाईआ। एह वस्तूआं सांभ के रक्खणीआं पिच्छों ससकार, जल भेट ना कोई कराईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एसे दी होवे यादगार, याद याद विच्चों समझाईआ। एह तत्तां वाला शरीर सदा रहणा नहीं संसार, तन वजूद नज़र कोई ना आईआ। जन भगत सज्जण मीत सुहणे नाल यार, यराने धर्म धार रखाईआ। एह खेल अगम्म अपार, हरि करता आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। (२१ पोह श सं ६)

हरि भगत दवार दिल्ली :

५ कत्तक शहनशाही सम्मत १, २६० धीरपुर दिल्ली दरबार दी नींह रक्खण समें :

पंज कत्तक कहे मेरा मालक निरँकार, दो जहानां मलकीअत आपणे हत्थ रखाईआ। आदि जुगादि सच्ची सरकार, धुर दी धार हुक्म प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी विच्च संसार, नित्त नवित्त वेख वखाईआ । नव नौ चार कर के पार, परम पुरख प्रभ आपणी दया कमाईआ । लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख अखाड़, दह दिशा खोज खुजाईआ। पैगम्बर गुरू वेख अवतार, भगत सुहेले भेव चुकाईआ । इष्ट दृष्ट वेख विवहार, बहुभांती वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान, परदे रिहा उठाईआ। हर घट अंदर वेखे मार ध्यान, बिन अक्खां वेख वखाईआ। सम्मत शहनशाही कर प्रधान, लोकमात दित्ती वडयाईआ। हुक्म धुर दा इक्क फ़रमान, फ़रमाबरदार दित्ता समझाईआ। नौ सत होए हैरान, हैरानी घर घर नज़री आईआ। सच्यां भगतां बख्श इक्क ज्ञान, अज्ञानी करे हलकाईआ। धर्म दवारे दे के माण, ममता दित्ती मिटाईआ। सति सच वखा निशान, निशाना इक्को दित्ता जणाईआ। ढोला दस्स के ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"" भाग सभ दा दित्ता बदलाईआ। खेले खेल नौजवान, नौबत आपणा नाम वजाईआ। सच दवारा कर परवान, परम पुरख होए सहाईआ । दिल्ली दरबार खोल्लया आण, आनण फानण वेखे सर्ब लुकाईआ। शब्दी जोधा हो बलवान, बलधारी वेख वखाईआ। नाम खण्डा खिच्च अगम्म कमान, चिला तीर अणयाला आपणे हत्थ रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे इक्क मैदान, मददगीर ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

कत्तक कहे मैं होया खुशहाल, पंच परविष्टे मिली वडयाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल, दया दित्ती कमाईआ। भगत सुहेले गुरमुख सोहणे लाल, लाल रिहा वडयाईआ। सच दवारा वखा के धर्मसाल, भगत भगवान होए सहाईआ। पूरबला पूरब वेख मैदान, धरती धरत रिहा वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

पंज कत्तक कहे मैनूं याद आउँदा चेता, चेतावनी नाल जणाईआ । इथ्थे इक्की दिन कृष्न सौंदा रिहा उपर रेता, दूजा संग ना कोई वखाईआ। दूजा तक्कदा रिहा पुरख अकाल दा शब्दी बेटा, जो हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जिस दा कोई ना जाणे लेखा, कागज़ कलम

ना लिखे शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

पंज कत्तक कहे मैनूं याद आई उह धार, जो धरनी दए गवाहीआ। तिन्न दिन कृष्न सुत्ता सी मूंह दे भार, दक्खण दिशा कोना वंड वंडाईआ। मस्तक रगढ़ करे निमस्कार, सीस गर्दन उत्ते टिकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, त्रिलोकी नाथ दए गवाहीआ। अगम्मी दिसदा चमत्कार, जलवा शहनशाहीआ। निरगुण रूप तेरा निरंकर, मालक इक्क अखवाईआ। साचा बख्श उह प्यार, जिस नूं वेखे ना कोई लुकाईआ। तेतीवें साल दा एह विहार, उमर अवसथा आयू अंकड़िआं विच्च वंड वंडाईआ। पुरख अकाल हो दयाल, बाहों पकड़ गले लगाईआ। उह वेख खेल कमाल, कमलापात दए जणाईआ। दीनां बंधप दीन दयाल, दयावान होए सहाईआ। कलिजुग अन्तम सति सच बणावां उच्च दवार, जिथ्थे दवारका वासी सीस झुकाईआ। जमना तट्ट सुण पुकार, देवे माण वडयाईआ। धुर दे सज्जण मीत मुरार, विछड़े गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी खोलू किवाड़, जगत किवाड़ बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। पंज कत्तक कहे कृष्न कहाए त्रिलोकी नाथ, लोक तिन्न वडयाईआ । बरदा तेरा चाक, सेवक सेव कमाईआ। गोपीआं वाली रास, सखीआं नाल वडयाईआ। गवालिआं रक्खां पास, भज्जां वाहो दाहीआ। तेरी इक्को याद, अन्तर अन्तर समाईआ। धूढ़ी टिक्का ख़ाक, मस्तक सोभा पाईआ। जोड़ के दोवें हाथ, सीस दित्ता झुकाईआ। तूं मेरा रघुनाथ, रहबर बेपरवाहीआ। धुर दा देणा साथ, आदि जुगादी संग निभाईआ। कलिजुग होवे अन्धेरी रात, कुण्ट चार अन्धेरा छाईआ। साची दिसे ना कोई प्रभात, नूरो नूर ना कोई रुशनाईआ। पुरख अकाल किहा मैं प्रगट होवां साख्यात, जोती जोत डगमगाईआ। जिनां जुग चौकड़ी रिहा आख, भगतां दिआं वडयाईआ। मानस जन्म विच्च देवां शाबास, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। मेरा तत्तां वाला नहीं होणां लबास, नूरो नूर जलवा बेपरवाहीआ। गोबिन्द होणा घाट, पतन इक्को दिआं समझाईआ। नव नौं चार दी मेटां वाट, वाटां दूर कराईआ। धर्म दवारा खोलू के हाट, जगत हटवाणे दिआं खपाईआ। कृष्न तेरी ज़रूर पूरी करां बात, बेवतनां दा वतन दिआं वसाईआ। सच दवार कर के आबाद, आबादी सृष्टी दी देवां घटाईआ। मेरे कोल सभ तों वक्खरी अनोखी जाच, जाचक आपणे लवां तराईआ। लग्गण ना देवां कोई आंच, अगनी अग्ग ना कोई तपाईआ। उस वेले सम्मत शहनशाही कत्तक महीना उपर दिवस होवे पांच, पंचम मेला सहज सुभाईआ। जिस दुआरिउँ सारी सृष्टी बणनी इक्क निक्की जेही बरांच, हुक्मनामे चारों कुण्ट सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

पंज कत्तक कहे कृष्न गद गद, गद्दी आपणी दित्ती तजाईआ। मैनूं भुल्ल गए यादां वाली उह यद्द, यदप तेरा खेल वेख वखाईआ । ओस वेले गुर अवतारां पीर पैगम्बरां असां सभ कुछ देणा छड्ड, छड्डणी जगत लोकाईआ। इक्को लँघ के पार हद्द, दवारे धुर दे सोभा पाईआ। कोटन कोट वार तत्त सरीर गए लद्द, चोली जगत मात हंडाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, बेअन्त बेपरवाहीआ। निरगुण धार वखाउणा ओस अगम्मी अक्ख, जिस दा रूप रंग रेख ना कोई वखाईआ। अबिनाशी करता वेख सहजे दित्ता

जणाईआ। जुग चौकड़ी सभ कुझ मेरे वस, वास्ता आपणे नाल रखवाईआ। सभ दा लहणा देणा कर के बस्स, बस्ते बिस्तरयां विच्च बंधाईआ। हरि भगत गुरमुख सुहेले कर इक्ठ, इकट्ठयां दिआं वडयाईआ। सच दरबार दी नींह रक्ख, प्यार दी जड़ दिआं प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरा भगतां वाला पक्ख, भुल्लयां देवां सज़ाईआ। गुरमुखां दी सेवा दा एह पिच्छला रस, रस्ता सृष्टी दए वखाईआ। जिस दे निशाने उत्ते सदी पिच्छों खर्च होणा सवा लक्ख, निशाना धर्म इक्क झुलाईआ। किसे दा रहण नहीं देणा कोई वस, वसीकार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पूरब लहणा वेख वखाईआ।

पंज कत्तक कहे मेरा करो कदर, कुदरत दा कादर रिहा मिलाईआ। जो पूरी सभ दी करे सधर, सदमा रिहा चुकाईआ। जिस ने सभ दा लेखा देणा बदल, बदली करे लोकाईआ। ओस दा धाम अव्वलड़ा इन्साफ़ वाला अदल, अदालत इक्क लगाईआ। कूड़ी क्रिया कर के कतल, मकतूल कलिजुग लए बणाईआ। गुरमुख हीरे बणा के रतन, लक्ख चुरासी विच्चों बाहर कढ़ाईआ। किसे दा कोई चल्लण नहीं देणा यतन, यथार्थ आपणा हुक्म वरताईआ। तिन्न साल सुख नाल किसे नूं देणा नहीं वसण, वसीआ कर के हुक्म मनाईआ। जन भगतां दवारे भगवान नींह आया रक्खण, जगत वाली ना कोई वडयाईआ। मानस जन्म दा अख़ीरी वखा के पतण, पतरयां विच्चों बाहर कढ़ाईआ। अन्तम लै के जाए ओस वतन, जिस दे विच्चों होई जुदाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दी भगती वाली आया नींह रक्खण, जिस दी जड़ ना कोई उखड़ाईआ।

पंज कत्तक कहे मैनूं सोहणा लग्गे विहार, खुशीआं वाली घड़ी सुहाईआ। दिशा दक्खण शुरु होवे उसार, इट्ट बाहरली सीस झुकाईआ। नौं इंच दा जिस प्यार, नौ नौ सीस झुकाईआ। अंदर लहणा वारो वार, मिले माण वडयाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रक्खे नाल प्यार, प्यार दे बंधन पंजां लेखां विच्च बन्द कराईआ। पंज शब्द लिखणे नाल प्यार, प्यार धुर दा दए बणाईआ। जिन्नां उत्ते होवे ""सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान"" जैकार, जै जैकार सुणाईआ। सत सत दी साची कार, करनी दा करता आप कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म दवारे दी नींह दा इक्क शिंगार, वगार दूजे दी दए मिटाईआ। इट्ट कहे मेरी निमस्कार, पंज कत्तक मिली वडयाईआ। आई चल सच्चे दवार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सम्मत शहनशाही अपर अपार, हुक्म रिहा जणाईआ। तूं लग्गणा भगतां दे ओस दरबार, जिन्नां दा दवारा बन्द ना कोई कराईआ। जुग चौकड़ी वसदा रहणा घर बार, घराना इक्को देणा वखाईआ। जिन्नां दा याराना नाल निरँकार, कूड़े नाते गए तुड़ाईआ। ओन्नां दा प्यार प्रेम मुनारा देणा उसार, जो असल विच्चों असल दए समझाईआ। जिस दा सदी पिच्छों सधरां वाला होणा विहार, सद सद सद कर्म सद चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी सेवा लेखे लाईआ।

इट्ट कहे मेरी इक्क बेनन्ती, बिने कर सुणाईआ। जन भगतां दी सोहे संगती, संगत बेपरवाहीआ। मैं दर ते आई मंगती, भिखारन वेस वटाईआ। मैनूं लोड़ नहीं किसे अन्न दी, तृखा ना कोई तरसाईआ। मैनूं आसा इक्को चन्न दी, जो आदि जुगादि करे रुशनाईआ।

मैं ओसे दा हुक्म मन्नदी, मिन्नता कर कर सेव कमाईआ। जन भगतां दा बेड़ा बंनूदी, बंनू के बंनें देवां लगाईआ। मैनूं लोड़ नहीं छप्पर छन्न दी, शहनशाह अग्गे सीस झुकाईआ। मैनूं खिच इक्को गल दी, गल पल्लू पा के दिआं दृढ़ाईआ। जन भगतो धन्न उह आत्म जो परमात्म दा दर मलदी, मालक इक्को रही मनाईआ। अग्गे ताकत रही नहीं किसे दे बल दी, वलीए छलीए देणे मिटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे मैं वास्ता पाउँदी कद दी, रैण सबाई सीस झुकाईआ। प्रभू तैनूं लोड़ केहड़ी किसे दल दी, शब्दी हुक्म नाल सभ दी जड़ दे उखड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी खेल अगम्मी पल दी, पलक अंदर ख़लक दे बदलाईआ।

इट्ट कहे मैं आई वैरागण, बिरहों अंदर नीर वहाईआ। होई वड वडभागण, मिल्या बेपरवाहीआ। भगतां आई आखण, सुत्तयां रही जगाईआ। जन भगतो मैं तुहाढ्ढी सेवा करन वाली उह साथण, धुर दा संग बणाईआ। तुहाढ्ढे अंदर जलवा नूरी वेख के बातन, मेरे बाहर वज्जी वधाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दवारे जन भगतां बख्शे सच निवासण, नमस्ते कह के इक्को मंग मंगाईआ।

इट्ट कहे गुरमुखो मेरे उत्ते सारे लाउ पंजा, पंज आब दी बदली दित्ती कराईआ। नाले लेखा मुक्के धार बवंजा, बावन दए गवाहीआ। सीस झुक जाए नाल अकवंजा, इकावन धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सच प्रेम दा अन्तर आत्म पए उह सुपिंजा, जिस नूं सके ना कोई तुड़ाईआ। गुरमुख धार रहे ना कोई दोरंगा, इक्को रंग दए रंगाईआ। मिले मेल सूरा सर्बंगा, सूरबीर जोड़ जुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा दए चुकाईआ।

इट्ट कहे गुरमुखो पंजे वाले मैनूं लाइउ पंजे पोटे, खुशीआं नाल छुहाईआ। मैं इक्को रंग वेखां वड्डे छोटे, नौजवानां विच्च वज्जे वधाईआ। अन्तर मन रहे मूल ना खोटे, सति सच मिले वडयाईआ। कूड़ी क्रिया दे होणे टोटे, टुकड़िआं विच्च वंड वंडाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बणा के आपणे पोते, गोबिन्द पुत्तर दी गोद बहाईआ। (५ कत्तक शहनशाही सम्मत १)

१५ कत्तक शहनशाही सम्मत १ दिल्ली हरि भगत दवार बणौण दे समें,
२६० धीरपुर दिल्ली :

पंदरां कत्तक कहे मेरा आ गिआ समां, सम्मत शहनशाही वज्जे वधाईआ। दो जहानां तोड़ के तमां, ममता छड्डी सर्ब लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी पौणी विच्च गमां, गहर गम्भीर हुक्म वरताईआ। सच्चा मार्ग दस्सणा नवां, नव नौ चार हुक्म सुणाईआ। सुगंध खा के सच कहवां, कसम नाल दृढ़ाईआ। आपणी करनी तों कदे ना भवां, भावनी वेखवां थाउँ थाईंआ। कूड़ कुड़िआरे करके जमूं, जमां दे हत्थ दिआं फड़ाईआ। जूठ झूठ दी मेट के शमां, सच दीपक करां रुशनाईआ। जुग जन्म दा लेख सभ तों लवां, लहणेदार हो के फेरा पाईआ। प्रेम प्यार दा लेखा दवां, साजण साचे मेल मिलाईआ। अगम्मी हुक्म करां रवा, रवानगी परवानगी नाल मिलाईआ। खुशीआं विच्च सुहञ्जणी नींद सवां, दुक्खवां विच्च वेखवां सर्ब लोकाईआ। इक्को साहिब दे चरनी बहिवां, बाकी करां अन्त सफ़ाईआ। इक्को पुरख दी चरनी ढवां, ढाह ढेरी दीन दुनी दिआं मिटाईआ। सूरबीर मर्द मरदान

जोधा हो के डहवां, अखाड़ा वेखवां थाउँ थाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा वेला रिहा सुहाईआ।

पंदरां कत्तक कहे मैनूं चाउ घनेरा, बिन रागाँ नादां वज्जी वधाईआ। मेरा स्वामी ठाकर मिल्या नेरन नेरा, बिन पैरां पन्ध मुकाईआ। जिस ने दो जहान दा वखाया अगम्मी गेड़ा, पर्दा दित्ता चुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्मे अंदर हुक्मी झेड़ा, धुर फ़रमाणा इक्क समझाईआ। जगत वस्सया ना दिसे खेड़ा, उखेड़ा दिसे दीन दुनी लोकाईआ। जिस परमेश्वर नूं करदे रहे बखेड़ा, उह बखतावरां दी करे सफाईआ। जिस दा शब्द अगम्मी बिना पंजां उगलां तों वज्जे लफेड़ा, चोट अगम्मी इक्क लगाईआ। नव सत्त करे अन्धेरा, निरगुण नूर ना कोई रुशनाईआ। शब्दी शब्द पाए घेरा, हुक्मी हुक्म भय वखाईआ। कूड़ी क्रिया नूं सांभण वाला इक्को बथेरा, बाकी सभ दी करे सफ़ाईआ। सच दवार दा खुल्ला वेहड़ा, भगतां दए वडयाईआ। सच झूठ दा कर नखेड़ा, वक्ख वक्ख दए बठाईआ । जिस दा नाम सिँघ शेरा, शेर हो के भबक दए सुणाईआ। कलिजुग साध सन्त फ़सलां वाला वेख बटेरा, जाल आपणा लए फैलाईआ। इके हुक्म दा ला उखेड़ा, सफा दए उलटाईआ। हकीकत विच्चों करनहारा हक़ नबेड़ा, सच तोफ़ीक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा बणाईआ।

पंदरां कत्तक कहे मैनूं बहुते कहन्दे कारतक, किरत कर्मां वाली गाईआ। मेरा लेखा कोई ना समझे आरथक, अरथ भाव ना कोई लगाईआ। समझ पाए ना कोई शास्त्र, शस्त्र पर्दा ना कोई चुकाईआ। रमज़ जाणे ना कोई अस्तिक, इशारयां विच्च ना कोई वडयाईआ। लेखा बुज्झे ना कोई नास्तिक, नशिआं विच्च खुशी ना कोई मनाईआ। पंदरां कत्तक कहे मैं परम पुरख दा याचक, आदि जुगादि जुग चौकड़ी अगम्मी सेव कमाईआ । बिना गोबिन्द दे मेरा बणया कोई ना वाचक, चार जुग समझ किसे ना आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी मेरे बिवहार उत्ते पेश हुंदी रही दरखवाशत, जुग चौकड़ी लिखवत वार समझाईआ। अगम्मा खेल मेरा वास्ताक, वास्ता सभ दे नाल रखवाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों भगत सुहेले वेखां पारस, सच सरूपी खोज खुजाईआ। इलमां विच्च बण के आया आरफ़, कलमां विच्चों वंड ना कोई वंडाईआ । तेई अवतार समझ ना सके विच्च भारत, इबारत सही ना कोई लिखवाईआ। जो आया सो करदा गिआ सफ़ारश, सिफ्तां नाल वडयाईआ। नैण खुल्हिआ ना किसे महांपारख, तीजा नेत्र ना कोई जणाईआ। समझ ना आई किसे स्वासथ, स्वास स्वास बैठे साह सुकाईआ। मेरा खेल चलदा रिहा बरासत, रास्ता आपणे विच्च लुकाईआ। थोड़ा जिहा लहणा देणा नाल शेश बाशक, विष्नूं सांगो पांग सुहाईआ। जेहड़ा इक्क इक्क दा उपाशक, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो वेला रिहा सुहाईआ।

पंदरां कत्तक कहे मेरा सारे तक्कण राह, रहबर इक्को वेख वखाईआ । पीर पैगम्बर गुर अवतार मंगदे गए दुआ, बिन हत्थां झोलीआं अग्गे डाहीआ। अमृत वेला सुहौंदे गए सुब्बा, सोहणी रुत्त वडयाईआ। आपणी बदलदे गए तब्बा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दरोही दरोही करदे गए रब्बा, खुद खुदा तेरी शरनाईआ। बेशक लोकमात विच्च पंजां तत्तां वाला

मिल्या औहदा, सिफ्तां नाल सालाहीआ। साडा लेखा चार जुग इक्क गरोह दा, अन्तम मेला सहज सुभाईआ। कलिजुग लेखा वेख कूड़ धरोह दा, सारे तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। प्रभू इक्क कतरा बख्श आपणी लो दा, जो चौदां लोक परलोक करे रुशनाईआ। साचा नाता बख्श आपणे मोह दा, कूड़ी ममता दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंदरां कत्तक कहे मैं वी तक्कां उह कद दा, कदीम तों ध्यान लगाईआ। लेखा वेख्या पिच्छली हद्द दा, हदूद दित्ती मुकाईआ । ढोला सुण के इक्को छन्द दा, मेरी वज्जी सच वधाईआ । पैंडा मुक्कया कूड़े पन्ध दा, कदम कदम दा लेखा दित्ता मिटाईआ। लहणा लैणा इक्क अनन्द दा, जो अनन्द अनन्दपुरी वाला गिआ समझाईआ। प्रकाश वेखणा ओस चन्द दा, जिस नूं तारे चन्द सीस झुकाईआ। नज़ारा तक्कणा ओस ब्रह्मण्ड दा, जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव वेख आपणी खुशी जणाईआ। हुक्म तक्कणा सूरे सर्बंग दा, सभ दे लहणे देणे आपणे चरनां विच्च टिकाईआ। जिस दा लेखा कदे नहीं अग्गे बन्द दा, जुग जुग बन्दना बन्दगी आपणी आप लए प्रगटाईआ। जेहड़ा किसे कोलो नहीं मंगदा, देवणहारा इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वडयाईआ।

पंदरां कत्तक कहे मैं शहनशाही सम्मत दा समें वाला महीना, महांबली मैनूं देवे वडयाईआ। मैं फिरनां विच्च लोक तीनां, त्रैगुण माया देणी उठाईआ। मैं शाह सुल्तानां काया देणा पसीना, पेशानीआं उत्ते हत्थ फिराईआ। सभ नूं मुशकल होवे जीणा, जीवण विच्च मौत साहमणे नज़री आईआ। सुख दा दिसे ना खाणा पीणा, दुक्खां दर्दी विच्च लोकाईआ। मैं परम पुरख दा प्यारा कोई नहीं कमीना, कमीनिआं दे कमीने सारे देणे खपाईआ। इके गोबिन्द सूरा पारवर असव उत्ते पौणहारा जीना, जिस सीने देणे हिलाईआ। दीन दयाल साहिब किरपाल सभ कुछ आपे कीना, कीमीआं कीमीआं वेखे लोकाईआ। भगतां बणा के आपणा सच दा धुर नबीना, कीमत आपणे घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

पंदरां कत्तक कहे मैनूं याद आई नव नौं चार, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। संदेशे देण गुर अवतार, पैगम्बर गए समझाईआ । जिस वेले आवे कलकी अवतार, मैहन्दी आपणा रूप वटाईआ। भविख्तां दा सरदार शाहां दा निरँकार, जोती जाता नूर खुदाईआ । जिस दा इक्को इक्क दरबार, दूजा दर ना कोई खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया कर के ख़बरदार, बेख़बरां दए उठाईआ। इक्को नाम खण्डा खड़ग लै के तलवार, तलीम सभ दी दए बदलाईआ। ऊँच नीच जात पात कूड़ी क्रिया पधर कर के हम वार, हम साजण आपणे वेख वखाईआ। सुत्तयां नूं कर के बेदार, गाफ़लां दी गफ़लत विच्चों अक्ख दए बदलाईआ। थोड़ा रिहा लेखा पंदरां कत्तक कहूं ओस दिल्ली दरबार, जिस दा कृष्न इकी दिन आपणा ध्यान लगाईआ। जिस दा मंज़ल वाला मनार इक्क तों दो दो तों जाए चार, चार दा विहार आपणे हत्थ रखाईआ। सारी सृष्टी नूं कर के ख़बरदार, होका देवे थाउँ थाईंआ। हुण लुकया रहणा नहीं विच्च संसार, पर्दा आपणा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी मेरी वंड वंडाईआ।

पंदरां कत्तक कहे मैनूं सारे कहो शाबाश, मैं जुग चौकड़ी दा सुनेहड़ा दित्ता सुणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी आसा रक्ख के आपणे पास, अन्तम दित्ती प्रगटाईआ। अगला खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हुक्म नाल मनाईआ। मेरी खुशी भगतां साथ, साथी सोहणे दित्ते बणाईआ। प्रेम प्रीती दा जोड़ के नात, कूड़े रिशते दित्ते छुडाईआ। गुरमुखो अज्ज सोहणी आई प्रभात, आपणा रंग बदलाईआ। बेशक तुसीं सुत्ते रहे रात, पुरख अकाल ब्रह्मण्डां खण्डां विच्चों तुहाढ्ढा प्रेम पूरबला खिच्च के आपणे नाल लिआईआ। जे इक्ठा कीता ते मैनूं बख्श एह सुग़ात, सुगंधी चार कुण्ट महकाईआ। मेरा सोहणा हो गिआ मजाज, खुशी अंदरों खुशी रही वखाईआ। जिथ्थे सति धर्म दा चलणा इक्क रिवाज, दूजी रवादारी ना कोई बणाईआ। जिस नूं विद्या वाला समझ ना सके कोई दिमाग, कुतबखानिआं वाली लुगात ना कोई दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा वक्त रिहा सुहाईआ।

पंदरां कत्तक कहे जन भगतो खुशीआं नाल मेरा करयो विहार, मैं दो जहानां देवां सुणाईआ। एह दर नहीं एह घर नहीं एह दिल्ली नहीं एह दिलां दा दरबार, जो दिलबरी यार रिहा मिलाईआ। भगतां दा बाज़ार, बाज़ी सभ दी दए उलटाईआ । जिस ने बणाया आपणे कुमार, कामना पूरबला पूरब वेख वखाईआ । जिन्नां दा कोटां विच्चों थोड़ा शुमार, अनगिणती विच्चों गिणती लई प्रगटाईआ। एह कोई टकयां वाला नहीं वपार, सौदा प्रेम हट्ट विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ।

पंदरां कत्तक कहे अज्ज सोहणा लग्गे दिहाढ़ा, त्योहारां विच्चों त्योहार विवहारी नज़री आईआ। मेरा जुग जुग दा पूरा होया लारा, लवारस नूं वारस दित्ता बणाईआ। मेरे प्रेम दा मिल्या मैनूं प्यारा, प्रेमी हो के प्रेम दित्ता वरताईआ। प्रभू दिआं भगतां दा बणन लग्गा दरबारा, दरबारी जिथ्थे इक्को सोभा पाईआ। जिस दा सभ नूं तक्कणा पए नज़ारा, नज़ामां दे मालक नजाम छड्ड के सीस झुकाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ ने बोल के धुर जैकारा, इट्ट इट्ट देणी लगाईआ।

इट्ट कहे मेरी सुणिओ अर्ज़, अरजन गुरू मेरी दए गवाहीआ । रामदास सरोवर उत्ते मेरी ओस नूं पई गरज, ओस दी गरज अज्ज मेरा संग निभाईआ। ओस दी मंग दुखीआं दा इक्को वंडण वाला दर्द, पुरख अकाल सच्चा शहनशाहीआ। जिस दे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी लक्ख चुरासी फरद, फ़ैसले हक़ हक़ सुणाईआ । जोधा सूरबीर मरदाना मर्द, नित नवित्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा मुकाईआ।

इट्ट कहे मेरी मन्नओ इक्क अरदास, जन भगतां दिआं जणाईआ । तुसीं मेरा देणा साथ, धुर दा संग बणाईआ। गुरू अरजन पूरी होवे आस, आशा नाल मिलाईआ। किरपा करे पुरख समराथ, समरथ दए सरनाईआ। मेरे उत्ते ज़रूर लिखओ "सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै" दी सच्ची गाथ, सतिजुग दी साची सच पढ़ाईआ। मेरी पूरी हो जाए आस, अग्गे आसा होर बणाईआ । फेर सदा बणया रहे सति दा विश्वास, विशिआं वाली ना कोई लड़ाईआ। एहो मंग गुरू अरजन मंगी ख़ास, ख़ाहिश पिच्छली याद आईआ।

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे होण ना देवे निरास, निवास सभ दा आपणे नाल रखवाईआ।

इट्ट कहे मैनूं पैहलों रक्खयो दिशा दक्खण, दच्छणा सभ दी झोली पाईआ। क्यों तुसीं प्रभ दे भगत बण के मेरे अंदर आए वसण, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। प्रेम प्रीती विच्च आए हस्सण, कूड़ी क्रिया ग़मी मिटाईआ। मैं तुहानूं लग्गी दस्सण, सच सच समझाईआ। मातलोक दा तुहाड्ढा बणावां उह वतन, जिथ्थे बेवतनां दा होए सहाईआ। धुर दा वखावां पतन, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। तुहाड्ढी पत पतिपरमेश्वर आपे आए रक्खण, मैं शहादतां नाल देवां गवाहीआ। लेखा मुक्क जाए उत्तर पूरब पच्छिम, पशचाताप रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

इट्ट कहे मैं सभ नूं दिआं असीस, असल असल नाल मिलाईआ । तुहाड्ढा मालक इक्क जगदीश, जग जीवण दाता शहनशाहीआ। साचे प्रेम दी करे बख्शीश, रहमत प्यार झोली पाईआ। अन्तर अन्तर कर अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, अगनी तत्त देवे बुझाईआ। जन भगतां चला के धर्म दी रीत, धर्म दा धर्म दए वखाईआ। पत्तित पापी कर पुनीत, पवित्र लए बणाईआ। झगडा चुका के ऊँच नीच, राओ रंक इक्को दर सुहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे नाम दा चाढ़ के रंग मजीठ, चिट्टी धार सभ दी वेख वखाईआ । इट्ट कहे मेरी अन्त अख़ीरी इक्क इतलह, सहज नाल सुणाईआ।

सभ दा मालक इक्को इक्क मलाह, बेड़ा धुर दा नाम चलाईआ। आत्म परमात्म दस्से राह, रहबर नूर खुदाईआ। जो जुग जन्म दे विछड़े होए जुदा, अन्तम आपणे विच्च मिलाईआ। किरपा कर साहिब मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। दो जहानां वाली शहनशाह, सति सतिवादी वेख वखाईआ। सच प्रेम नाल जिनां सेवा लई कमा, कामना सभ दी पूर कराईआ। अग्गे जमां तों लए छुडा, जामनी आपणी विच्च रखवाईआ। सिध्धा सचखण्ड दवारे लै के जावे साचे थां, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। जोती जोत जोत लए मिला, मिलावट होर ना कोई बणाईआ। सच दवार सच गोद गोबिन्द नाल लए सवा, जिथ्थे सुत्तयां ना कोई उठाईआ। ओथ्थे ना कोई पिता ते ना कोई मां, इक्को पुरख अकाल नज़री आईआ। इट्ट कहे मैं सच कहवां, क्यों कि जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणे अंदर रही लुकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पिच्छे दित्ता समां, समाप्त कीती सर्ब लोकाईआ। इट्ट कहे मैनूं हत्थ लावे पैहलों सभ तों छोटा बच्चा, मैं छोटयां तों वड्डे देणे बणाईआ। एस दवारे ते आ के कोई ना रह जाए कच्चा, कच्चआं दे पक्के देणे वखाईआ। जिस नूं परम पुरख परमात्मा दा नहीं पता, पतिपरमेश्वर उहनूं देणा मिलाईआ। जिथ्थे लेखा सभ दा इक्को जिहा रक्खा, जात पात वंड ना कोई वंडाईआ। मेहरवान प्रेमीआं प्यारयां नूं वेखे आपणी ओस अक्खां, जेहड़ी अक्ख जगत नज़र ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, छोटा बाला निक्का जाण के सच्चा, सच संगत दी सेवा दए लगाईआ। (१५ कत्तक शहनशाही सम्मत १)

बीबी चरनी जो के सच्चे पातशाह जी दे चरनां विच्च सेवा करदी होई
उनां दे हुक्म अनुसार आपणे स्वास पूरे कर के सचखण्ड
चली गई उस दे अन्तम ससकार समें
विहार होया :

सत्त सावण कहे मेरीआं खुशीआं भरीआं रस दीआं, रसना जेहवा कहण किछ ना पाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ीआं वेखीआं वसदीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर ध्यान लगाईआ। शब्दी धार धुर दीआं धारां मैनूं खबरां दस्सदीआं, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जोतां वेखीआं नस्सदीआं, भज्जीआं वाहो दाहीआ। चमत्कारां वेखीआं रव सस दीआं, जोत नूर नाल रुशनाईआ। एह खेलां नहीं किसे दे वस दीआं, विष्न ब्रह्मा शिव रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ।

सत्त सावण कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा आया, खुशी मिली वडयाईआ। भगत सुहेला श्री भगवान प्रनाया, मेल मेलया चाईं चाईंआ। पूरब लेखा बिन झोलीउँ झोली पाया, तन वजूद समझ किसे ना आईआ। निरगुण धार दरस दिखाया, जोती जोत जोत समझाईआ। तेरा लहणा देणा निरगुण आपणे हत्थ रखाया, सरगुण चले ना कोई चतुराईआ। पूरब धार दा पूरब लेखा परदा परदिआं विच्चों चुकाया, समझ तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ।

भगत कहे मैं तन नहीं वजूद, माटी खाक ना कोई वडयाईआ। मेरी जगत नहीं हदूद, दीन दुनी रंग ना कोई रंगाईआ। मेरा मालक इक्क महिबूब, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी मेरे तत्त करदे पूज, सेवा विच्च समाईआ। भउ मिटाए दूआ दूज, दुतीआ लेखा दए चुकाईआ। जिस मेरा पूरब लेखा लिआ बूझ, जन्म जन्म दा लहणा आपणे हत्थ रखाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द ने दित्ती सूझ, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा तत्त काया कलबूत, पंज तत्त ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। सत्त सावण कहे मैं अक्खां लईआं खोलु, दोह हत्थां नाल दबाईआ। सुणया अगम्मी बोल, अणबोलत दित्ता जणाईआ। उह तक्क लै भगत आया भगवान दे कोल, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सच दवारे होवे चोहल, चोली रंग रंगाईआ। झट्ट उसे वेले सतिगुर शब्द वजाया ढोल, मरदंगा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सत्त सावण कहे मैं वेखी आत्मा धार, निरगुण निरगुण दित्ती जणाईआ। जो जगत छड्ड संसार, भज्जी वाहो दाहीआ। दीन दुनी दा पन्ध निवार, ब्रह्मण्ड खण्ड तजाईआ। जिस नूं सारे करन निमस्कार, रव सस मण्डल मंडप लागण पाईआ। देवत सुर करन जैकार, गण गंधरव ढोले गाईआ। विष्न ब्रह्मा जाण बलहार, बल बल आपणा आप कराईआ। अवतार पैगम्बर कहण प्रभू तेरा भगत बड़ा होणहार, सूरबीर इक्क अखवाईआ। जिस दीन दुनी छड्डया कूड़ प्यार, मुहब्बत तेरे चरन टिकाईआ। दरगाह साची पुज्जया आपणी आपणी वार, बण के धुर दा माहीआ। घर दीआ बाती कमलापाती आपणे कर उजिआर,

सचखण्ड साचे कर रुशनाईआ। एह आत्मा चरन कौर नहीं एह चवीए अवतार दा सरदार, सिरताज इक्क अखवाईआ। जिस ने लेखा कीता भगत दवार, जन भगतां रीती भगतां वाली समझाईआ। असीं सारे इक्ट्ठे हो के करीए निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। तेरे तेरे उतों बलिहार, तेरे तेरे रंग रंगाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले देणी पैज सवार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ।

अवतार पैगम्बर गुर वेख के खुशी मनाउण, सोहणा रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गावण गाउण, ढोले धुरदरगाहीआ। निरगुण धार निरगुण फुल्ल बरसाउण, जगत पत्त टैहणी कली नज़र कोई ना आईआ। प्यार मुहब्बत विच्च आपणा आप प्रचाउण, परचे भगती वाले तक्कण चाईं चाईंआ। जिस ने खेल खेलया सत्त सावण सौण, सोहणी बणत बणाईआ। उस दा संदेशा दो जहानां मिले बिना पाणी पौण, पवण उनंजा बैठी सीस निवाईआ। एह भेव अभेदा जाणे कौण, भगत कहण किछ कोई ना पाईआ। एह भगत प्यारा धर्म दवारा मार्ग भगती वाला आया दरसाउण, दरस कर के आपणी खुशी मनाईआ। बुरज हँकारी दीन दुनी दा आया ढाहुण, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। भगत दवार आया वसाउण, सदा सद विच्च आपणा डेरा लाईआ। आपणे माता पिता नूं आया वरचाउण, खुशीआं नाल सुणाईआ। मेरे मरन तों बाद मेरे कुटम्ब वाले कदी ना रोण, जीवत जीअ जीअ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

अवतार पैगम्बर गुर कहण पुरख अकाले साड्डी अगम्मी गल्ल मन्न, मनसा दो जहान नाल रखवाईआ। भगत सुहेला तेरा चन्न, नूर नूर विच्च रलाईआ। लोकमात बेड़ा बंनू, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। चरन कौर दा लेखे लाउणा तन, वजूद आपणे संग रखवाईआ। जिथ्थे ना कोई हरख सोग ग़म, चिन्ता चिखा रहे ना राईआ। दुनी विच्च फेर पए ना जम्म, चुरासी वंड ना कोई वंडाईआ। तेरे विच्च मिल्या तेरा ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। अग्गे वास्ते साड्डा तेरे नाल धरम, धर्म दे मालक देणी दया कमाईआ। एस दा वेखणा हड्ड मास नाड़ी चर्म, चम्म दृष्टी दा डेरा ढाहीआ। अवतार पैगम्बर गुरू कहण एहदीआं हड्डीआं मास नाड़ी राख नाल हरि भगत दिल्ली दवार दीआं नीहां भरन, एसे वास्ता एहदा लेखा दित्ता मुकाईआ। चार जुग दे शास्त्र एहदी गाथा पढ़न, अगला लेखा फेर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग बणाईआ।

आत्म धार मिली विच्च निरँकार, निराकार विच्च समाईआ। तन वजूद दा लहणा विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखो चाईं चाईंआ। सम्मत शहनशाही दस रिहा ललकार, कूक कूक सुणाईआ। जिस पुरख अकाले दीन दयाले कलिजुग कूड़ी क्रिया दीन दुनी चों कढ़ुणी बाहर, लोकमात रहण ना पाईआ। उह भगत दवारा करे त्यार, जमन किनारा इक्क सुहाईआ। जिथ्थे कृष्न काहन ने मारी लकार, सखीआं संग सुखन दित्ता सुणाईआ। जिस वेले आवे कल कलकी करनेहार, करता पुरख धुरदरगाहीआ। जिस भगतां दा करना भगती नाल विहार, भगतन आपणे रंग रंगाईआ। दीन मज़हब तों वसे बाहर, जात पात

ना कोई रखवाईआ । शाह सुल्तान शब्द दी मारे मार, नाम खण्डा इक्क चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहण पंज तत्त जगत होणे सवाह, मिट्टी खाक नज़री आईआ। सतारां हाढ़ ने किहा भगतां दे भगत बणओ गवाह, शहादत अवर ना कोई भुगताईआ। पंझी प्रकृतीआं दा लेखा दित्ता सी लिखा, पंजां तत्तां नाल मिलाईआ। पंझी पंझी फुट्ट दा नाप आप समझा, पड़दा पड़दिआं विच्चों उठाईआ । उस लेखे नूं पूरा करना प्रभ दी आदि जुगादी अदा, अदल इन्साफ़ आपणे हत्थ रखवाईआ। बिना भगतां तों शहीदी सके कोई ना पा, शब्द शहीद ना कोई अखवाईआ। पंजां गुरमुखां एहदीआं असथीआं खड़नीआं नाल चाअ, चाउ घनेरा नाल रखवाईआ। जिथ्थे नौं खण्ड पृथ्मी सीस दए झुक, सत्त दीप लागण पाईआ। उस विच्च एहदा तत्तां वाला फोटू देणा टिका, टिक्के नाम वाले छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ। पंज तत्त कहण भगतो असीं करीए प्यार, प्रेमीउँ देईए जणाईआ। मेरा भगत दवार तों बाहर नहीं कोई घर बाहर, मात पित सौहरे पईए दोवें दित्ते तजाईआ। मैं ना चरनी ना चरन कौर मैं सतिगुर चरन दा शिंगार, सोहणा रूप जणाईआ। मैं प्यार नाल कहां गुरमुखो मेरा भगत दवारे विच्चों बाहर कदे ना करयो ससकार, मेरी माटी ख़ाक बाहर उडण कोई ना पाईआ। फिर चुक्क के लै जाइओ दिल्ली दरबार, आपणी खुशी नाल उठाईआ। मैं सौवांगी नींहां हेठ पैर पसार, चार जुग दा आसण लाईआ। मेरे होणगे तिन्न दवार, दरवाज़े तिन्न तिन्न समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

तत्त कहण सानूं अगनी साड़ना की, कीमत करते लई पाईआ। असीं बथेरा जगत लिआ जीअ, जीवण सतिगुर भेट कराईआ । झगड़ा मुक्कणा साढ़े तिन्न हत्थ सीअ, रविदास चुमारा लेखा रिहा लिखाईआ। मैनूं खुशी होणी जिस वेले मैं आसण लाउणा दिल्ली दरबार दी विच्च नींह, नींहां हेठां आपणी सेज सुहाईआ। उस वेले मैनूं हत्थ लाउणगे सिख वीह, इक्कीसा सतिगुर नाल मिलाईआ। मैं संदेशा देवां मैं इक्को परम पुरख परमात्म दी धार ते उसे दी धी, अन्त उसे विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। तत्त कहण जन भगतो मेरी खुशीआं वाली निमस्कार, प्रेम विच्च जणाईआ। मैं बिना नेत्रां तों तुहाढ़ा करां दीदार, खुशीआं विच्च खुशी मनाईआ। मेरी आत्मा पहुंची सचखण्ड सच्चे घर बाहर, गृह आपणे आसण लाईआ। मैनूं दिसदा तुसीं ज़रूर मेरा करना ससकार, अगनी अग्ग अग्ग तपाईआ। टहिल सिँघ एहदा पूरा करे विहार, माचस लहंदिउँ चढ़दे नूं लगाईआ। मेरा वीर वीरो सभ दा खिदमतगार, सच सच सुणाईआ। जेहड़ा सिदक भरोसा देंदा रिहा अधार, अंदर वड़ वड़ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। तत्त कहण साड्डा चरनां नाल प्यार, चरनी नाउँ रखवाईआ। असीं खुशीआं विच्च कहन्दे जन भगतो एहदे उत्ते पाओ हार, जितने भगत दवारे विच्च सारे दिउ टिकाईआ। फेर इकी बोलो जैकार, सोहणे ढोले गाईआ। नाले प्रभू तों मंग मंगो असीं जाईए इसे तरां तेरे दरबार, दरगाह

साची चाईं चाईंआ। मुड़ के आईए ना विच्च संसार, जनणी कुक्ख ना कोई वडयाईआ। मेरा अन्त सभ नूं संदेशा सुणना नाल विचार, बिन रसना दिआं दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ। आत्मा कहे मैं खुशीआं दे विच्च नच्चदी, उछलां कुदां चाईं चाईंआ । मैनूं जग्ग मिली सच दी, प्रभ सच दित्ती वडयाईआ। मैं वणजारी रही नहीं काया माटी कच्च दी, नाता जगत जगत तुड़ाईआ । मैं उस प्रभू विच्च रचदी, जिस दी रचना बेपरवाहीआ। मैं रूप हो गई सति दी, सति सति विच्च आपणा आप मिटाईआ। मैं इक्को दा सत्थर घतदी, जिस दी गोबिन्द यारड़ा सेज हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लया मिलाईआ।

आत्मा कहे मैं मिली आपणे विच्च प्रवार, परम पुरख दित्ती माण वडयाईआ। उथ्थे भगत सुहेले सोंहदे जोत जोत विच्च निरँकार, निराकार आपणे रंग रंगाईआ। मेरा बंस सरबंस सोहणा दिसया दिसया आपणे घर बाहर, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैं वी खुशीआं दा कीता इज़हार, प्रेम दे ढोले गाईआ। धन्न भाग जे छुट्टया संसार, नाता कूड़ आई तुड़ाईआ। अग्गे इक्क दा कर दीदार, दीद इक्क दे नाल मिलाईआ। इक्के नूं कर निमस्कार, इक्क विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे शब्द सतिगुर भगतां दी धार, धरनी धरत धवल धौल वेख विखाईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं गाउँदे वारो वार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले सिफ्त सलाहीआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला पावणहारा सार, भगत सुहेला इक्क अकेला आपणी दया कमाईआ। जिस सेवा दा लहणा दित्ता उफ हाए अन्त दुक्ख झल्लणा पया ना विच्च संसार, झलक विच्च पलक विच्च ख़लक दा नाता दित्ता तुड़ाईआ। आत्मा परमात्मा खिच्ची आपणे दवार, जिथ्थे दवारका वासी कृष्न आसा गिआ रखाईआ। सखी दा सखीआं नाल मंगलाचार, बिन रसना जेहवा ढोले गाईआ। जिथ्थे मेरे वीर प्यारे मेरे नाल करन प्यार, मनजीत जगदीश हस्सण कुद्दण चाईं चाईंआ। सच दस्स की खेल सच्ची सरकार, की आपणा हुक्म वरताईआ। मैं हस्स के किहा उह मित्रा दा मित्र यारां दा यार, सज्जणा दा सज्जण नूर अलाहीआ। मैं इक्क ग़रीब निमाणा सिख सेवादार, सद सेवा विच्च समाईआ। मैनूं पता नहीं लग्गा मैं केहड़े अंदर ते केहड़े बाहर, किस बिध कढ्ढु के आत्मा दरगाह आपणी विच्च लया पहुंचाईआ। मैनूं तिन्न दिन दर्शन विच्च दस्सदा रिहा मैं बोल ना सकी नाल ज़बान, किछ कहण कहण ना पाईआ। मैं वेख वेख के हुंदी रही हैरान, की मैनूं रिहा वखाईआ । मैनूं दिसदे रहे बिन अक्खां तों बिबाण, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं हस्सदी रही एह की खेल करे भगवान, की करनी कार कमाईआ। मैनूं पता नहीं सी मैं छड्ड जाणा जहान, छिन्न विच्च आपणे रंग रंगाईआ। धन्न भाग जे सचखण्ड दवारे पहुंची आण, पिछला चेता रिहा ना राईआ। एथ्थे भगत सुहेले तूं मेरा मैं तेरा गाण, सोहणा राग अलाईआ। धन्न भाग मेरा नाता तुट्टया जीअ पुरान, स्वासां लेखा रिहा ना राईआ। जन भगतो मैं ज़रूर तुहानूं मिल्या करांगी आण, कदी कदी दर्शन हस्सदी हस्सदी वखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने मेरे प्यार विच्च दीन दुनी दा बणाउणा विधान, कानूंन कायदा भगती धार भगती वाला समझाईआ। (८ सावण शहनशाही सम्मत दस)

६ माघ शहनशाही सम्मत दस दिल्ली धीरपुर हरि भगत दवार दी नींह रक्खण समें सवेरे साढ़े दस वजे :

सो पुरख निरञ्जण साचा मीत, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। हरि पुरख निरञ्जण ठांढा सीत, सति सतिवादी अगम्म अथाहीआ। एकँकारा त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी इक्क अखवाईआ। आदि निरञ्जण सदा जगजीत, निरगुण निरवैर इक्क अखवाईआ। अबिनाशी करता पत्तित पुनीत, पत्तित पावन धुरदरगाहीआ। श्री भगवान धर्म दी धार चलाए रीत, सति सतिवादी इक्क अखवाईआ। पारब्रह्म खेल करे आदि जुगादि ठीक, ठाकर स्वामी इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर रंग इक्क रंगाईआ।

सतिगुर शब्द आदि आदि दी धार, निरगुण निरवैर निरँकार खेल खिलाईआ। जिस दा रूप अनूप अगम्म अपार, अलख अगोचर सति सतिवादी वड वडयाईआ। जो खेले खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी वंड वंडाईआ। जिस दा लहणा देणा दीन दुनी नाल तेई अवतार, रामा कृष्ना नूर नुराना नूर नूर रुशनाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद देवणहारा अधार, जोती जाता पुरख बिधाता इक्क अखवाईआ। नानक निरगुण सरगुण गोबिन्द शब्द जैकार, सिँघ सिँघ अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे धुर दा हुक्म सदा जुग चार, जुग चौकड़ी आप वरताईआ। जिस दे हुक्मे अंदर तेई अवतार, अवतर आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लहणा देणा नाल धरनी धरत धवल धौल विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव दए गवाहीआ। भगत सुहेले वेखे विगसे वेखणहार, गुर चेले खोज खुजाईआ। जिस दा रसना जिह्वा जगत विद्या बाहर इज़हार, सिफ्तां वंड ना कोई वंडाईआ। चार जुग दे शास्त्र अक्खरां नाल करन पुकार, निरअक्खर धार धार शनवाईआ। परम पुरख धुर दा राम करनी दा करता करनेहार एकँकार, अकल कलधारी वड वड्डिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे पैगम्बरां अज़मज़ी वज़ूउल ज़मीउल ज़कूते आयशहेजमा नूरे रुशना मुहम्मदे दवा ज़बीउल ज़मा मुविवज़ी नविस्तुल ज़ंबाए खुदा खुद मालक इक्क अखवाईआ। कोना कुनिज़ शाहे ज़विज़ रोज़म मबी मवस्ती तवला जंबाए जुकन्ननिसता ज़बराईले ज़मू रूहे नवास्तो मज़ा असतेमज़ा मवज़ल तवज़ल मज़ीउल कमोज़े जामिसती दंबाए खुदा काअबाए कुविद शरअ ए ज़ुविद नूरे चशम अर्शे वज़ी नवीज़े तज़ीह ज़मीउल ज़मा रहनुमा इक्क नूर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे सतिगुर शब्द अगम्मी धार, धरत धवल वडयाईआ। नानक निरगुण सरगुण खेल अपार, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। चार वरन एका धार, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोई वंडाईआ। लेखा जाणे आप निरँकार, निरवैर इक्क अखवाईआ। जिस दे शब्द संदेशे भविख्तां विच्च गुर अवतार पैगम्बर गए उच्चार, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। सो खेले खेल आपणी वार, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे शब्द दी धार आदि जुगादी भगत, भगवन देवणहार वडयाईआ। जिन्नां दे अन्तर नाम दी शक्त, शख़शीअत जगत विच्च प्रगटाईआ। उस दा सदा सुहंझणा होवे वक्त, वेला आपणे रंग रंगाईआ। जिस दा लहणा देणा नाल दीन दुनी फ़कत, फ़िकरे ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे वक्त सुहंझणा आया, सोहणी मिले वडयाईआ । प्रभ जोती जोत रुशनाया, दो जहानां डगमगाईआ। अवतर आपणा खेल खिलाया, खेलणहार अगम्म अथाहीआ। अवतार पैगम्बर गुर संग मिलाया, एका गंढु पवाईआ। धुर दा पर्दा आप छुपाया, भेव रहे ना राईआ। रवीदास दए गवाहिआ, शहादत नाम वाली भुगताईआ। बालमीक वेख वखाया, त्रेता जुग नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ। रवीदास कहे जन भगतो मैं भगत प्यारा मीत, मित्रां दिआं सुणाईआ। गरीबां विच्च गरीबी वाली रीत, जुग चौकड़ी चली आईआ। अंदरों काया सभ ने करनी ठंढी सीत, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। मन मनुआ लैणा जीत, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गीत, सोहँ सच पढ़ाईआ। साचा दिउहरा मन्दर मसीत, काया काअबा नज़री आईआ। मेला होणा नाल हस्त कीट, शाह सुल्तानां ना कोई वडयाईआ । पिछला लेखा पिच्छे गिआ बीत, अगला हुक्म चले धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

बालमीक कहे मैं बटवारा, त्रेता मेरी दए गवाहीआ। मैं लेखा लिखया गुप्त ज़ाहरा, बिन अक्खरां अक्खर दृढ़ाईआ। संदेशा सुणदा रिहा बिन सरवणां आपणे अन्तर अन्तर करदा रिहा विचारा, जगत अकल बुद्धि ना कोई रखवाईआ। धरनी धरत धवल धौल राम रामा होए उजिआरा, राम रमईआ राम राम रूप प्रगटाईआ। जिस दा खेल चारों कुण्ट होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। अन्त कन्त दे के सच इशारा, भगवन्त आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप समझाईआ।

धुर दी धार कहे मैं आदि जुगादी सच, प्रभ दी सच वडयाईआ । लूं लूं अंदर सभ दे जावां रच, रचना प्रभ दी दिआं वखाईआ। मेरा नाता नहीं नाल काया माटी कच्च, कंचन गढ़ ना कोई चतुराईआ। सभ दा स्वामी मालक इक्को परमेश्वर पति, पारब्रह्म अखवाईआ। जिस भगतां लेखे लाउणी रत्त, रतन अमोलक हीरे आप प्रगटाईआ। धर्म दा धर्म दवार खोल्हणा हट्ट, वस्त सच नाम टिकाईआ। शरअ ज़ंजीर देणी कट, कटाकश इक्को इक्क

वखाईआ। दूई दवैत मेटणा फट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। शरअ दी रहे कोई ना वट, वटणा नाम वाला मलणा चाईं चाईंआ। सो खेल करे प्रभ जो वसे घट घट, घट घट बैठा सोभा पाईआ। जिस दे नाम कलमे रहे रट, रसना जिह्वा सोहले ढोले गाईआ। उह आत्म सेज सुहंझणा सुहाए खट्ट, खटीआ इक्क वडयाईआ। जोत जगाए लट लट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्दी सुरत मार के सट्ट, सोई सवाणी लए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

करनी कहे मैं आदि जुगादि दी करनी, कुदरत कादर दित्ती वडयाईआ। मैं खेल वेखणा प्रभ दी चरनी, चरनी दी धार शहादत फोटो दए गवाहीआ। मेरा झगड़ा नहीं वरनी बरनी, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। मैं चाहुंदी इक्को मार्ग होवे उत्ते धरनी, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। पुरख अकाल दी पौड़ी सभ ने चढ़नी, राम रामा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया जगत जहान विच्चों हड़नी, दीन दुनी रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आपणे हत्थ रखवाईआ।

कूड़ी क्रिया कहे मेरा कलिजुग नाता, सच सच सुणाईआ। कलिजुग कहे मेरा नाता नाल पुरख बिधाता, जो बिदना दा मालक अगम्म अथाहीआ। जिस मेरा वक्त सुहंझणा दीन दुनी कीता अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोइ चमकाईआ। झगड़ा पा के दीन मज़हब ज़ाता पाता, माणस मानव दित्ते टकराईआ। आपणे हुक्म दा रक्ख के डूंघा खाता, भेव अभेद दित्ता छुपाईआ। मैं सच संदेशा देवां दीप साता, नव खण्ड खण्ड सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ। नव सत कहण साड्डा रूप अनूप अपारा, प्रभ दित्ती माण वडयाईआ। साड्डी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सयद्यां विच्च सीस झुकाईआ। साड्डा लहणा देणा नाल तेई अवतारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग गंढु पवाईआ। साड्डा खेल संग हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद यारा, मेहरवान महिबान बीदो आपणा खेल समझाईआ। साड्डा लहणा देणा नानक निरगुण सरगुण गोबिन्द धार अपारा, अपरम्पर दए वडयाईआ। साड्डा मीत साजण भगत सुहेला जो भगवन होए प्यारा, धर्म दी धार विच्च समाईआ। नौ खण्ड कहण सत दीप असीं उस प्रभू दा बोलीए जैकारा, जो आदि जुगादि इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सत्त दीप कहण साड्डी धरनी धरत धवल अपार, अपरम्पर दए वडयाईआ। साड्डी नमो नमो निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। धन्नभाग जे धुर दा हुक्म चले विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी खुशी मनाईआ। मानव जाति इक्क होए प्यार, आत्म परमात्म मिलके वज्जे वधाईआ। जो भगत सन्त सूफी संदेशा दे के गए आपणी वार, पूरब लेखे नाल मिलाईआ। भगतां दा गृह होवे भगत दवार, भगवन मिल के वज्जे वधाईआ। शरअ दा होवे ना कोई सिकदार, मज़बां वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को नूर जोत उजिआर, नूर नुराना नज़री आईआ। इक्को शब्द होवे धुनकार, अनहद नादी नाद करे शनवाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप खिलाईआ। धरनी कहे मैं आदि जुगादी धवल, धर्म नाल समझाईआ। मेरा मालक पुरख अकाला नूर अलाही इक्को अव्वल, आलमीन इक्क अखवाईआ। जिस दा लेखा लहणा देणा राम रामा नाल कृष्न काहन सवल, सांवरीआ आपणा रंग रंगाईआ। जिस गोबिन्द धार छकाई पवल, अमृत रस बिन रसना रस चखाईआ। तूं भगत सुहेले प्रगटाए आपणे कँवल, कमलापाती आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप उठाईआ।

धरनी कहे वक्त सुहञ्जणा आया नौ माघ, खुशीआं ढोले गाईआ। मेरे अन्तर उपजआ इक्क वैराग, वैरी कूड़े बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतो दुरमत मैल धोवो दाग़, पाप रहे ना राईआ। काया मन्दर दीपक जोत वेखणा चिराग, जोती जाता करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चार कुण्ट दह दिशा चारे लिखारीउ लिखो लग्गणी आग, अगनी सके ना कोई बुझाईआ। शाह सुल्तानां रईअत हकूमतां जाणीआं त्याग, त्रैगुण अतीता आपणा हुक्म सुणाईआ। किसे दी पुच्छे कोई ना वात, संगी संग ना कोई बणाईआ। सत्तां दीपां होए अन्धेरी रात, चारो कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ।

धरनी कहे लिखारीओ तुहाढ्ढा दिसे गाना बध्धा मैहन्दी तन्दा, संग मुहम्मद चार यार रलाईआ। एह लेखा किसे नहीं संधा, अकल बुद्धि समझ कोई ना पाईआ। जगत जहान नौजवान कर्म कांड विच्च अन्धा, निझ नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोई खुल्ह़ाईआ। कलिजुग आपणी धार विच्चों लँघा, भज्जा चाईं चाईंआ। अन्तम सभ दा हाल होणा मंदा, मंदभाग दिसे लोकाईआ। सदी चौधवीं अन्तम होया कन्ढ्ढा, कन्ढ्ढी घाट सारे बैठे ध्यान लगाईआ। जो वेद व्यासे पाईआं वंडा, चार लक्ख सतारां हज़ार सलोक अठारां पराण देण गवाहीआ। केहड़ी खेल खेले ब्रह्मण गौड़ नूरी धार हो के पंडा, पारब्रह्म भेव भेव आप समझाईआ। शब्दी धार चमके चंड परचंडा, जगत जहान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

धरनी कहे मैं खुशीआं गावां ढोले, प्रभ नूं सीस निवाईआ। शब्दी धार जो शब्द अगम्मी बोले, अनबोलत राग सुणाईआ। जिस दे अवतार पैगम्बर गुरू धर्म धार दे तोले, नाम कंडे हत्थ उठाईआ। जिस ने दीनां मज़्बां वाले हट्ट खोल्ह़े, चार कुण्ट दित्ती वरताईआ। जिस दे लेखे विच्च लहणे देणे सभ दे कोले, कौल इकरार नाल बणाईआ। उह वेखे धार उपर धौले, धर्म धार नाल जणाईआ। जिस ने सच दवारे खोल्ह़े, खालक खलक खलक समझाईआ। नव सत तक्कणे रौले, सांतक सति ना कोई वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं चारों कुण्ट मारां ध्यान, बिन नैणां नैण खुल्ह़ाईआ। उह वेखो पंडत नारद आउँदा बिना रसना तों दए ब्यान, बिन जिह्वा जिह्वा रिहा दृढ़ाईआ। उठ वेख की खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस सत दीप हुक्म चलाया ते वरतणा विच्च जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। लहन्दी दिशा अक्ख पुट्ट लै ते नाल सुण लै

कान, बिन कन्नां दिआं सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे मैं नारद की दस्सां, सच सच जणाईआ। मैं दीन दुनी नूं वेख वेख हस्सां, जो मेरे उत्ते सोभा पाईआ। किसे दे अंदर रिहा नहीं प्रभू दे प्यार दा रसा, रसना जिह्वा ढोले सारे गाईआ। मैं दूर दुराडी जगत जगिआसूआं कोलों नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। मैनूं अैं जापदा प्रभू दा भगत कोई विरला कोटां विच्चों लक्खां, गणती गणत ना कोई गिणाईआ। पर याद कर लै नारदा सृष्टी अैं सड़नी जिवें सड़दा पुतला कक्खां, चारों कुण्ट वेखणा थाउँ थाईंआ। कलिजुग खेल होणा वांग बाज़ीगर नटां, नटूआ हो के आपणा सवांग वरताईआ। मैं अन्त इक्क प्रभू ते आपणी आसा सट्टां, दूसर ओट ना कोई तकाईआ। जिस दीन मज़हब दीआं मेटणीआं वट्टां, झगड़े नाम ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे धरनीए मैं वी होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। कलिजुग कूड़ दिसे प्रधान, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। शरअ रूप बणी शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। इन्सान दा वैरी बणया इन्सान, इन्सानीअत हत्थ किसे ना आईआ। पर याद कर लै जो सईआ नूं संदेशा दित्ता राम, बनवासी आपणा हुक्म सुणाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़यार होणा जगत जहान, नव सत आपणा रंग रंगाईआ। जो अरजन नूं गीता लिखण लग्गिआं दस्सया काहन, घनईआ धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। कलिजुग अन्त प्रभू दी करे कोई ना पहचान, भगवन रंग ना कोई समाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होवे परेशान, परेशानी विच्च दुहाईआ। अन्तर आत्म उपजे ना ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोई पढ़ाईआ। अमृत रस मिले ना पीण खाण, निझर झिरना ना कोई झिराईआ। घर स्वामी ठाकर मिले किसे ना आण, तन मन्दर वज्जे ना कोई वधाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग आप बणाईआ।

नारद कहे धरनीए मैं होर कुछ तक्कां, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ । उह वेख लै तीजे साल नूं झगड़ा पैणा विच्च मदीना मक्का, काअबे आपणा हाल दृढ़ाईआ। फेर लहणा देणा होणा नाल बूरा कक्का, हज़रत ईसा देवणहार शहादत नाल गवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी रशीआ नाल अमरीका लग्गणा धक्का, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ । दीन दुनी दी कीमत रहणी नहीं कोई टका, शाह सुल्तान राज राजान मायाधारी मिट्टी खाक विच्च रुलाईआ। इक्को धर्म दी धार प्रभू दे नाम दी होणी सत्ता, जिस नूं सतिगुर शब्द मन्ने जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा संग आप बणाईआ।

धरनी कहे नारद जी मैं वी चुक्कया भार, नव खण्ड चुरासी लक्ख आपणे उत्ते टिकाईआ। मेरी दिवस रैण पुकार, कूक कूक सुणाईआ । मेरे प्रीतम प्यारे पा सार, परम पुरख होणा आप सहाईआ। चारो कुण्ट होई अन्धेरी रात, तेरा नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। तेरे नाम कलमयां वाली खार, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। तूं आत्म परमात्म नूर उजिआर, नूर नुराना इक्क अखवाईआ। कलिजुग मेट दे धूंआंधार, धर्म दी धार इक्क समझाईआ। इक्को तेरा नाम होवे जैकार, इक्को तेरी सिफ्त सलाहीआ। इक्को तेरा मन्दर होवे

दवार, शिवदुआला मठ गुरू दवार इक्क वखाईआ। इक्को शब्द होवे धुनकार, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वज्जदी रहे वधाईआ। इक्को तेरी होवे निमस्कार, डण्डावत बन्दना सयद्यां विच्च सारे सीस झुकाईआ। तूं शाहो भूप सिकदार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरी वज्जे वधाईआ। धरनी कहे मेरी नमों नमों निमस्कार, निव निव तेरे लागाँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा हुक्म आप रखवाईआ।

नारद कहे धरनीए परम पुरख बड़ा चलाक, मैं जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते सभ नूं करदा रिहा खाक, माटी खाक विच्च रुलाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां खोल़दा रिहा ताक, बज़र कपाटी पड़दा आप उठाईआ। आपणा दस्सदा रिहा शब्द अगम्मी वाक, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सच प्रीती जोड़दा रिहा नात, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। सो अन्त पुच्छणहारा वात, जुग चौकड़ी इस दे हुक्म अंदर भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे नारद जी मैं उसे नूं टेकां मथ्था, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर सत्थर लथ्था, यारड़ा सेज हंढ्ढाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र करदे कथा, वेद पुरान अंज़ील कुरान बाईबल तुरैत गीता गुरू ग्रन्थ ढोले सोहले राग सुणाईआ। उस दा खेल वेखणा यथार्थ यथा, जो यदी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा शब्दी धार दा अगम्मी इक्को भथ्था, तीर तरकश कमान हत्थ ना कोई उठाईआ। उहदा युद्ध बिना तन वजूद हत्थां, हुक्मी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक नूर अलाहीआ।

नारद कहे धरनीए उह मालक परम पुरख अपार, परमात्म इक्क अखवाईआ। जिस जुग चौकड़ी खेलया खेल विच्च संसार, सतिगुर शब्द नाल वडयाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं दित्ता अधार, उदर दा लेखा दित्ता मुकाईआ। निरअखर धार विच्चों अक्खर दित्ते उच्चार, जगत शास्त्र देण गवाहीआ। जिस ने मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ बणाए गुरूदवार, चर्चा दित्ती वडयाईआ। दीनां मज़हबां दस्स नाम जैकार, शरअ दा रंग दित्ता रंगाईआ। झगड़यां विच्च खेल कीता वारो वार, वारता पिछली दए गवाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाल आदि जुगादी परम पुरख परवरदिगार, राम रामा काहन काहना आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप समझाईआ।

धरनी कहे मेरा वक्त आया सुहंझणा, सोहणी मिली वडयाईआ। किरपा करे आदि निरञ्जणा, आदि पुरख दया कमाईआ। जिस नूं कहन्दे दर्द दुःख भय भञ्जणा, भव सागर पार लंघाईआ। उह भगतां पावे नाम दा अञ्जणा, निझ नेत्र नैण अक्ख खुल़ाईआ। जिस दे हुक्म विच्च जगत जहान वंञणा, भज्जे वाहो दाहीआ। जिस सभ दा पड़दा कज्जणा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जिस दा नाम डंका वज्जणा, चारो कुण्ट करे शनवाईआ। उह झगड़ा मेटे दीन दुनी काया बदना, जिस्म ज़मीर विच्चों आप समझाईआ। सो साहिब सूरा सर्बंगणा,

हरि करता इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे मेरा कवण वक्त संभाले, सम्बल बैठा नज़र किसे ना आईआ। जो लेखा जाणे शाह कंगाले, गरीब गरीबां वेखव वखवाईआ। जिस दा नाम सच्चा धन माले, धन दौलत कम्म किसे ना आईआ। जो भाग लगाए साचे डाले, पत्त टैहणी आप महकाईआ। मेरे धोए दाग़ काले, दुरमत रहे ना राईआ। अमृत धार अंदरों उछाले, सवा सेर पाणी लिखवारीआं दए गवाहीआ। पंज पंज शहादत देण भगतां दे भाले, भाण्डा भरम भन्नाईआ। आत्म धार वसे नाले, परमात्म विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दे पिच्छे भगत सुहेले जुग जुग घालणा रहे घाले, रविदास रवीदास नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप दरसाईआ। धरनी कहे मैं कूक कहां पुकार, दो जहाना दिआं सुणाईआ। सभ दा इक्को मित्र मुरार, परम पुरख इक्क अखवाईआ। जिस ने बालमीक दित्ता तार, बटवारा आपणे रंग रंगाईआ। डाके मारदा विच्च संसार, सच लुटेरा इक्क अखवाईआ। जिस दी दच्छणा राम दे लेखे साढ़े तिन्न हार, कलिजुग लहणा पूर कराईआ। गऊ पाल गोपाल काहन कृष्न वेखे नैण मुंधार, नैण मूंद दया कमाईआ। ईसा कहे मेरा लेखा नाल परवरदिगार, जो यार यारा अगम्म अथाहीआ। मुहम्मद कहे मैं उस दा करां इज़हार, जो सिफ्तां दा मालक सिफ्त सलाहीआ। नानक कहे मैं उस दी वजावां सितार, जो सुत्तयां लए जगाईआ। जन भगतो एह सारी श्रृष्टी दा सतिजुग विच्च होवेगा भगत दवार, अज्ज दा लेखा इस दी दए गवाहीआ। दर्शन सिँघ दी पुठ्ठी दिसे तलवार, ढाल आपणा रूप दरसाईआ। खाली ग्लास कहे चारों कुण्ट होणी हाहाकार, फल कहण फल हत्थ किसे ना आईआ। नेत्र रोवे नारी नार, बिन हन्झआं हन्झ वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ।

नारद कहे धरनीए वेख लै भगतां ने दोवें रंगे होए गुट्ट, लाल आपणा रंग वखाईआ। इक्क वार प्रभ नालों सभ दी प्रीती जाणी तुट्ट, टुट्टआं फेर प्रभू जुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी पैणी लुट्ट, कलिजुग लुटेरा फिरे चाई चाईआ। दीनां मज़हबां होणी फुट्ट, मेला सके ना कोई मिलाईआ। बेशक प्रभू दा नाम जपदी श्रृष्टी रसना जिह्वा बुलूं बुट्ट, हिरदे राम ना कोई वसाईआ। सभ दा भाग जाणा निखुट, खोटे खरे रूप ना कोई दरसाईआ। फेर सति सच दी मौलणी रुत्त, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। भगत दवार दी नींह थल्ले चांदी दा दब्बणा बुत्त, बुत्तखाने वेखण थाउँ थाईंआ। एह विहार उस साहिब दा जिस दा शब्द दुलारा सुत, दो जहानां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे धरनीए मैं की वेखां हुंदा सगन, सगला ध्यान लगाईआ। भगतां अन्तर आत्मा होवे मग्न, जगत वाशना बाहर कढ़ाईआ। ओढण दिसे किसे ना सीस श्रृष्टी होई नगन, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। बिना भगतां तों काया मन्दर अंदर दीपक किसे ना जगण, जागरत जोत ना कोई रुशनाईआ। की होया जे भगत दवार दी धार नाल लग्गी अगन, अगन जगत वाली समझाईआ। किसे दा रहणा नहीं कोई सज्जण, मित्र

मीत ना कोई अखवाईआ। अन्त गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, मन ममता दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे नारदा मैं अवतार पैगम्बर गुरू तक्कां साख्यात, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जिनूं चार जुग दी पिछली लिखी गाथ, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग चलदा वेख्या राथ, निरगुण सरगुण हो के भज्जे वाहो दाहीआ। अन्त लहणा उस हत्थ पुरख समराथ, जो करता धुरदरगाहीआ। जो होए सहाई अनाथां अनाथ, दीनन आपणे गले लगाईआ। सो सभ दा लहणा देणा देवे मस्तक, माथ, पूरब लेखा बिधना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे मेरा लेखा बहुत पुराणा, पुरान अठारां देण गवाहीआ। मेरा काहन नाल यराना, जो सखीआं सुखन गिआ समझाईआ। दुनियां दीन विच्च बदल जाणा जमाना, जमन किनारा संग रखाईआ। कलिजुग कूड़ होणा प्रधाना, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। धर्म दा रहणा नहीं कोई निशाना, धर्म दी धार ना कोई रखाईआ। दीन मज़हब होणा बेगाना, नाम कलमा करे लड़ाईआ। अन्तर गाए ना कोई तराना, तुरीआ वेखण कोई ना पाईआ। उस समें खेल करे धुर दा काहना, काहन काहन नाल वडयाईआ। जिस दा लहणा देणा दो जहान, ज़िमी असमान वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द करे प्रधाना, दूसर नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

नारद कहे धरनीए मैं वी सुणी बात, पिच्छेहो के ध्यान लगाईआ । जो खेल होणा लोकमात, काहन घनईआ गिआ दृढ़ाईआ। किसे दी पुच्छणी नहीं किसे ने वात, संगी संग ना कोई निभाईआ। की होया जे अठारां कशूणीआं होयां खात, धर्म युद्ध युद्ध समझाईआ। कलिजुग अन्तम हुक्म वरते कमलापात, पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ।

धरनी कहे मैं करदी रही काहन नूं याद, गोपाल नूं सीस निवाईआ । जो मैनूं दे के गिआ दाद, वस्त अनमुल नाम वरताईआ। तेरा खेड़ा होए आबाद, हरि भगत दवार सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्ठे होणगे सारे सन्त साध, सूफीआ रंग रंगाईआ। अन्तर रहे ना वाद विवाद, विख अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। शरअ दी दिसे कोई ना हाद, मज़बां रंग ना कोई रंगाईआ। इक्को मालक नज़री आए वाहिद, गाड इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

नारद कहे धरनी मैं वी सुणया संदेश, जो कृष्न घनईआ काहन काहन गिआ दृढ़ाईआ। मैं दूरों हो के पेश, पेशीनगोई पुच्छी चाईं चाईआ। सच दस्स एह धाम सुहंझणा कौण करे ते केहड़ा होवे नरेश, कवण हुक्म हुक्म वरताईआ। उस हस्स के किहा मेरा बिना अक्खरां तों लेख, कलम शाही ना कोई वडयाईआ। जोती जाता धारे भेख, अव्वलड़ा आपणा रूप प्रगटाईआ। जिस कूड़ कुड़यार दी मेटणी रेख, रिखीआं मुनीआं दए समझाईआ। उह आवे जमन कनारे एसे देस, देस दसन्तर वेख वखाईआ। जिस जगत जहान दा

तक्कणा कलेश, कल कातीआं खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ ।

धरनी कहे मैं खुशीआं विच्च दस्सां आज, हकीकत सच दृढ़ाईआ। सारी सृष्टी दा भगत धार होणा समाज, समग्री सच नाम वरताईआ। मेरे उत्ते मेरा बंक दवार सुहाए सेवा करनगे राजन राज, रईअत आपणा संग बणाईआ। एह नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों होणा काज, करनी दा करता आप समझाईआ। मेरा मालक खालक इक्को महाराज, परम पुरख इक्क अखवाईआ। जिस ने धर्म चलाउणा जहाज, नईआ नौका नाम दृढ़ाईआ। चारे कुण्ट मारनी अवाज़, चारे वरनां लए उठाईआ। सभ दा सांझा होवे समाज, वक्खरी वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

धरनी कहे मेरी आसा मनसा होए पूर, पूरब ध्यान लगाईआ। मेरे राम दा सच दस्तूर, जुग चौकड़ी चल्लया आईआ । जो काहनां दा काहन हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा मालक नूर अलाहीआ। जिन्ह शब्दी धार दित्ता सरूर, गुरू गुरदेव देण वडयाईआ। जिस दी मंज़ल ना नेड़े ना दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी भगती करे मनज़ूर, दर आयां लेखे लाईआ। तुसां सभ ने आत्मा धार होणा मशकूर, शुकरीआ कह के शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ।

धरनी कहे मेरी आसा पूरी होवे मनसा, खुशीआं राग जणाईआ। मेरा मालक मिले मैनूं काहना जिस हँकार मेटया कंसा, दित्ती माण वडयाईआ। जिस दा खेल सहँस सहँसा, गणती गणत ना कोई गिणाईआ। जिस सतिजुग विच्च मानव जाति इक्क बणाउणा बंसा, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। जो लेखा लिखया वेद व्यासे गौड़ ब्रह्मण प्रथाए पंडता, भविख्त पराण नौ हज़ार सलोक देण गवाहीआ। उह खेल खेले धरती उत्ते नव खण्डता, सति सति वेखे चाई चाईआ। जिस दा झगड़ा नहीं मन मत दा, ममता मोह जगत ना कोई रखवाईआ । उहदा खेल परमेश्वर पति दा, पत्तित पावन वड वडयाईआ। जो लेखा जाणे थिर घर दा, अन्तर निरंतर बैठा ध्यान लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

धरनी कहे अवतार पैगम्बर गुरू सारे करो मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। कलिजुग अन्त मिटे तीनो ताप, त्रैगुण अगन ना कोई तपाईआ। सभ दा इक्को नाम होवे जाप, इक्को सोहला ढोला कलमा सच सुणाईआ। इक्को मालक होवे कमलापात, पतिपरमेश्वर इक्क अखवाईआ। झगडा रहे ना ज़ात पात, दीन मज़हब ना करे लड़ाईआ। आपणा भविख्तां वाला वेखो खात, सदी चौधवीं बीसवीं नाल मिलाईआ। ढईआ गोबिन्द वाला पुच्छणवाला वात, वातावरन तक्के खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

धरनी कहे अवतार पैगम्बर गुरू साहिबान करो खिआल, बिन नैणां नैण खुल्ह़ाईआ। धर्म दवार दा धर्म होवे दलाल, विचोला अवर ना कोई बणाईआ। जिस दी साहिब सतिगुर

शब्द करे संभाल, सम्बल दा मालक दया कमाईआ। जिथ्थे सुहणे शाह कंगाल, गरीब गरीबां दया कमाईआ। दीन दुनी दा होवे ना कोई जंज़ाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दी आशा रक्खी सिँघ पाल, मेहरवान मेहरवान वेख वखाईआ। जिस दा ठाकर स्वामी दित्ता ज्ञान, इन्दर सिँघ सिँघ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मन्दर इक्क सुहाईआ।

धरनी कहे गुर अवतार पैगम्बर मेरा वेखो मीत, मित्रां सच जणाईआ । जिस नूं जुग चौकड़ी सभ ने रक्खया चीत, चितर के सक्कया ना कोई वखाईआ। जो जुग जुग बदलदा रिहा रीत, रीतीवान अगम्म अथाहीआ। सो सभ दी अन्तर मन कल्पणा करे पत्तित पुनीत, पत्तित पावन दया कमाईआ। जिस नूं कहन्दे सदा जगजीत, जग जीवण दाता इक्क अखवाईआ। जिस दा लेखा नाल मन्दर मसीत, काअबिआं फोल फुलाईआ। उह आत्म परमात्म बंधाए सभ दी प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

नारद कहे धरनीए तेरे उत्ते होणा वक्त सुहंझणा, सोहणी मिले वडयाईआ। घर सुहाए आदि निरञ्जणा, बंक दवारा वेख वखाईआ । जिथ्थे इक्को दीपक जगणा, जोती जोत डगमगाईआ। जो सभ दा होवे सज्जणा, मीत मुरारा अगम्म अथाहीआ। जो नाम निधान दी चाढ़े रंगणा, रंगत आपणी आप प्रगटाईआ। उह भगतो तुहाढ़ी भगती दा मनावे सगना, सगले संगी आप रखाईआ। निरगुण धार लावे अञ्जणा, अंगीकार आप हो जाईआ। अन्तर निरंतर देवे अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। लेखे लग्गे पंज तत्त सरीर पंजना, पंचम तत्त मिले माण वडयाईआ। सम्मत शहनशाही दस कहे दीन दुनी दा लेखा जिस हत्थ मुकन्द मनोहर मुकन्दना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आपणे हत्थ रखाईआ।

धरनी कहे मेरी प्यार मुहब्बत वाली तरशीह, खुशीआं नाल जणाईआ। भगतां दी भसम चरनी दी धार गुरमुख इक्क इक्क चूंढी भरनगे वीह, माझा मालवा दुआबा जम्मू वंड वंडाईआ। टिकाउणगे चढ़दे वाली कूट विच्च नींह, खुशीआं नाल रखाईआ। धर्म दा बीज देणा बीअ, सतिजुग फल नाल फुल्ल दए महकाईआ। रवीदास दा लेखा जो लिखया साढ़े तिन्न हत्थ सीअ, धरनी धरत धवल खुशी बणाईआ। अग्गे पता नहीं होणा की, धरनी निव निव सीस निवाईआ। लक्ख चुरासी प्रभ दे जीअ, जीव जंतां विच्च रखाईआ। तुहाढ़े उतों बल बल जावां थीअ, निव निव लागाँ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे मिट्टी खाक भसम रक्खणी नींह थल्ले इक्क इक्क चूंडी, बीस बीसा रंग रंगाईआ। उत्ते धर्म धार दी होवे खूंडी, खड़गाँ खंडयां बाहर समझाईआ। धरनी कहे मैं बिना ज़बान तों कूंदी, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं सार सारयां बुत्त रूह दी, रूह बुत्तां वेख वखाईआ। मैं ख़बर सुणी उस शब्द गुरू दी, जो गुर अवतार पैगम्बरां दए वडयाईआ। भगतो अज्ज दा लेखा ते सतिजुग धार शुरु दी, सति धर्म साचा रंग रंगाईआ। अजे ते खेल होणी दुड़ू दुड़ू दी, सत्तां सालां तों बाद एथ्थे धर्म दे झण्डे झुल्लणे चाई चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते बणना गृह मन्दर, सोहणी मिले वडयाईआ। जिथ्थे भगतां दा भगती धार तुटणा बज़र कपाटी जंदर, जिंदगी विच्चों जिंदगी दए बदलाईआ। प्रकाश होवे अन्धेरी कंदर, तन वजूद नूर नुराना डगमगाईआ। मनुआ दह दिशा ना उठ उठ धावे बन्दर, मन मनसा ना कोई हलकाईआ। जन भगतां हरिजनां सूफीआं सन्तां लेखे लग्गे तत्त पंजण, पंचम दा मेला मिले सहज सुभाईआ। किसे दे अन्तश्करन विच्च ना होवे रंजण, रंजश अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते जुग चौकड़ीआं केते लँघण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जे वाहो दाहीआ। कोटन वार दीन दुनी शरअ दी लग्गी अगन, भसम हो के मिट्टी खाक विच्च मिलाईआ। कोटन वार मेरे उत्ते शादिआने वज्जण, गुर अवतार पैगम्बर धुर दे राग नाद गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नारद कहे धरनीए मेरा जीअ करदा मैं तैनूं करां इक्क मखौल, मसखरा हो के दिआं सुणाईआ। तैनूं धरनी कहां धरत कहां धवल कहां कि कहिवां धौल, धर्म नाल दे जणाईआ। सच दस्स तेरा अवतार पैगम्बरां नाल की कौल, वाअदा गुरू दुरदेव की जणाईआ । मेरा जीअ करदा कूड़ कुड़यार दा वजा देवां ढोल, डंका सुणावां थाऊँ थाईंआ। सारी श्रृष्टी दी दृष्टी जावे डोल, साबत रहण कोई ना पाईआ। तेरा धर्म दा दवार धर्म दा मालक देवे खोल्ह, खलक दा खालक वेख वखाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई पंडत पांधा रौल, थितां वंड ना कोई वंडाईआ। एह लेखा उस दा जिस नूं त्रैलोकी नाथ कहन्दे सावल सौल, सांवरी आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

धरनी कहे नारदा कुछ मैं वी दस्सणा ज़रूर, ज़रूरत आपणी दिआं जणाईआ। मैनूं दिसदा मेरे उत्ते पिआ फतूर, धर्म नूं फतवा लग्गा थाउँ थाईंआ। सच दा सच दिसे ना नूर, नूर नुराना चन्द ना कोई चमकाईआ। साचे नाम दी सुणे कोई ना तूर, तुरीआ पद दी मंज़ल हत्थ किसे ना आईआ। मैनूं कलिजुग कूड़ कीता मशहूर, चारो कुण्ट झूठ दे डंके रिहा वजाईआ। मैं आसा रक्खी मेरा साहिब मैनूं कदों बखशेगा चरन धूड़, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जगत दा वक्त मिटे हरिजन रहे ना कोई मूर्ख मूढ़, गुरमुख हरिजन भगत सुहेले लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

नारद कहे धरनीए उह वेख लै कलिजुग काला मलंग, नव खण्ड पृथ्मी सत दीप भज्जे वाहो दाहीआ। जो वजावे मोह ममता वाला मरदंग, मोह ममता वाली नाल रखाईआ। जिस घर घर छेड़या जंग, मन का मनका दिता भवाईआ। दीन दुनी नूं कीता तंग, तंग दस्त होई लोकाईआ। जिध्धर वेखें कलिजुग ने कीती भुक्ख नंग, भुक्खयां सके ना कोई रजाईआ। अन्तर आत्म मिले ना किसे अनन्द, अनन्द विच्चों अनन्द ना कोई प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा गाए कोई ना छन्द, पारब्रह्म ब्रह्म संग ना कोई रखाईआ। आत्म सेज सुहंझणी दिसे ना किसे पलँघ, सत्थर यार ना कोई हंढ्ढाईआ। श्रृष्टी दी दृष्टी अन्तश्करन विच्च होई रंड, पती पतवन्ता हरि कन्त नज़र किसे ना आईआ। निगाह मार लै विच्च नवखण्ड, सत्तां दीपां ध्यान लगाईआ। जिध्धर वेखें उधर शरअ दी पवे डण्ड,

डण्डावत विच्च प्रभ नूं सीस ना कोई निवाईआ। दरोही मच्ची जेरज अंड, उत्भुज सेतज रही कुरलाईआ। श्रृष्टी दी धार होई भेरव परवण्ड, सति सच वेखण कोई ना पाईआ। मेरी इक्को आशा इक्को मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे साहिब सूरे सर्बंग, हरि करते तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

धरनी कहे सुण नारद मुनी, मुनीशरां बाहर जणाईआ। मेरी पुकार अवतार पैगम्बरां गुरूआं सुणी, अणसुणत नज़र कोई ना आईआ। जो जुग चौकड़ी धर्म दी धार बणे वड गुणी, गुणवन्त जगत अखवाईआ। शब्द नाम दी जणाई धुनी, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप समझाईआ। धरनी कहे मेरी नींह रक्खणी नाल जगत दी इट्ट, माटी कच्च रंग रंगाईआ। प्रभू विच्च रक्खे बिन अक्खरां दे चिट, चिट्टे उत्ते काला रंग ना कोई रंगाईआ। नीली लाल छाही दोवें रहीआं पिट, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। कलमां कानीआं कहण असीं किथे जाईए टिक, कवण धाम मिले वडयाईआ। किस दे उत्ते आशा दईए सिट्ट, सिटेबाज़ी वेखी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पल्लू आप फड़ाईआ।

धरनी कहे मेरे वेख लै पिछले कर्म, कांडां बाहर जणाईआ। जुग जुग दा तक्क लै धर्म, नारदा बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। कलिजुग तक लै की झगड़ा वरन बरन, ज़ात जाति की चतुराईआ । मेरे नेत्र नैणां आवे शरम, प्रभ नूं भुल्ली सर्ब लोकाईआ। मेरा लेखा नाल उस करनी करन, जो करनी करता धुरदरगाहीआ। मैं उस दा पल्लू लग्गी फड़न, बिन हत्थां हत्थ उठाईआ। उस दी मंज़ल लग्गी चढ़न, बिन कदमां कदम टिकाईआ । उसे दा नाम लग्गी पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। उसे दे फराक विच्च वैराग विच्च लग्गी सड़न, बिरहु अंदरों रही कुरलाईआ। मेरे प्रभू झगड़ा मेट दे पंज तत्त धड़न, सीस जगदीस आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा गृह आप सुहाईआ।

धरनी कहे जन भगतो मेरी इक्क बेनन्ती, खुशीआं विच्च सुणाईआ। एह लेखा नहीं किसे पंडती, अकल बुद्धि ना कोई वडयाईआ। आसा नहीं किसे मन दी, तृष्ना कल्पना ना कोई रलाईआ। एह खेल अगम्मे चन्न दी, जो नूर नुराना आदि जुगादी नूर अलाहीआ। एह अवाज़ नहीं किसे कन्न दी, सरवणां बाहर शनवाईआ। एह वड्डिआई नहीं किसे धन दी, लोभ लालच ना कोई वडयाईआ। इक्क प्रीती प्रीतम होवे जन दी, जन भगतो मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे जन भगतो मेरा लेखा प्रभू नाल आदि, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। मेरे उत्ते दीन दुनी हुंदी रही बरबाद, सतिजुग त्रेता द्वापर मेरी दए गवाहीआ। प्यार मुहब्बत विच्च हुंदे रहे विस्माद, बिसमल हो के आपणा खेल खिलाईआ। मैं जुग जुग सुणदी रही नाद, शब्दी धार बिन अक्खरां अक्खर हुंदी शनवाईआ। मेरा लहणा देणा अन्त कलिजुग सभ तों बाद, आखर आखर दिआं दृढ़ाईआ। जिस कारन नानक

वजाई रबाब, सितार दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक्क वखाईआ।

धरनी कहे जन भगतो धर्म दवारा वसणा, सतिजुग मिले माण वडयाईआ। दीनां मज़हबां बह बह हस्सणा, एको खुशी बणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नस्सणा, भज्जे वाहो दाहीआ। नाम अंमिउं रस चक्खणा, बिन रसना रस चखाईआ। तुहाढ्ढी प्यार मुहब्बत वाली दच्छणा, प्रभ लेखे लए लगाईआ। सच प्रेम विच्चों कोई रहे ना सख्खणा, काया चोली दए रंगाईआ। लहणा देणा हत्थो हत्थणा, अग्गे हुदार ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आप चुकाईआ। धरनी कहे जन भगतो मेरे प्रेम दा साचा दरस, नैण दीद खुशी बणाईआ। मेरी पूरी होई हरस, हवस दित्ती मिटाईआ। निरगुण धार कीता तरस, जोत नूर नूर रुशनाईआ। मेरा सुहंझणा होया फर्श , मिट्टी खाक खुशी बणाईआ। अम्बरां तों वेखण अवतार पैगम्बर गुरू गुरदेव नाल अर्श, अर्शी प्रीतम सोभा पाईआ। ना सोग रिहा ना हरख, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। इस भगत दवार ते सारी श्रृष्टी दी होणी परख, परखणहारा इक्को धुर दा माहीआ । एहदा लेखा सतिजुग धार दी सतिजुग वाली बरख, बरस आपणी रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

धरनी कहे मेरे उत्ते सोभदी परांदी लाल, लाड़ी मौत खुशी बणाईआ । नारीअल कहण असीं वी बणना विच्च दलाल, विचोले जगत जगत जणाईआ। कूड़ कुड़िआरां करनी भाल, खोजणा थाऊँ थाईंआ। साड्डा लेखा नहीं शाह कंगाल, ऊँचां नीचां वंड ना कोई वंडाईआ । साड्डी इक्क बेनन्ती ते इक्क सवाल, दूजी आस ना कोई समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच सच प्रगटाईआ।

धरनी कहे मेरा अन्त अखीरी संदेश, संध्धया सरघी बाहर जणाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी भगती रहे हमेश, भगवन देवे माण वडयाईआ। तुहाढ्ढा लेखा तक्के बाशक सुहंझणा शेश, विष्नूं रंग रंगाईआ। ब्रह्मा दए आदेश, सुखन सोहले आप जणाईआ। शंकर होवे पेश, धर्म धार दृढ़ाईआ। अवाज़ देवे आप गणेश, गणपत की सुणाईआ। तेई अवतार कहण जगत बुद्धि ना रहे मलेश, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पैगम्बर कहण झगड़ा मिटे मुला शेख, मुसाइकां रंग रंगाईआ। जो संदेश दित्ता नानक निरगुण गोबिन्द दस दस्मेश, दीन मज़हब वंड ना कोई वंडाईआ। सभ दा परमात्म आत्म धार एक, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जन भगतो भगतां दी साहिब उत्ते टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी खाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्लाईआ। धरनी कहे जन भगतो खुशीआं नाल प्रशाद वंडणा, मेरी खुशी बणाईआ। नाता सभ दे नाल गंढ्ढणा, मुहब्बत मुहब्बत विच्च रखाईआ । पल्लू सतिगुर शब्द कदे ना छड्डणा, नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। तुहाढ्ढा लेखे लग्गे नाड़ी मास हड्डणा, बूंद रक्त आपणा रंग रंगाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैत वाला कढ्ढणा, शरअ शरीअत देणी तजाईआ। तुसीं इक्को परम पुरख दी यदणा, खेल तक्कणा आत्म परमात्म थाऊँ थाईंआ। मेरी धर्म धार हद्दणा, हद हदूद इक्क रखाईआ। सच प्रकाश दा दीपक जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सूरा सर्बगणा, सूरबीर नूरी नूर इक्क अखवाईआ। (६ माघ श सं दस दिली धीरपुर हरिभगत दवार दी नींह रक्खण समें सवेरे साढ़े दस वजे)

६ माघ शहनशाही सम्मत दस हरि भगत दवार धीरपुर किंगज़वे कैंप दिल्ली-६

रात दे समें :

नौ माघ कहे मेरी नमो नमो निमस्कारा, डण्डावत बन्दना सय्यदिआं विच्च सीस झुकाईआ। बिन रसना जिह्वा शब्दी धार बोल जैकारा, ढोला सोहला इक्को इक्क सुणाईआ। निरगुण सरगुण वेखां खेल अपारा, जो अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। शाहो भूप वेखां सिकदारा, शहनशाह नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वंड वंडाईआ। उह जोती जाता पुरख बिधाता देवणहार सहारा, सिर सिर हत्थ टिकाईआ। जिस दा लहणा देणा नाल जमन किनारा, घाट कन्ह्वा खोज खुजाईआ। जिस दी आशा रक्ख के गिआ कृष्न मुरारा, मोहण माधव आपणा भेव चुकाईआ। जिस पैगम्बरां नूर कीता ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जिस सति धर्म चलाया नाअरा, गुरू गुरदेव देव दृढ़ाईआ। सो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी परवरदिगारा, सांझा यार नूर अलाहीआ। जिस लहणा देणा पूरब कज़ देणा उतारा, मकरूज़ आपणा लेख मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नौ माघ कहे मैं खुशीआं दे विच्च हस्सां, मुस्कराहट नज़र किसे ना आईआ। मैं गुर अवतार पैगम्बरां दस्सां, बिन ढोले सोहले राग दृढ़ाईआ। बिन कदमां जगत जहान नस्सां, नव सत भज्जां वाहो दाहीआ। बिन नेत्रां वेखां रैण अन्धेरी मस्सा, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। अमृत धार मिले किसे ना रसा, रसना जिह्वा दीन दुनी ना कोई हलकाईआ। किसे नज़र ना आवे होड़ा उपर, सस्सा, हाहे टिप्पी हँ ब्रह्म भेव ना कोई चुकाईआ। प्रभू अन्तर निरंतर दिसे किसे ना वसा, वास्तावक रंग साचा ना कोई चढ़ाईआ। सच प्रेम दा करे कोई ना जसा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा संग आप बणाईआ।

नौ माघ कहे मेरा खुशीआं वाला वक्त, प्रभ देवे माण वडयाईआ । मैं प्रसिद्ध होवां विच्च जगत, दीन दुनी नाल मिल के वज्जे वधाईआ । मेरे साहिब स्वामी माण देणा आपणे भगत, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। आत्म धार बख्शणी शक्त, जोती जाता डगमगाईआ। लेखे लाउणा बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ।

नव माघ कहे मेरा लेखा नाल अमाम, जो अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। जिस दी वक्खरी सदा कलाम, कलमयां बाहर पढ़ाईआ । उह देवणहारा पैग़ाम, बिन अक्खरां अक्खर शनवाईआ। सो पूरा करे आपणा काम, कामना जगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेटणहारा अन्धेरी शाम, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। नव माघ कहे मैं खुशीआं दे विच्च झुकदा, बिन सीस सीस जगदीस निवाईआ। जिस

भेव खुलाउणा इक्क तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पड़दा दए उठाईआ। भगतां कोलों कदे ना होवे लुकदा, सनमुख हो के सोभा पाईआ। नाता जोड़े पिता पुत्त दा, पूत सपूते गोद उठाईआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा होणा आपणी रुत्त दा, रुतड़ी भगतां नाल महकाईआ। मैं चाकर उस अबिनाशी अचुत दा, जो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक होए सहाईआ।

नव माघ कहे मेरा झुके इक्को सीस, जग नेत्र नज़र कोई ना आईआ। मेरा मालक इक्क जगदीश, जगदीशर नूर अलाहीआ। जिस दा पीसण रिहा पीस, कलिजुग चक्की कूड़ चलाईआ। उह वेखणहारा कलमे नाम हदीस, हज़रतां दी धार खोज खुजाईआ। जिस नूं किहा बीस इकीस, वीह इकीह गुरदास नाल वडयाईआ। जो लेखा जाणे राग छतीस, बतीसा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक आपणा रंग रंगाईआ।

नव माघ कहे मेरा खुशीआं वाला महीना, प्रभ देवे माण वडयाईआ। जन भगतां ठांढा होवे सीना, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। क्यों प्रभू प्रेम प्यार विच्च जिस ने जीणा, जन रसना सिफ्त सलाहीआ। उह लेख चुकाए लोक तीना, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। नाम रंग चढ़ाए भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। लेखे लावे जन भगतां जगत जुगत दा जीणा, जिंदगी आपणे कदम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ।

नव माघ कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा आया, प्रभ देवे माण वडयाईआ। मैं निव निव सीस झुकाया, बिन कदमां लागा पाईआ। बिन रसना जिह्वा गाया, बिन सिफ्ती सिफ्त सलाहीआ। तूं शाहो भूप बेपरवाहिआ, पारब्रह्म तेरी वडयाईआ। जिस भगतां भाग लगाया, काया माटी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी वडयाईआ।

नव माघ कहे मैं खुशीआं दे विच्च नच्चदा, टप्पां कुद्दां चाई चाईआ। मैं बचन दस्सां सच दा, सच सच समझाईआ। जन भगतो काया माटी भाण्डा कच्च दा, अन्त रहण कोई ना पाईआ। आत्मा प्यारा करो परमेश्वर पति दा, ब्रह्म मेला मेलणा सहज सुभाईआ। तुहाड्डा लेखा मुक्के हड्ड मास नाड़ी रत्त दा, रतन अमोलक हीरे लए बणाईआ। मार्ग दस्से इक्को सति दा, सति सतिवादी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

नव माघ कहे मेरा वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वडयाईआ। मैं धूढ़ी करां मज़ना, दुरमत मैल धवाईआ। घर स्वामी मिले सज्जणा, खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा नाम नगारा डंका वज्जणा, दो जहान करे शनवाईआ। मैं उस नूं करां बन्दना, निव निव लागा पाईआ। जो ग़मी मेटे रंजणा, रंजश अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। जो झगड़ा मुकाए तत्त पंजणा, पंचम देवे माण वडयाईआ। जिस नूं कहन्दे दर्द दुक्ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। उह लेखा जाणे आहला अदना, शाह सुल्तानां खोज खुजाईआ। जो शरअ दी मेटे हदना, हदूद इक्को इक्क रखाईआ। जो मालक सूरा सर्बंगणा, सच

स्वामी नूर अलाहीआ। जिस दा दीपक जोती जगणा, दो जहाना डगमगाईआ। उह झगड़ा मेटे काया माटी बदना, तन वजूदां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां करे कार अञ्जणा, अंगीकार आप हो जाईआ। सच प्रेम दी चाढ़े रंगणा, निरगुण देवे माण वडयाईआ। मानस जन्म ना होवे भंगणा, जो चल आए सरनाईआ। सतिगुर चुक्के आपणे कंधणा, शौह दरया ना कोई रुड़ाईआ। नाम मुहाणा देवे वंञणा, बेड़ा इक्को इक्क वखाईआ। जिस दी जगत होवे ना वंडणा, हिस्सा दीन दुनी ना पाईआ। उह पन्ध मुकाए धरनी धरत धवल धौल ब्रह्मण्डणा, पारब्रह्म प्रभ आपणा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर स्वामी बेपरवाहीआ।

नव माघ कहे प्रभू मेरी इक्क अरज़ोई, आरज़ू तेरे चरन टिकाईआ । जन भगतां मिले किते ना ढोई, सिर सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ । नव सत पई दरोही, हाहाकार विच्च लोकाईआ। कलिजुग श्रृष्टी दृष्टी अंदरों मोही, मुहब्बत सच नाम तुड़ाईआ। की होया जे तेरा भगत कोई कोई, कोटां विच्चों विरला नज़री आईआ। निझर धार बूंद सवांती कँवल नाभी विच्चों चोई, बिन रसना रस चखाईआ । ऊनां सुरत उठाई सोई, सुत्तयां लिआ जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। नव माघ कहे मैं निमस्कार करां डण्डावत, साहिब सतिगुर सीस निवाईआ। मेरे परम पुरख दीन दुनी दी तक्क अदावत, चारो कुण्ट ध्यान लगाईआ। शरअ दी शरअ तों होई बगावत, बगलगीर रहण कोई ना पाईआ। तूं मालक सही सलामत, वाहिद मुशर्द नूर अलाहीआ। किस बिध दीन दुनी दे उत्ते आउणी कयामत, कलमयां दिआ मालका देणा समझाईआ। किस बिध मेटे अन्धेरी शामत, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नाम दी दे नयामत, वस्त अतोल अतुल आप वरताईआ। (६ माघ शी स दस हरि भगत दवार धीरपुर किंगज़वे कैंप दिल्ली-६ रात दे समें)

पंज पोह कहे गंगा नेत्र रोवे करे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। मैं जटा जूट दी धार, धरनी धरत धवल धौल भज्जां वाहो दाहीआ। मैं नित्त नवित्त राह तक्कां ओस मुरार, जो मुरारीआं दए वडयाईआ । जिस दी चरन छोह नाल सभ दा बेड़ा हो जाए पार, दूसर ओट ना कोई रखवाईआ। मैं उस दे हाज़र हो दरबार, निव निव लागाँ पाईआ। जिथ्थे भगत सुहेले दित्ते तार, मेरा लहणा उहनां नाल मिलाईआ। मैं जुग जुग खिदमतगार, खादम हो के तेरी सेव कमाईआ। परी अरम्बा कहे मैं बिनां कदम तों नचार, नच्चां टप्पां कुद्दां चाईं चाईंआ। तूं शब्द धार गोबिन्द सच्ची सरकार, शहनशाही इक्क अखवाईआ। बवंजा कवी आशा विच्चों आपणी ख़ाहिश रहे उच्चार, बिन रसना रस जणाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले एकँकार, इक्क इकल्ले तेरी वडयाईआ। जे तूं पंजां तन पवाए हार, हिरदे अन्तर करी सफ़ाईआ। जन्म मरन तों कढ़ु के बाहर, आपणे रंग रंगाईआ। तेरे दर ते फरक नहीं कोई पुरख नार, तत्तां वंड ना कोई वंडाईआ। तेरा आत्म इक्क अधार, अन्तम आत्म वेख विखाईआ। जन भगतां पाउणी सार, सन्ता होणा सहाईआ। गुरमुखां देणा तार, गुरसिखां गोद उठाईआ। मंग मंगी दिल्ली दरबार, दर दरवाजे सीस झुकाईआ। जिथ्थे शाह सुल्ताना

होणा भिखवार, भिख्खया मंगण वाहो दाहीआ। राज राजान तक्कण आण दीदार, नेत्र लोचन दर्शन पाईआ। तेरा वक्त सुहञ्जणा होणा विच्च संसार, सुहञ्जणी रुत सोभा पाईआ। तीजे तीजे तीजे दिन तेरा मेला होया करेगा मिलण वालयां अपर अपार, पैहलों मिलण कोई ना पाईआ। नौं नौं वार धूढ़ लाया करनगे मस्तक छार, भगत दवार दए गवाहीआ। अलफी वाल्या फेर तूं अलफ ये दे हरफ़ां तों होवेंगा बाहर, तेरी सिफ्त ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दे मालक होणा सहाईआ। (५ पोह श सं ६)

हीरा घाट : जगत विचोला हरि निरँकार। हीरा घाट करे त्यार। कलिजुग तेरी अन्तम वार। निहकलंक नर अवतार। अष्टम जेठ दिवस विचार। वीह सौ गिअरां बिक्रमी शुकरवार। शाम वेला सत्त अठ्ठ विचकार। रिथे बणे सच्चा इक्क दरबार। छत्तर झुल्ले विच संसार। जो जन आयण भुल्ले, मिले घर सच्ची सरकार। कोई ना लेवे मुल्ले, प्रभ अबिनाशी किरपा धार। सदा रहण भंडारे खुल्ले, अमृत भरे हरि भंडार। साचे तोल गुर संगत तुले, जो चल आई चरन दवार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हीरा घाट नींह रखाई कलिजुग तेरी अन्तम वार।

नींह रखाई हीरा घाट। सृष्ट सबाई जाए पाट। आपे पाए डूंघे खाट। ना कोई चढ़ावे कलिजुग घाट। ना कोई दिस्से अग्गे वाट। गुरमुखां जोत जगाए विच ललाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे रुशनाई काया माट।

हीरा घाट दए माणा। सतिजुग साचे आप उपजाणा। साचा सीर विच रखाणा। अंना काणा राजी कराणा। दो जहानां नाम रखाणा। लक्ख चुरासी गेड़ कटाणा। घनकपुर वासी अमृत सीर पिलाना। एका निर्मल नीर कर, अठ्ठ सठ तीर्थ भेव चुकाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच सरोवर इशनान कराना।

देवे माण सर्ब गुणवन्ता। विच ना पावे माण हंगता। दया कमाए उपर संगता। भिच्छया पाए जो आए भुक्खा नंगता। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब रोग सोग जगत विजोग खण्डता।

दुःख खण्डे नाम वंडे। विच्च लाए छत्ती डण्डे। हीरा घाट तेरे कन्ढे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मील मील ते गड्डे झण्डे। झूलन झण्डे जगत निशान। उत्ते लिखया होवे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त मनी सिँघ नाल चतुर सुजान। काका मनजीत सिँघ बाल निधान। प्रभ अबिनाशी गुण निधान। किरपा करे आप भगवान। छत्ती रागाँ गवाए माण। छत्ती पदारथ रस साचा पाण। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवे सच्चा जीआ दान।

इक्को इक्क झुल्ले निशान । सच्ची चले इक्क दुकान । सति सन्तोखी विच जहान । अन्तम मोखी रंग महान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए साची वंड। गुर संगत हरि पाए ठंड। कोई ना दीसे नार रंड। सतिजुग साचे तेरी साची वंड। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां ना देवे कदी कंड।

हीरा घाट सच निशानी। अग्गे खला सन्त मनी सिघ तेरा सच्चा बानी। पिच्छे बैठा काका

मनजीत सिँघ बाल बुद्ध अंञाणी। विच कारज करे सुध, माहणा सिँघ गुण निधानी। तिन्नां मिल्या सच संजोग, प्रभ अबिनाशी गुण निधानी। साचा रस सृष्ट सबाई लैणा भोग, ना कोई मरे विच जवानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग तेरी धार बंन्नानी।

ना कोई मरे बाल अंञाणा। माता पिता सुख उपजाना। जगत निशाना हरि झुलाना। सच धर्म दी जड़ लगाना। हीरा घाट तेरे अंदर वड़, प्रभ अबिनाशी करे टिकाणा। हरि संगत तेरे दर दवारे खड़, वेखे खेल श्री भगवाना। बेमुखां पुट्टे जड़, मारे तीर शब्द निशाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो भन्ने सो लए घड़, मारे सच निशाना। हीरा घाट साचा हीरा। भैण ना विछड़े साचा वीरा। निर्मल करे प्रभ साचा नीरा। कारज होइण सुध, जो आया चल वांग फ़कीरा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग साचे रहण ना देवे किसे काया पीड़ा।

नौं खण्ड पृथ्मी करे रुशनाए। सत्तां दीपां बूझ बुझाए। खण्ड ब्रह्मण्डां वरभंडां माण दवाए। सेहतज उत्भुज अंडज़ जेरज मुख चवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अजर अमर दी शक्त भराए।

अजर अमर आप कराए। दर आए जो इशनान कराए। अमृत सीर मुख चवाए। कट्टी जाए भीड़, ना जम राज सताए। सतिजुग तेरी बध्धी बीड़, अष्टम जेठ वीह सौ गिआरां बिक्रमी लिख्त लिखाए।

लिख्त लिखाई विच उजाड़। जगत खेल आप रचाए पहली हाढ़। सिँघ मनजीत तेरे चार चुफेरे शब्द कराए साची वाड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी सच घर देवे वाड़। साचे तीर्थ लाए तारी। चुरासी छुट्टे पहली वारी। पंजां चोरां कुट्टे, काया कढ्ढे बाहरी। एका अमृत जो जन मुख लाए घुट्टे, आत्म होए ठंडी ठारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका माण दवाए जगत नर नारी।

नारी नारां दए माणा। चरन धूड़ जो करे इशनाना। आत्म मूढ़ होए चतुर सुजाना। रंग चढ़े गूड़ श्री भगवाना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुणवन्त गुण निधाना।

हीरा घाट हरि की पौड़ी। छत्ती मील लंमी सौ गज़ चौड़ी। एथ्थे साचा प्रगट होवे ब्रह्मण गौड़ी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द धुरदरगाही लाए एका पौड़ी।

पहली पौड़ी सिँघ मनजीत है। अद्ध विचकारे माहणा सिँघ करे प्रीत है। अन्त बैठा सन्त मनी सिँघ करे ठंडा सीत है। साची बाणी अंक सहेली नाल अमरजीत है। सच सहेली सच घराने, जाए चढ़ विच बबाने, सिँघ मनजीत तेरी हत्थीं बन्ने गाने, जगत चले साची रीत है। जगत चले साची रीत सतिजुग विच जहाने। भैण भरावां साचा नाता दुःखड़ा कोई ना माने। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हीरा घाट इशनान कराने।

हरि घाट हरि की लाट। शब्द टिकाई साची खाट। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा खेल रचाए तिन्न लोक चौथ्थे जुग नेड़े वाट।

सन्त मनी सिँघ तेरा जैकार। चार कुण्ट चले विच संसार। निहकलंक शब्द डंक वजाए भार। राओ रंक उठाए, खिच्च लिआए चरन दवार। पिछला लेखा लेखे लाए, नर नरायण निरँकार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा आप सहार। सन्त मनी सिँघ तेरी सच निशानी। सृष्ट सबाई होई निधानी। घर घर वधदी बेईमानी। झूठी वगे जगत

नदी, रुड़दे जाण वड ज्ञानी । झूठी माया वा तत्ती लग्गे, विच सड़ गए ब्रह्म ज्ञानी। लग्गा दाग चिट्टी पग्गे, मुख काला दो जहानी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची मंगे जगत इक्क निशानी। (८ जेठ २०११ बि)

(होर देखो लिखत ६ जेठ २०११ बिक्रमी नहिर उत्ते हीरा घाट घविंड बाड़े विच्च (कलसीं)

भेव ना पावण हरि अबिनाशी, प्रगट होया पुरी घनक हीरा घाट दिशा लहिंदी। (३ माघ २०१० बि)

* * * * *